UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176416
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 S12R

Accession No. P. G. H72

Author सागर .

Title रस सागर . 1935 .

This book should be returned on or before the date last marked below.

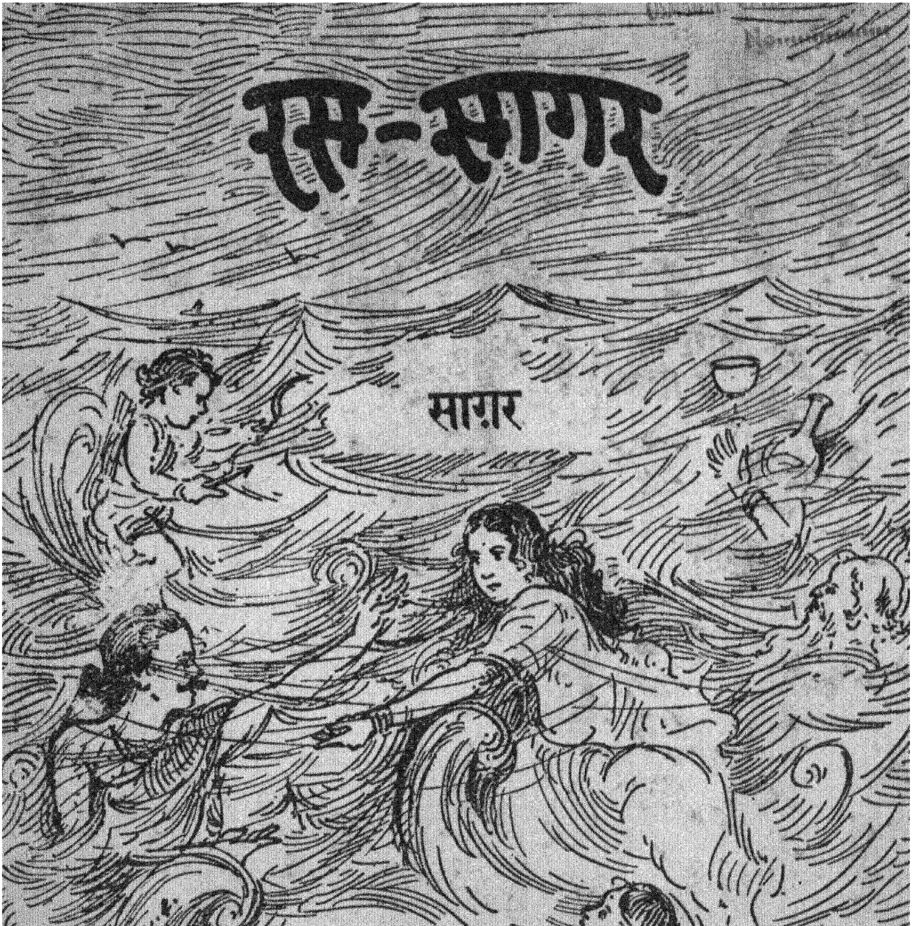
रस-सागर
साग़र
अदबी मरकज़, मेरठ
मू० ६ रु०

मुद्रक—
देवीप्रसाद शर्मा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
नई दिल्ली

प्रकाशक—
अदबी मरकज़
मेरठ

रस-सागर

सूची

१.	सागर और उसकी रचना	७
	१—श्रीमती सरोजिनी नायडू	७
	२—आनरेबल डॉ० सय्यद महमूद, एजूकेशन-मिनिस्टर, बिहार	११
	३—डॉ० मुख्तार अहमद अन्सारी	१३
	४— डॉ० अब्दुलहक़	१६
	५—राजा नरेन्द्रनाथ	१८
२.	पहला फ़र्ज़	२०
	'साग़र' निज़ामी	
३.	रस-सागर	२१
	'साग़र' निज़ामी	
४.	जीवन और साहित्य	२४
	'साग़र' निज़ामी	

नई सुबह

१. क़ौमी तराना	...	१
२. जमना	...	६
३. आफ़ताब	...	१५
४. परचम	...	२२
५. वतनियत	...	२६

६. नया पुजारी	...	३०
७. क़ौमी गीत	...	३३
८. आज़ादी	...	३५
९. अहद	...	३९
१०. राम	...	४२
११. श्रीकृष्ण	...	४४
१२. गौतम बुद्ध	...	४८
१३. हिन्दुस्तान	...	५४
१४. तलोशान पहाड़ के शहीद	...	६०
१५. बहादुरशाह ज़फ़र	...	६३
१६. बांगे–दिरा	...	६७
१७. जवानी का तराना	...	६९
१८. ईद	...	७२
१९. मैं चान्द न देखूंगा	...	७३
२०. गद्दारी	...	७५
२१. फिरका परस्त	...	७७
२२. आज़ादी का तराना	...	८०
२३. गांधी	...	८४
२४. मोतीलाल नेहरू	...	८६
२५. अबुलकलाम आज़ाद	...	९१
२६. सैयद महमूद	...	९४
२७. जवाहरलाल नेहरू	...	९६
२८. अब्दुलगफ्फ़ारखाँ	...	९९
२९. मोहम्मदअली	...	१०१
३०. मेरे वतन की शफ़क़	...	१०३

३१. हैदरअली ... १०६
३२. टीपू सुलतान ... १११
३३. कारवानें इन्कलाब ... ११६
३४. इन्कलाब का फर्मान ... १२५
३५. नई तहज़ीब ... १२७
३६. भारतमाता का फर्मान ... १२९
३७. आज़ादी की चिनगारी ... १३०

दीपक

३८. बुझा हुआ दीपक ... १३३
३९. इकतारा ... १३७
४०. माला ... १३८
४१. भिखारी की सदा ... १३९
४२. दर्पन टूट चुका ... १४१
४३. बाग़ी संसार ... १४४
४४. आत्मा का मन्दिर ... १४६
४५. प्रेम प्रकाश ... १४९
४६. बसो दिल में हमारे ... १५१
४७. धनक ... १५२
४८. बिलख-बिलख मर जाय ... १५३
४९. जवानी बीती जाय ... १५४
५०. तुम वह नहीं हो ... १५८
५१. आओ ... १६२
५२. मिलन की शाम ... १६५

५३. बीती हुई घड़ियाँ ... १६८
५४. मैं क्या चाहता हूँ ... १७०
५५. वही कहो तो फिर ज़रा ... १७३
५६. मेरा पयाम ले जा ... १७९

मूर्ति—संसार

५७. सूरज ... १८५
५८ पुजारिन ... १८८
५९. औरत ... १९२
६०. देवी ... १९४
६१. हिन्दू देवी ... १९९
६२. भिखारन ... २०१
६३. मुतरिबा ... २०५
६४. पनघट की रानी ... २०९
६५. मुसाफिरा ... २११
६६. मालिन ... २१४
६७. उजड़े हुए इबादतखाने में ... २१७
६८. बालपन ... २२०
६९. बहार की सुबह ... २२७
७०. दो मुसाफिर ... २३१

बंसरी

७१ ग़ज़लें ... २३३
७२. महात्मा गांधी ... २५९

सागर निज़ामी

'साग़र' और उसकी रचना।

[१]

मेरे नौजवान दोस्त 'साग़र' निज़ामी ने मुझ से दरख़्वास्त की है कि उनके कविता-संग्रह (बाद-ये-मशरिक़) "रस-सागर" की भूमिका के लिए कुछ लिख दूँ। 'साग़र' की रचना और उससे भी बढ़कर उसकी प्रतिभा की सराहना करनें का मौक़ा पाकर मुझे ख़ुशी हुई। उसके संगीत-प्रवाह और कोमल-कल्पना को छोड़ कर, जो उसकी अछूती ख़ूबियाँ हैं, उसकी ख़ुसूसियत यह है कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी उसकी कविता का आधार है। वह भावों को सीधी सादी हिन्दुस्तानी बोलचाल में ज़ाहिर करता है। उसकी कल्पना भारत ही की ज़मीन पर बसर करती है; भारतीय चलन और संस्कृति से वह अपने अन्दर भाव पैदा करता है और उसके गीतों के औज़ान ने हिन्दुस्तान के ग्राम-गीतों के औज़ान को एक मनोहर रूप दे दिया है। 'साग़र' ने नये ज़माने की नई उर्दू कविता में ज़बान की नर्म और दिल-फ़रेब मिठास पैदा कर दी है, जिसमें हिन्दी लफ़्ज़ अपने आप बिना किसी बनावट के फ़ारसी नज़्मों के बहुत ही कठिन बन्धनों में घुल मिल जाते हैं।

जीवन की तरफ़ 'साग़र' जवानी में चूर होकर क़दम बढ़ाता है और ज़िन्दगी के बारे में उसका सारा बर्ताव जवानी की रंगीनियों में डूबा हुआ है। यह जवानी तारीख़ (इतिहास), रोमांस, आशा और वतन की आज़ादी के भावों से भरपूर है।

उसका रोम-रोम हिन्दुस्तानी है। उसकी कविता भारत माता ही से ली गई है और भारत ही के चरणों में उसको अर्पण कर दिया गया है।

दिल्ली
अप्रैल १९३५

—सरोजिनी नायडू

My young friend Saghar Nizam has requested me to write a line by way of foreword to his collection of poems entitled <u>Bada-i-Mashriq</u>. I am happy to have an opportunity to express my appreciation both of the achievement and the even greater promise of his poetic talent. Apart from his gifts of fluent music and delicate fancy which are in themselves remarkable, his special value lies in ~~the~~ his choice of every day themes of Indian life, experience and emotion, for which he finds words of moving simplicity and beauty

akin to the daily speech of the people.
His imagery is drawn from the Indian
landscape and tradition and his
rhythms have assimilated in a
delightful fashion the familiar
cadences of old indigenous Indian
folk-song.

Saghar has brought into modern
Urdu poetry a supple and attractive
melody of language in which Hindi
words spontaneously and instinctively
blend themselves into the mood and
conventional texture of Persian
verse-forms.
His entire attitude and approach
towards life is of youthful vitality

endowed with a passion for the beauty, romance, hope and freedom of his country. He is in every fibre of him Indian and his art is both drawn from and dedicated to his motherland.

Sarojini Naidu

April 1935. Delhi

[२]

पिछले कुछ बरसों ही में 'साग़र' की कविता नें अच्छी खासी शोहरत हासिल कर ली है और उसे अभी बहुत कुछ शोहरत पाना है। यह नौजवान कवि उर्दू लिट्रेचर में बहुत सी नई बातों का जन्मदाता है।

उसकी कविता रूहानियत, ज़िन्दगी, जवानी, नाज़ुक-खयाली, ऊँची कल्पना, प्रेम और खासकर देश भक्ति से भरपूर है। वह हुस्न का पुजारी है। जानदार और बे जान चीज़ों में जहाँ भी खूबसूरती की ज्योति जगमगाती देखता है उसके आनन्द से मुग्ध हो जाता है; यहाँ तक कि वह हुस्न ही में हक़ीक़त को पाकर मस्तों की तरह गीत गाने लगता है।

शैले की तरह वह रीति-रिवाज की क़ैद से घबराता है और उनकी मज़बूत कड़ियों को तोड़कर फेंक देना चाहता है। उसका सन्देश संसार के लिए आशा से भरा जीवन और आलमगीर मोहब्बत (सार्वभौमिक प्रेम) है। वह उन पर्दों को उलट देना चाहता है जो अपने आप इन्सान ने तरह-तरह के नामों से ज़िन्दगी के चेहरे पर डाल दिये हैं।

वतन की आज़ादी की कामना उसके रोम-रोम में खून की तरह दौड़ गई है, और लार्ड बायरन की तरह एक ग़ुलाम देश का निवासी होने के बजाय वह मौत को अच्छा समझता है। वह खुद आर्य्य नस्ल से है और आर्य्य तहज़ीब का प्रेमी है। हिन्दू मायथोलोजी में उसकी कल्पना को खेलने का अच्छा मौक़ा मिलता है। वह हिन्दुस्तान में अकबर व शाहजहाँ की एक हद तक सफल कोशिशों को पूरी तौर पर कामयाब देखना चाहता है। मुसलमान होने की वजह से वह बेचैन है कि उसके हम-मज़हब अपने बीते हुए शानदार कारनामों को भूल न जायें और इस्लाम जो दुनिया को ग़ुलामी से आज़ाद कराना अपना धर्म समझता था, कहीं उसके मानने वाले खुद ग़ुलामी के पुजारी न बन जायें, इस लिए वह उनको झंजोड़-झंजोड़ कर जगाने और उभारने की कोशिश करता है।

निराशा को वह अपने पास नहीं आने देता। उसका दिल आशाओं का झूला है। और वह मुस्तक़बिल (भविष्य) का क़ायल है। उसकी कल्पना भारत के आनेवाले ज़माने को देखती है। हिन्दोस्तान का जो रूप वह अपने ख़याल के परदों पर थिरकता देखता है, उससे उसका दिल कमल के फूल की तरह खिल जाता है, और वह दीवानों की तरह वतन की प्रेम-मदिरा के साग़र झूम झूम कर पीता और पिलाता है।

हमारे नौजवान कवि 'साग़र" ने "जमना" पर जो कविता कही है, उसका एक यह मिसरा कि—

"कृश्न की बंसी का इक बहता हुआ नग़मा है तू।"

वह रस पैदा करता है कि अगर शाहजहाँ ज़िन्दा होता तो शायर को सोने चाँदी में तोल देता। मुझे उम्मीद है कि मुल्क 'बाद-ये-मशरिक़' (रस—सागर) को न सिर्फ़ इज़्ज़त की नज़र से देखेगा बल्कि उसके रस से मसरूर और झूम उठेगा।

डा० सैयद महमूद

एजुकेशन मिनिस्टर,

बिहार।

[२]

इस ज़माने में बाद-ये-मशरिक़ (रस—सागर) की आइडियल छपाई और इशाअत, अपनी जगह उसके लिखने वाले की मनोहर और असर रखने वाली शख़सियत का सबूत है। मैं शायरी से कोई ख़ास लगाव नहीं रखता मगर जो ख़याल और भाव सोच विचार का नतीजा होते हैं और जो इस किताब में हैं, उन भावों और ख़यालों से किसी को इन्कार नहीं हो सकता। जहाँ तक मैंने फ़ुरसत के वक़्त में इस किताब को पढ़ा है, मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इसमें मौजूदा तूफ़ानी ज़माने की बहुत असर रखने वाली नुमाइन्दगी की गई है। 'साग़र' का दिल और दमाग़ जिस साँचे में ढला है, वह साँचा क़ुदरत ने उसके लिये ख़ास कर दिया है।

'साग़र' का दिल हिन्दुस्तान की मोहब्बत से पागलों की तरह मस्त मालूम होता है। इसी जगह सियासी आदमी और शायर का नाज़ुक फ़र्क़ समझ में आ जाता है। शायर वतन से कोई मोल-तोल नहीं करता। बस मुल्क को आज़ाद देखना चाहता है और इस आज़ादी के लिए वह जनता पर अपने भावों से असर डालता है। रहा सियासी आदमी, सो वह तेतीस फ़ी सदी और Majority, Minority के जाल में उलझ कर साफ़ खुल जाता है कि कितने पानी में है।

जिस वक़्त मैंने दुबले-पतले नौजवान मोहम्मद समद यार ख़ाँ 'साग़र' को देहली में देखा तो मुझे अचम्भा हुआ कि क्या यही वह अँगीठी है जिससे आज़ादी और देश-प्रेम की चिनगारियाँ बुलन्द हुई हैं। मगर जब लखनऊ कांग्रेस के प्लेटफ़ार्म पर हज़ारों हिन्दुस्तानियों में दीपक की तरह आग बरसाते और शेर की तरह दहाड़ते हुए पाया तो मेरी हैरत दूर हो गई और विश्वास हो गया कि यह तो सर से पाँव तक आग है। जिस वक़्त साग़र ने चालीस पचास हज़ार आज़ादी के दीवानों में खड़े होकर जवाहरलाल को यह सन्देश दिया कि:—

"जिस क़दर क़तरे हैं उन क़तरों को फिर दरिया करें,
आ, कि मयख़ाने में पैदा फिर नई दुनिया करें।"

तो मैंनें मौलाना अबुलकलाम को देखा, जिनकी जादू करने वाली आँखें शायर के सन्देश से मस्त हो गई थीं और जो 'साग़र' के एक-एक शेर पर झूम रहे थे। और तो और जवाहरलाल पर बड़ा असर था। यह देखकर लोग अचम्भे में थे क्योंकि पण्डित जवाहरलाल का ख़याल है कि हिन्दुस्तान की ग़ुलामी और तबाही में शायरों का भी बड़ा हाथ है।

'साग़र' की आम शोहरत और बड़ाई का एक सबूत यह भी है कि वह इण्टरनेशनल शोहरत रखने वाले महाकवि डा० सर रवीन्द्रनाथ टैगोर के बाद सबसे पहले शायिर हैं जो नेशनल-कांग्रेस के प्लेट-फ़ार्म पर बढ़ चढ़कर कामयाब हुए और अपने असर से साबित कर दिया कि वह हिन्दोस्तान के क़ौमी शायर हैं। 'गौतम' और 'कृष्ण' कवितायें पढ़कर अन्दाज़ा हो जाता है कि हिन्दू-मुस्लिम मिलाप के लिए मुसलमान के दिल में कितनी तड़प है। "बाद ये मशरिक़," (रस–सागर) नई दुनिया और नये ख़यालों की मंज़ूम तारीख़ है। 'साग़र' की शायरी उस सियासी ख़याल से भी ख़ाली नहीं हैं, जो कुदरत की तरफ़ से एक ख़ास हद तक फिलासफ़र कवि को मिलता है। जनता को 'साग़र' की शायरी ग़ौर से पढ़नी चाहिए। उसको मालूम हो जायगा कि सच्चे हिन्दुस्तानी और पक्के मुसलमान होने की क्या पहचान है? बाद-ये-मशरिक़ (रस–सागर) हिन्दू-मुस्लिम मिलाप के लिए बहतरीन कोशिश है। क़ौमी तारीख़ कई शायिरों को नहीं मरने दे सकती और 'साग़र' को तो भूल ही नहीं सकती, जिसनें कलचरल तौर पर उर्दू शायरी में इनक़लाब कर दिया है और जो देश-प्रेमियों में "मजनूँ" का दर्जा रखते हैं।

इस किताब के नेंक, जोशीले, सच्चे और जानदार ख़यालों को हर ज़बान में तर्जुमा करना चाहिए। ख़ासकर नागरी और अंग्रेज़ी में इसका एक एडीशन जल्द से जल्द छपना चाहिए, जिसको देख कर हिन्दू भाई एक मुसलमान शायर के जानहार देश-प्रेम को समझ

जायें, जो पठान होनें और देशभक्ति के लिहाज़ से पश्तो ज़बान के सरहदी शायर खुशहाल ख़ाँ "खुटक" और बायरन की तरह हैं। ऐसा कवि और ऐसी कविता ! अब सिफ़ारिश की गुन्जाइश नहीं। मेरे ख़याल से हर हिन्दुस्तानी जानने वाले हिन्दू और मुसलमान को बाद-ये-मशरिक़ (रस—सागर) ज़रूर ख़रीदनी चाहिये।

दिल्ली
अप्रैल १९३६ ई०

डा० मुख्तार अहमद अन्सारी

[४]

इस किताब का टाइटिल देखते ही शायर के जौक़ की खूबसूरती और सलीक़े की सराहना करनी पड़ती है। इस मतले (ग़ज़ल का पहला शेर) के बाद दूसरा मतला—दूसरी खूबसूरती रखता है। इन दोनों के बाद तीसरा मतला—है, जिससे 'बाद-ये-मशरिक़' की नाज़ुक किरनें फूटकर चारों तरफ़ फैल रही हैं। यह तीनों अपनी सादगी और हुस्न में लाजवाब हैं और यह हज़रत साग़र की कविता का सच्चा दीबाचा—(भूमिका) है। इनके बाद किसी परिचय और दीबाचे की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। किताब की छपाई और लिखाई और खशनुमाई में जो खास इन्तिज़ाम किया गया है वह बहुत ही तारीफ़ के काबिल है। यह है उसका ज़ाहिरी रूप मगर उसका बातिन (अन्तर) भी इससे कुछ कम नहीं है।

'साग़र' उर्दू के नये कवियों में से हैं जिनपर उर्दू कविता की नई तब्दीली का खास असर है और जो अपना असर दूसरों पर डाल रहे हैं। इस वक्त हिन्दूस्तान जिस उलझन में है वह उनकी कविता से साफ़ ज़ाहिर है। यह वतनियत (राष्ट्रीयता) और आज़ादी के दीवाने हैं। हिन्दुस्तान को अपनी जन्मभमि समझते हैं, और अपने मधुर गीतों और जोशीली कविताओं से अपने वतन में रहने वालों को हर क़िस्म की क़ुर्बानी और आज़ादी हासिल करने के लिए उकसाते हैं। उनका कलाम फ़िर्क़ा-परस्ती की गन्दगी से बिल्कुल पाक है। वह धर्म और क़ौम का बिल्कुल फ़र्क़ नहीं करते। हिन्दुस्तान उनका वतन और हिन्दुस्तानी उनके हम-वतन हैं। इसको साबित करने के लिए यहाँ उनकी कवितायें लिखने की ज़रूरत नहीं। उनकी तो हर कविता इन खयालों से भरी हुई हैं। उनकी नज्मों की सुर्खियाँ ही अपने मज़मून को ज़ाहिर कर रही हैं। 'वतनियत', 'आज़ादी', 'हिन्दुस्तान', 'क़ौमी-गीत', 'फिरक़ा-परस्त', 'आज़ादी का तराना', 'नया पुजारी' और दूसरी सुर्खियाँ। कुछ सुर्खियों पर ही मुनहसिर नहीं हैं, उन्हें तो जहाँ कहीं मौक़ा मिलता है वह अपने देश-प्रेम के इज़हार से नहीं चूकते हैं। फिरक़ा-परस्ती से उन्हें नफ़रत है। लेकिन 'साग़र' की शायरी इतनी ही नहीं, उसमें नेचर

के सीन, क़ुदरत के जल्वे, तरह-तरह के भाव, संगीत का जादूपन रंग-रंग से ख़ास रस के साथ बयान किया गया है। उनकी कविता की बहुत बड़ी ख़ुसूसियत, उनका तरन्नुम और संगीत है। यह बात शायद इस वक्त के किसी भी शायर को नसीब नहीं। दूसरी बात बहरों (मीटर) की रंगारंगी है, जिससे कवि के इन्तख़ाब की ख़ूबसूरती और संगीत के ज़ौक़ का पता मिलता है। यह फ़ारसी की नई कविता का असर मालूम होता है। संगीत और बहरों का नयापन यह दो चीज़ें ऐसी हैं जो 'साग़र' ने नई फ़ारसी शग़्यरी से ली हैं और उन्हें ख़ूब निभाया है। 'साग़र' की कुछ नज्में ऐसी हैं कि उन्हें पढ़कर और ख़ासकर उनसे सुनकर,— जिसमें, गले की मधुरता, जोश और बातनी कैफ़ियत सब कुछ होता है—आदमी खो जाता है।

—डाक्टर अब्दुलहक़,
आनरेरी सेक्रेटरी, अंजुमन तरक्क़ीये उर्दू, देहली।

[५]

इस जमाने की उर्दू शायरी गुलो-बुलबुल और हुस्नो इश्क के भावों तक ही महदूद नहीं है। जिन ऊँचे ख़यालात को लिखने के लिए इस जमाने के आला दर्जे के शायरों ने अपनी तवज्जुह ज़ाहिर की है उनमें से 'साग़र' निज़ामी को पहली सफ़ में शुमार करना चाहिए।

उनकी कविता पढ़कर मैं यह बताना चाहता हूँ कि फ़िलासफ़र और ऐसे कवि में जो फलसफियाना मज़ामीन पर कुछ लिखे क्या फर्क है। फ़लासफर उन हक़ीकतों को जिन्हें वह गहरी फ़िलसफ़ियाना नज़र से मालूम करता है सादा लफ्ज़ों में बयान कर देता है। जिनके बयान करने से इसके सिवाय और कोई मकसद नहीं होता कि खुले लफ्ज़ों में सच्चाई और हक़ीकत को बयान किया जाय। मगर कवि जब फिलसफियाना मज़ामीन को कविता का रूप देता है तो वह लफ्ज़ों को ऐसे साँचे में ढालता है जिससे सुनने वाले के दिल में बुरे या भले भाव पैदा हों।

'साग़र' साहब ने अपने कलाम में बहुत अच्छी तरह से फ़लसफ़ियाना हक़ीकतों का बयान किया है और उन हक़ीक़तों के बयान करनें में आला दर्जे के लफ्ज़ों की बन्दिश से काम लिया है। 'साग़र' का दुनिया की तारीख का मुताला बहुत वसीह मालूम होता है। उर्दू हिन्दी और फारसी भाषाओं पर उनको पूरी क़ुदरत हासिल है। तारीखी मज़ामीन के इन्तख़ाब में उनका नस्बउलएन क़ौमी है। 'जमना' की कविता में श्रीकृष्ण की ज़िन्दगी और महाभारत के सारे हालात बहुत ही असर करने वाले लफ़्ज़ों में बयान किये हैं। एक नज्म ख़ास श्रीकृष्ण पर भी है। 'वतनियत' पर जो नज्म लिखी गई है वह कवि के देश-प्रेम की भावना को बड़ी खूबी से ज़ाहिर करती है। 'पुजारन' की नज्म पढ़ने वालों को यह जानना बहुत मुश्किल होगा कि इसका लिखने वाला उर्दू का शायर है या हिन्दी का कवि।

पुराने उर्दू फ़ारसी शायरों में मुस्तज़ाद [एक किस्म की कविता जिसमें कुछ लफ्ज़ बहर (मीटर) के चन्द अरकान (मात्रायें) के वज़न पर जिसमें वह कविता होती है बढ़ा दिये जाते हैं] का रिवाज बहुत कम था। मगर आजकल मुस्तज़ाद का रिवाज़ न सिर्फ़ ईरानी शायरों में ज्यादा है बल्कि हिन्दुस्तानी शायरों में 'साग़र' साहब ने उसका इस्तेमाल बहुत अच्छी तरह और बहुत किया है।

राजा नरेन्द्रनाथ, एम० एल० ए०

पहला फर्ज़

सबसे पहले मैं

ऑनरेबल डा० सैयद् महमूद एजूकेशन-मिनिस्टर, बिहार

और

श्रीयुत ऑनरेबल जगलाल चौधरी, एक्साइज़-मिनिस्टर, बिहार

का शुक्रिया अदा करना अपना फर्ज़ समझता हूं, जिनकी माली इमदाद ने "बादये मशरिक़" को "रस-सागर" का रूप दिया और हिन्दी हिन्दुस्तानी के सवाल को मिटाकर दोनों बहनों को गले मिला दिया। हिन्दुस्तानी अदब (साहित्य) की तारीख में बिहार-सरकार के इन दो वज़ीरों का यह कर्तव्य हमेशा यादगार रहेगा और उस दूरी को मिटायेगा, जो साहित्य व बोली के नाम पर यहाँ की दो बड़ी कौमों में पैदा हो गई है।

फरवरी, १९४० ई०

"सागर"

रस–सागर

"रस–सागर" को पढ़नें से पहले यह जान लेना चाहिए कि यह नागरी लिपि में उन चुनी हुई कौमी नज्मों, गीतों और गज़लों की किताब है, जो "बादये मशरिक" के नाम से सन् १९३६ ई० में छपकर उर्दू अदब में पसन्द की जा चुकी हैं।

"रस–सागर" में पुराने गीतों, कविताओं और गज़लों के साथ ही मैंने वो कौमी नज्में और गीत भी मिला दिये हैं जो सन् १९३६ ई० के बाद कहे गये और मुल्क में पसन्द किये गये। आसानी के लिये मैंने इस किताब को ४ हिस्सों में बाँट दिया है।

(१) **नई सुबह,** जिसमें कौमी तराने नज्में हैं;

(२) **दीपक,** जिसमें खालिस हिन्दी गीत हैं;

(३) **मूर्ति-संसार,** जिसमें पुजारिन व भिकारन जैसी कविताएँ हैं;

(४) **बंसरी,** जिसमें चुनी हुई ग़ज़लें हैं;

पहले हिस्से में जो क़ौमी नज्में हैं, उनमें बहुत-सी ६–७ बरस पहले कही गायीं थीं। इस हिस्से की पहली नज्म 'क़ौमी तराना' नई नज्म है, जो कोमल व मीठी बोली में हैं। हिन्दुस्तानी बोली में यह बड़ा जादू है कि वह सख्त-से-सख्त और नरम-से-नरम लिखी जा सकती है; मगर बोली के बारे में कविता व कवि को यह आज़ादी हासिल है कि वह बोली को जैसा जी चाहे बना दे, पर मेरी सदा यह कोशिश रही है कि मैं ऐसी बोली में शेर कहूँ, जिसे सब समझ सकें। मुझे विश्वास है कि मैं दूसरे हिस्से 'दीपक' के गीतों में बोली का एक साँचा बनानें में कामयाब हुआ हूँ। 'मूर्ति-संसार' का भी बड़ा हिस्सा इसी बोली में है और चौथे हिस्से 'बंसरी' की गज़लों की बोली भी काफ़ी मधुर और साफ है।

असल में यह काम एक विद्वान कवि का है, जो कला की सारी खुसूसियतों को ज़िन्दा

रखते हुए ऊँचे दरजे की शायरी पैदा करदे, जो बोली, कल्चर, कल्पना और भाव के लिहाज़ से एक नई चीज़ मानी जा सके—यानी बड़ी शान्ति, सोच-विचार दिन-रात की मेहनत और देसी बोलियों के पुराने और नये अदब की छानबीन करने पर ही वह हीरा तराशा जा सकता है, जिसकी ज्योति से संसार में चकाचौंध पैदा हो जाय; मगर इस काम के लिए एक युगचाहिए।

पर ज़िन्दगी और दुनिया की रंगारंग बिपताओं और दिन-रात की मसरुफियतों के होते हुए मैंने इस किताब को तरतीब दिया और दिल्ली में रहकर अपनी आँखों के सामने इसको छपवाया ! यहाँ तक कि एक शाम ऐसी भी आई कि कान्धे पर कुवांरी बहन का जनाज़ा था और हाथ में "रस-सागर" के पुरुफ। सुबह-सवेरे दिल-ही-दिल में आँसू बहाता था और रातोंरात "रस-सागर" के फ़ुटनोट लिखता था। मगर दिल को एक लगन थी, इसलिए बुरी-भली किताब आपके सामने है।

इसकी तैयारी में जिन लोगों ने मेरा हाथ बँटाया उनका शुक्रिया अदा करता हूँ खासकर अपने दोस्त **कैलाशपतजी सन्धियाना रईसे-आज़म, कानपुर** का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ, कि उन्होंने मेरी बड़ी मतद की और जिन लोगों ने मेरा दिल दुखाया उनको माफ़ करता हूँ।

"रस-सागर" की खास चीज़ उसके फ़ुट-नोटस् भी हैं, जिनके लिखने में पूरी सेहत का खयाल रखा गया है और हर तरह कोशिश की गई है कि नागरी पढ़नेवाले उन शब्दों का मतलब समझ जायँ, जिनका मतलब वो किसी वजह से नहीं जानते। मैंनें जान तोड़कर अपनी-सी कोशिश की है, कि कहीं मतलब गलत न हो। यहाँ तक कि कहीं-कहीं अपने ख़याल को अच्छी तरह समझाने के लिए पूरे-पूरे मिसरों के मतलब दे दियें हैं। फिर भी मैं जानता हूँ कि कुछ-न-कुछ ग़लतियाँ रह जा सकती हैं। इन रह जानेवाली ग़लतियों के लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि आप उनको ख़ुद ठीक कर लेंगे।

खुशी के बारे में दुनिया का खयाल है कि वह धन-दौलत और शौहरत से पैदा होती है, ठीक है। पर कवि के मन का आनन्द किसी और ही बात में है। मेरे लिए सबसे बड़ी मसर्रत यह है कि मैं हिन्दू-मुसलमानों को सच्चाई के साथ एक देखूं। दोनों प्रेम के कोमल मगर अमर रिश्तों में ऐसे जकड़ जायँ कि कोई ताक़त उनको अलग न कर सके।

मेरी इसी आशा ने "रस-सागर" को छापा है। यह एक बेचैन आत्मा की पुकार के सिवा और कुछ नहीं!

आशा के कपकपाते हुए बेचैन आँसुओं की यह
छागल मैं अपने हिन्दू बहनों और भाइयों को दिली
इज़्ज़त और प्रेम के साथ अर्पण करता हूँ।

देखना यह है कि हिन्दी-संसार बेचैन आत्मा की इस नज़्र के साथ क्या बर्ताव करता है?

अगर 'रस-सागर' के गीत प्रेम के साथ सुने गये, तो दूसरी पुष्पाञ्जलि में अपनी मुट्ठी में दबाये हुए हैं।

"सागर"

जीवन और साहित्य

"सागर"

आप जानते हैं कि काव्य ही नहीं, जीवन और जीवन का हर संघर्ष और इन्सान की कोशिश का मक़सद ज़िन्दगी में सुख और ऊँचाई पैदा करना और आदमी की आत्मा को पाक बनाना है ।

इस ख़याल को सामने रखते हुए हर कलाकार की कला का मक़सद भी इन्सान की सेवा के सिवा कुछ नहीं हो सकता, चाहे वह किसी कलाकार की कला का मक़सद वही क्यूं न मान लिया जाय जो अफ्लातून (Plato) ने बताया है । मेरा मतलब यह है कि अगर कविता का मक़सद समाज में आनन्द का पैदा करना मान लिया जाय, तब भी यह कोई छोटा काम नहीं है । इस संसार में जहाँ क़दम-क़दम पर सख़्ती और ज़ुल्म का एक शोर और लूट-खसोट का एक तूफ़ान जीवन की नाव को हिचकोले दे रहा है, सारे समाज को घड़ी दो घड़ी के लिये जीवन के दु:खों को भुलाकर ख़ुशी से दु-चार कर देना सचमुच बहुत बड़ा काम है । फारसी के एक महाकवि रूमी ने कहा है—

'शायरी जुज़वेस्त अज़ पैगम्बरी'

(कविता अवतार होने का एक हिस्सा है)

पर मेरे ख़याल में यह अवतार होने का एक हिस्सा ही नहीं बल्कि एक बड़ी ही कोमल ईश्वरता है । अब यह आदमी के भाग्य ही बुरे हों तो क्या किया जाय कि इस ईश्वरता का भेद समझने से लाचार है । और उसके स्वभाव की लाचारी उसको ताक़त से डरने की नीच आदत डाल चुकी है । वह ऊँचे आदर्श और कोमल कल्पनाओं से इतना असर नहीं लेता जितना कि लाठी से ?

लाठी और काव्य ! दो कितनी अनेक चीजें हैं, यही वह मतभेद है जो हजारों बरस से राजनीति व कविता के बीच एक भारी दीवार बना रहा। इस युग की चाल तो यह बता रही है कि इंसानी तरक्क़ी के साथ-साथ साइंस और उसकी आये दिन की नाश करने वाली इजादें एक ऐसी डरावनी और भयानक दुनिया का सामान इकट्ठा कर रही हैं, जिस में कला की तारीफ शायद सिरे ही से बदल जायगी और उसका असली रूप बिल्कुल मिट जायगा।

(२)

आइये ज़रा इन मसलों को एक-एक करके देखें और यह जानने की कोशिश करें कि इसका असली कारण क्या है; क्यूं हमें एक अजीब इंक़लाब का सामना करना पड़ रहा है ?

बात यह है कि पुराने समाज का एक हिस्सा तो राजे-महाराजे, अमीर और नवाब थे। दूसरे में थी जनता। कविता, चित्रकारी, संगीत—यहाँ तक कि पढ़ना लिखना भी साधारण जनता के भाग्य में न था। जो कुछ था वह ऊँचे दरज के लोगों के लिये था। पर अब बहुत बड़ी हद तक सामाजिक खयालों में तब्दीली हो गयी है और समाज एक दरजे के लोगों तक सीमित नहीं रहा। नया समाज सब दरजों के आदमियों से मिल कर बना है और इस समाज में जनता का हिस्सा सब से बढ़-चढ कर है।

इस नयी क्रान्ति ने विचारों, बोलचाल और हर चीज़ में इंक़लाब की नींव रक्खी है और कला का रिश्ता ज़िन्दगी से जोड़ दिया है। इस ज़हनी इंक़लाब (मानसिक क्रान्ति) ने हमें रीयलिज़म (Realism) का मतलब बता दिया है। जब किसी देश के साहित्य में रीयलिज़म की लहर दौड़ती है तो कुएं की मिट्टी की तरह शोखी का मलबा तो निकलता है, मगर विचार स्वाभाविक ज़रूर हो जाते हैं और बोली दरबारी नहीं रहती। यानि कवि व साहित्य-कार को उस बोली में अपने विचारों और भावनाओं को ज़ाहिर करना पड़ता है, जिसे जनता ज्यादा-से-ज्यादा समझ सके और ऐसी बातों पर ध्यान देना पड़ता है जो आस्मानों के बजाय धरती पर फैली हुई सच्चाइयों और ज़िन्दगी से सम्बन्ध रखती हों। चित्रकार को

अपनी तस्वीरों में ऐसे रंग भरने पड़ते हैं जो जनता के घायल दिलों पर मरहम बनकर असर करें और गायक के लिये ज़रूरी हो जाता है कि वह संगीत की नज़ाकतों को नयी सूरत दे दे।

ऊँचे विचारों व पवित्र भावनाओं को लिखने और उनको संसार में फैलाने से आखिर मक़सद क्या है ? बस इतना ही तो, कि जनता के कर्तव्य ऊँचे और पवित्र हों। यह खुली हुई सच्चाई है कि सच्चे कलाकार का यह महदूद खयाल नहीं हो सकता कि वह बस ऊँचे दर्जे के लोगों को ही पवित्र और ऊँचा करे। पर होता यही रहा कि हमारा साहित्य राजे-महाराजों व अमीर जाति की जायदाद बना रहा। इसके लिये धन-दौलत वालों को बुरा नहीं कहा जा सकता। पिछले जमानों की राजनीति ही यह थी। सच्ची बात तो यह है कि उन्हीं के शौक और दया से हर बोली में इतने बड़े साहित्य की पैदावार हो सकी। पर उसके साथ ही साहित्य को गुलामी के एक लम्बे-चौड़े जमाने से गुजरना पड़ा और वह इनी-गिनी बातों, गिनती के रंग और तरीक़ों में घिर कर रह गया। मगर अब जमाना हज़ारों करवटें ले चुका है और पुराने खयालों की जगह नये खयालों ने ले ली है। इसलिये साहित्य की मशीनरी का अब एक-एक पुरजा बदल ही जाना चाहिये।

सोचा जाय तो यह सच भी है कि युगों के पुराने और दीमक लगे हुए विचार और आदर्श नये जमाने की बदली हुई जनता की ज़रूरत की कसौटी पर ठीक भी नहीं उतरते। बीसवीं सदी में भला वह बातें कैसे मानी जा सकती हैं, जो सोलहवीं या सतरहवीं सदी में शास्त्रों का दरजा रखती थीं। आप सोचें तो इस नतीज़े पर पहुँच सकते हैं कि काव्य अपने जमाने और कवि व साहित्यकार अपनी दुनिया की पैदावार हुआ करता है। उर्दू शायरी पर पहले-पहल दक्कन के शिया हुकमरानों के धार्मिक विचारों का असर पड़ा। जैसे ही यह दुखिया जवान हुई, तो मुग़लों की हुकूमत ने बेजान होकर दम तोड़ दिया। यही नहीं, वह कस-बल भी जाता रहा, जिस से क़ौमों के भाग्य बना करते हैं। उर्दू शायरी की शुरूआत ही में वह तमाम बातें पायी जाती हैं जो गिरावट की पैदावार होती हैं और गिरावट पैदा करती

हैं। गज़ल की बढोतरी का जमाना ग़ालिब और मोमिन का जमाना बतलाया जाता है; पर वह पूरा जमाना मुसलमानों की ज़िन्दगी की आखरी साँस थी। दम तोड़ते हुए इंसान की किसी बात में जान नहीं होती। मुसलमानों के राजपाट जाते वक़्त की ग़ज़ल सचमुच उनके बरबादी के जमाने की पैदावार थी और उस जमाने के कवियों के ही नहीं, महाकवियों के विचार विपता, दुःख और बेएतमादी (अविश्वास) में डूबे हुए थे।

हो सकता है, कि मैं राह से भटक रहा हूँ; मगर इसे सच्चाई से तो किसी को इंकार हो ही नहीं सकता कि श्रृंगार-रस (Lyrical Poetry) सदा कौमों के गिरते हुए जमाने में परवान चढ़ता है। ग़ज़ल जितनी जल्दी परवान चढ़ी उसकी बढोतरी ही बता रही है कि इसे एक बना-बनाया जमाना हाथ आ गया था।

(३)

शायरी को नये सांचे में ढालने के लिये आज बड़ी छान-बीन की ज़रूरत है। पर बड़ी मुश्किल है कि लोग तबदीली की ज़रूरत तो महसूस करते हैं; मगर न मसलों के ज्योग्रोफीकल (Geographical), सामाजिक और आर्थिक (Economic) आधार को समझते हैं और न ही यह असली भेद बताते हैं कि अदब (साहित्य) कल्चर (Culture) की पैदावार और उसका आइना होता है। कल्चर की नेंव होती है ज्योग्रोफ्याई और आर्थिक वातावरण पर; और ज्योग्रोफ्याई वातावरण एक हद तक अटल चीज़ है। हज़ारों लाखों बरस में कोई खास तब्दीली ज़ाहिर होती है। असली चीज आर्थिक वातावरण (Economic Environment) है, पैदावार के ज़रिये और दौलत की बाँट के तरीक़े कभी-कभी बदलते रहते हैं। धार्मिक, राजनीतिक और अदबी नज़रियों (Theories) की नेंव पैदावार के ज़रियों और धन-दौलत की बाँट पर है। इसलिये यह भी बदलते रहते हैं। साहित्यकार और कवि, अवतार और महात्मा अपने जमाने (आर्थिक वातावरण) का नतीज़ा और आवाज़ होते हैं। साहित्यकार और कवि क्रान्ति पैदा नहीं करते, बल्कि हर इंकलाब अपने-अपने कवि और

साहित्यकार पैदा करता है। वाल्टीयर और रुसो ने इंकलाब पैदा नहीं किया, बल्कि १८वीं सदी के गुज़रने पर फ्रांस के वातावरण ने वाल्टीयर और रुसो को पैदा किया।

लेकिन, यह सच्चाई भी कभी नहीं झुठलाई जा सकती कि क्रान्ति को फैलाने के लिए शायर और अदीब बुनियादी खिदमतें करते हैं और क्रान्ति, जागृति और इन्सान की चेतना को जिस क़दर यह तेज़ करते हैं, दूसरे नहीं करते। वाल्टीयर व रुसो का यह कारनामा था कि अपनें जमाने की आर्थिक तबदीलियों के नेंव पर जो खयाल जनता के दिलों में लहरें ले रहे थे उनको बड़ी खूबसूरती से जमाने के सामने रख दिया। इस दर्पण में अपनी सूरत देखकर जनता पर खुला कि उसका असली रंगो रूप क्या है।

उर्दू शायरी पर बातचीत करते हुए लोग बुनियादी मसलों से आँख बन्द कर लेते हैं। यही वजह है कि जनता न कविता की हक़ीक़त समझ सकती है और न शायरी के रसिक इन मसलों का जवाब पा सकते हैं, जिनका जवाब पाने के लिये वह कुदरती तौर पर बेचैन हैं। आजकी उर्दू शायरी अपने आस-पास के असर से पुरानी शायरी के मुक़ाबले में बिल्कुल जुदा है, जिसकी तरक़्की उसके बहुत ही ऊँचे और सुनहरी भविष्य का पता देती है; लेकिन कुछ लोग खुदको शायरी के नये स्कूल पर "नेचरल" (Natural) और कौमी या इन्कलाबी शायरी के लेबल लगा देते हैं या इसे बेकार और फिजूल कह देते हैं। रहे वे सर फिरे जो इसी जमाने की पैदावार हैं। कुछ कुदरती तौर पर इन मसलों को अपने खयाल में खुद हलकर लेते हैं। हाँ, वह लोग जिनकी कला का कारोबार आसमानी फिलस्फों और खयाली बातों पर चला करता था वह इस साहित्यिक इन्कलाबके सर चश्मे (सोता) तक नहीं पहुँचते। जब पुराने ख़याल के गजल कहने वाले इस खौफनाक तूफ़ान को देखते हैं, तो उनकी समझ में कुछ नहीं आता। वह खौफ व नफरत के मिलेजुले भावों के साथ घबराकर मुँह फेर लेते हैं। इन सारी नागवा-रियों का असली कारण यह है कि कभी मसलों को उनकी रोशनी में समझने की चिन्ता नहीं की गई। कविता को जब परखा गया फ़नकी कसौटी पर परखा गया। कभी शायरी को

देश के रहन-सहन जुग्राफ़्यायी और तीरखी सच्चाइयों की कसौटी पर नहीं देखा गया।

में बस एक विद्यार्थी हूँ। पैदा होने के बाद इन सतरों के लिखते वक़्त तक मेरा सारा जीवन कविता और साहित्य के खब्त ही में गुजरा है। यह जो-कुछ लिख रहा हूँ इसे हरगिज़ समझाना न समझिये। सच पूछिये तो यह भी एक कोशिश है, मसलों को समझने की।

उर्दू कविता फ़ारसी शायरी की पूरी नक़ल है। बहरों (मात्राओं), औज़ान, लफ्ज़, भाव और भावनाएँ, साज़-सामान, रहन-सहन, कल्चर, वातावरण और सारी बातों के लिहाज़ से भी यह फ़ारसी शायरी की अचम्भे में डाल देनेवाली नक़ल है और इतनी कामयाब है कि कहीं-कहीं यह असल से भी अच्छी है। उर्दू साहित्य अरबी व फारसी साहित्य की नेंव पर है और उर्दू साहित्य पर इस्लाम का वैसा और उतना ही असर है जैसा कि हिन्दी काव्य पर वेदान्त, रामभक्ति और कृष्णभक्ति का।

मेरा खयाल है कि फारसी शायरी से उर्दू कविता के असर लेने की असली वजह हिन्दुस्तान में मुसलमानों का ईरानी, हिन्दी मिला-जुला कल्चर और उनकी जल्दी मिट जानेवाली हुकूमत थी। अगर अकबर की औलाद अपनी शान के साथ हिन्दुस्तान में एक सदी और जिन्दा रहती, तो उर्दू कविता का कल्चर बिल्कुल हिन्दी होता। यह कुछ उड़ान नहीं है। इस दावे के सबूत में उर्दू कविता के पहले दौर, कुतुबशाही जमाने का कलाम अभी मौजूद है और मीर की शायरी में भी इस रंग की झलकियाँ पायी जाती है। लेकिन इन झलकियों को असली रोशनी नहीं कहा जा सकता। कारण कुछ भी हो, उर्दू कविता फ़ारसी शायरी की नक़ल है और इस जमाने में भी नक़ल है। क्यों हैं ? यही सबब तो मैं आपको बताना चाहता हूँ।

ईरान में आज तक पैदावार के जरिये और धन-दौलत की बाँट में कोई खाल इन्कलाब नहीं हुआ है। इस्लाम से पहले के बादशाहों के जमाने से जो जागीरदारी वहाँ जारी थी वही अबतक चल रही है। मामूली तबदीलियाँ हुई हैं। इस्लाम ने बहुत बदला। मगर इक्तसादी (आर्थिक) निज़ाम (Economic system) को नहीं बदला। न

समाज के हलकों में इस्लाम की वजह से कोई खास उलट-पलट हुई। इसका नतीजा यह हुआ कि ईरान की कविता रोदकी और फिरदोसी ले लेकर करक़ा आनी और महाकवि बहार तक एक ही ढंग पर रही। सबकी भावनाएँ व कल्पनाएँ एक-सी रहीं।

यह भी बड़ा सवाल है—क्या इन कवियों की कविता 'नेचर' के मुताबिक थी? आप कहेंगे कि आदमी का स्वभाव कभी नहीं बदलता। इसलिए इन कवियों की कविता भी नहीं बदली। मैं निडर होकर कहूंगा कि यह सच नहीं है। बात यह है कि आदमी के स्वभाव में जितना हिस्सा हैवानी फितरत (Biological needs, instincts etc) का है वह तो एक हद तक अटल चीज़ है। पर उसके जाहिर होने की सूरतें और शक्लें तरह-तरह की हैं। जिन्हें सभ्यता और कल्चर कहते हैं वह बदलने वाली चीज़ें हैं। "प्रेम" जो बकरे, जंगली गोण्ड और सभ्यता के तराशे हुए कवि तीनों में Bioeogical needs instincts etc होने की वजह से एक ही रंग से है जो वक्त और जगह के बन्धन से एक हद तक आज़ाद भी है, पर इसके जाहिर होने के ढंग हर ज़माने, हर देश और हर हल्क में मुखतलिफ हैं; क्योंकि इसके ज़ाहिर होने की नेंव आर्थिक वातावरण पर है।

न बदलनें वाली आदमी की अटल फितरत कोई सच्चाई नहीं रखती। यह एक तारीखी सच्चाई है कि ईरान में आर्थिक इन्कलाब नहीं हुए। इसलिए न भावों के जाहिर होने की सूरतें बदलीं न संसार और जीवन को देखने की ऐनक तब्दील हुई। इसीलिए सारे फारसी साहित्य में एक तकलीफ़ देने वाली एकसानियत पाई जाती है। रंगारंगी का कुदरती तकाज़ा तो यह था कि जहाँ फारसी शायरी में दरबारी कवियों की भीड़ थी, कोई एक बागी शायर भी पैदा होता, मगर मैं नहीं जानता कि फारसी शायरी का ज़िक्र करते हुए किसी एक बागी कवि का भी नाम लिया जा सकता है। यह याद रखना चाहिए कि जिन कवियों को कम्यूनिज्म के आन्दोलन ने पैदा किया वह ईरान के जागीरदाराना माहौल (वातावरण) की पैदावार नहीं बल्कि रूस के आर्थिक वातावरण की पैदावार हैं। असल में

लोग यह समझने की बिल्कुल तकलीफ़ नहीं उठाते कि फारसी शायरी जागीरदाराना कल्चर की पैदावार है। कोई कवि ऐसा नहीं जो दरबारी न हो। उनकी कविता का सारा चाल-चलन राजा और प्रजा के आपस के मेल की तस्वीर है सारे Poetical Conventions को एक-एक करके देखिये कि हर खयाल राजा व प्रजा के आपस के मेल-जोल के खयाल की बुनियाद पर खड़ा हुआ है। गज़ल की प्रेमिका को ही लीजिये बड़ी आज़ाद, अल्हड़ और ज़ालिम महारानी जैसी है। मगर प्रेमी भीगी बिल्ली अपने को मिटा देनेवाला कठोरता को सहनेवाली प्रजा की तरह नज़र आता है। इसी तरह श्रृंगार-रस की सारी कविता और सारे भाव जो दरबारी कवियों ने शुरू किये थे, तमाम के तमाम इक्तसादी माहॉल (आर्थिक वातावरण) की तस्वीर है। अफ्सोस कि न वक्त है और न किताब में गुंजाइश, नहीं तो इस जगह में रोदकी व फिरदासी के जमाने की तस्वीर खींचता, तो बहुत-सी बातें सामने आ जाती। मगर इसमें क्या शक है कि सूफियाना कविता ईरानी जनता की माली गिरावट की आवाज़ थी और सामाजिक कविता बीच के तब्के की ज़िन्दगी की बनी-बनाई शक्ल। इस जगह शैख़ सादी की सामाजिक तालीम की अगर छानबीन की जाय तो आसानी से साबित हो सकता है कि यह तालीम भी दुनिया के तमाम बीच के अखलाक़ की तरह सख्त ज़मानासाज़ और पीछे को ले जानेवाली थी।

ईरान की तरह हिन्दुस्तान में भी अब तक कोई क्रान्ति से भरी हुई माली तब्दीली नहीं हुई। चूंकि यह तारीखी वाक़या है कि खिलजियों से लेकर बहादुरशाह 'ज़फ़र' आखरी मुग़ल बादशाह तक न कोई माली क्रान्ति हुई और न कोई ऐसा राजनैतिक इन्कलाब, जो समाज के हल्कों को उलट-पलट कर देता। इसलिये 'खुसरो से 'गालिब' तक की कविता की सारी मशीनरी में कोई तब्दीली नहीं हो सकी। फ़ारसी शायरी की बनाई हुई बटिया पर उर्दू कविता की कुमारी भी चलती रही और इस बटिया से पगडण्डियाँ फूट पड़ने पर भी वह उसी बटिया पर चली जा रही हैं।

इसका असली कारण यह है कि फारसी व उर्दू कविता का माली वातावरण (Economic Environment) एक ही है। उर्दू में भी फारसी शायरी की तरह दरबारी कवि साधू शायर और धार्मिक कवि पैदा हुए। वही उनकी शायराना परम्पराएँ (Poetical Conventions) हैं, वही उनके भाव हैं और वही उनकी कल्पनाएँ हैं। दुनिया और जीवन को देखने के लिए फारसी वालों की आँखों पर जो ऐनक चढ़ी हुई थी, वही उनकी आँखों पर भी लगी हुई है। इस सारी भीड़ में बस एक 'नज़ीर' अकबराबादी है जो जनता की सच्ची आवाज़ है। बड़े अचम्भे की बात यह है कि ईरान से लेकर हिन्दुस्तान तक की लम्बी-चौड़ी दुनिया और जमाने की रीति-रिवाज के खिलाफ 'नज़ीर' अकबराबादी पैदा हुआ, जो सरासर जनता का कवि था। जिसकी कविता जनता की कविता; और जिसकी बोली जनता की बोली कही जा सकती है। 'नज़ीर' को जितना जनता की कविता और उस की कसौटी पर कसिये, वह खालिस सोना साबित होता है। आप यह पढ़कर बड़ा ही अचम्भा करेंगे कि उर्दू कविता में क्रान्ति पैदा करनेवाले महाकवि मौलाना हाली, मौलाना आज़ाद और उनके बाद सारे नये उर्दू कवियों की कला का राजमहल 'नज़ीर' की रखी हुई नेंव पर ही चुना गया है। पर उसकी बोली अपनी सूरत में न रह सकी और रहनी भी नहीं चाहिये थी। 'नज़ीर' की कविता (Descriptive) बयानिया थी। उसकी कविता को खालिस हिन्दुस्तानी कविता कहा जा सकता है और हर रस से उसकी कविता का मधु-पात्र भरा नज़र आता है।

हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य को मैं जानने की तरह नहीं जानता। पर जितना जानता हूँ उसकी बिना पर कह सकता हूँ कि उसका हाल भी फारसी व उर्दू साहित्य की तरह है। हिन्दुस्तान में मशीन का जमाना आया, पैदावार व बाँट के नये-नये ज़रिये पैदा हुए; मगर सब कुछ अभी बहुत ही इब्तदाई मंजिल में है। यह तौर-तरीक़े अभी इतनें फले-फूले और बढ़ नहीं सके हैं कि समाज के जीवन में कोई खास क्रान्ति पैदा हो जाय। अब भी जागीरदारी चल रही

है। इस गिरते हुए सिस्टम का असर हिन्दुस्तानी साहित्य पर छाया हुआ है और देसी बोलियों के साहित्य के रास्ते में रोड़ा बन कर रह गया है। बहुत कुछ ज़माना बदल जाने पर भी, लकीर के फ़कीर, जो अपने आपको जमाने और बदलने वाले समय के सांचे में नहीं ढाल सकते, वह अब भी पुराने ज़माने के स्वप्न देखे जाते हैं या ज़माने के धारे को पलटकर उलटी गंगा बहानी चाहते हैं। हाली हो या इक़बाल, टैगौर हो या कोई और जो समाज को आगे बढ़ाने के बजाय ६००० बरस पहले के आर्यवर्त या कम-से-कम १३०० बरस पहले के अरब की तरफ़ ले जाना चाहता है, उसे हम रिवाईवलिस्ट (Revivalist) न कहें तो खुदा के लिये बताइये क्या कहें ? जिस जमाने में हम सांस ले रहे हैं, उस जमाने की जागृति कच्ची नींद की तरह है। सवेरा होने से पहले हमारी आँख खुल गई हैं। जब तक रात की तारीकी बिल्कुल न छट जाय और नूर का तड़का न हो ले, हम जीवन को उसकी असली सूरत में नहीं देख सकते और न हमारे चहरे दुनिया को अच्छी तरह दिखाई दे सकते हैं।

बुरा मानने की बात नहीं और न किसी का दिल दुखाना मक़सद है; मगर सच्चाई और तारीख़ की कसौटी पर काव्य के कुन्दन को कसना है, इसलिये यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि इस वक्त तक जनता में जितनी राजनैतिक बेदारी पैदा हुई है, वह सब अखलाक़ी फ़लसफ़ों की नेंव पर पैदा हुई हे। और हिन्दुस्तान के धार्मिक जीवन को देखते हुए इसको गलत नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह भी एक खुली हुई सच्चाई है कि इसी वजह से यहाँ के रहनेवालों के दमाग़ व ज़हन नहीं बदल सके।

नये कवि और साहित्यकार समाज में पैदा होकर समाज से ही बाग़ी हैं। उनकी बग़ावत कुछ भारत माता की आज़ादी ही के लिए नहीं है उनका यह संघर्ष कुछ बिदेशी हकूमत के ही खिलाफ़ नहीं है, वल्कि जहाँतक मैं ख़याल करता हूँ वह नये सिरे से नक्शा ही बदल देने का इरादा रखते हैं। वह राजनैतिक क्रान्ति की पैदावार हैं और सियासी इन्क़लाब के कर्ता-धर्ताओं से उनका गहरा और अमर सम्बन्ध है। जो राजनैतिक इस्प्रिट हमारे

ज़माने के आर्थिक वातावरण के पेट से पैदा हुई है वह इस इस्प्रिट के सपूत हैं। पर नई समाज के बहुत से हिस्से अभी निरे कच्चे हैं और जनता अपने फ़ायदे की बात सुनने से अभी भड़कती है, इसलिये समाज व साहित्य का कोई मजबूत बन्धन नहीं हो सका है। यही वजह है कि झोंपड़ों का पुजारी इन्क़लाबी होते हुए भी कभी-कभी रंगमहलों में भी नज़र आता है और पुराने समाज से बग़ावत करने पर भी उसके साथ अपने सम्बन्ध को ख़त्म नहीं करता। मेरा ख़याल यह है कि इन झगड़ों में पड़ने की ज़रूरत नहीं है। कवि का कर्तव्य दुनिया व जीवन की सेवा करना है। बिखरी और बहकी हुई इन्सानियत को प्रेम और आज़ादी की डोरों में पिरोना है। यह फ़र्ज़ जब और जिस तरह पूरा हो सके इसको पूरा करना उसका पैदायशी काम है। यह ठीक है कि साहित्य की 'टेकनीक' पूरी तरह से अभी नहीं बदल सकी है और अभी तक हमारे इन्क़लाबी और देश भक्त कवि और साहित्यकार बीच में लटक रहे हैं और उन्होंने पूरी तरह जागीरदारी कल्चर और उसके सिस्टम से पैदा किये हुए भावों से अपना रिश्ता-नाता नहीं तोड़ा है। यह भी ठीक है कि वह उस मांझी की तरह हैं, जिसने अपनी नाव किनारे से बाँध दी हो और ख़ुद तट पर बैठा हुआ चप्पू चला रहा हो। पर ज़रा यह भी तो सोचिये कि इन बेचारों को भी क्या दोष दिया जाय। हिन्दुस्तान में अभी साम्राज्य ख़ुद बढ़ोतरी की पहली मंज़िल में है। इसलिए हमारी देशी ज़बानों ख़ास कर हिन्दुस्तानी में, इतमीनान और ख़ुशहाली का वैसा साहित्य पैदा नहीं हो सका जैसा उन्नीसवीं सदी के आख़िर में इंग्लिस्तान में पैदा हुआ था।

जो कुछ इस वक्त तक हो सका है उसका निचोड़ यह है कि पुरानी उर्दू कविता में Objectness का हिस्सा ज्यादा था और नये शायरी में Subjectness बढ़ी हुई है। पुरानी कविता रूह और रूहानियत और अख़लाक़ी फ़लसफ़ों की क़ैदी थी, मगर नयी कविता में जीवन के देखने और तजुर्बे पर ज़ोर दिया जाता है। पुराने लोग अपनी कविता के काफ़ले को आकाश पर ले जाते थे और नये दीवाने इसी धरती

पर अपने कारवाँ को बढ़ाये चले जा रहे हैं। देखा जाय तो यह क्रान्ति भी कम नहीं।

बड़ी मजबूरी यह है कि होने की तरह हमारे देश में न राजनैतिक इन्क़लाब हुआ और न आर्थिक क्रान्ति। जो कुछ नये साहित्यकार कर रहे हैं उसमें भी उन्हें जमाने से कठिन मुक़ाबला करना पड़ रहा है और जैसे-जैसे हमारा जीवन बदलता जायगा, मैं समझता हूँ साहित्य भी बदलता जायगा।

यह हो या न हो, पर यह तो गाँठ में बाँध लेना चाहिये कि पुराने विश्वास व भाव, जिन पर अबतक साहित्य की नेंव रही है हमें छोड़ देने पड़ेंगे। नये भावों, कल्पनाओं और साज़ो सामान पर नये साहित्य की नेव रखनी पड़ेगी। अगर यह नयी बुनियाद नहीं रखी जायगी, तो ज़माना ख़ुद सब-कुछ उखाड़ कर क्रान्ति का झण्डा गाड़ देगा।

कैसे-कैसे हमारे देश में साहित्यिक क्रान्ति की लहर आई, अब ज़रा उसकी कहानी सुनिये।

लगभग २०० बरस गुज़र चुकने पर हिन्दुस्तान की सियासी जागृति ने पहले-पहल समाज में उन बुनियादी आदर्शों को शुबा की नज़रों से देखा, जो बीते हुए ज़मानों ने उसके लिए विरसे में छोड़े थे और जिन्हें मिटाने या जिनको समझने का ख़याल भी कभी जनता को नहीं हुआ था।

अपने आस-पास को इस नये ढब से समझनें का ख़याल जब समाज में सख़्ती से पैदा हुआ तो सबसे पहले जिस चीज़ पर नज़र गई, वह देश की ग़ुलामी थी। मुसलमान लीडर हों या हिन्दू नेता, सब-के-सब पुराने समाज और उसके धार्मिक रंगों में रंगे हुए थे। उन्हें देश की ग़ुलामी से छुटकारा पाने का तरीक़ा अपनी हालत से वापस होने और बग़ावत में दिखाई दिया। एक तरफ़ तो मुसलमानों के बड़े आलमों ने कहा कि यह सारी सामाजिक व राजनैतिक बीमारियाँ इसलिए हैं कि हम सच्चे मुसलमान नहीं है। दूसरी तरफ़ वेदान्ती नेताओं ने बताया कि हमने अपने सामाजिक व धार्मिक आदर्शों को छोड़ दिया है इसलिए देश ग़ुलाम है और इसीलिए हमको नीचता घेरे हुए है।

यूरोप और यूरोपियन कल्चर और उससे पैदा होनेवाली गुलामी से छुटकारा पाने के लिये यह अमृत ढूंढ निकाला गया। एक तरफ़ इसकी आत्मा अहिंसा ठहरायी गयी, जो महावीर मत और बुद्ध मत का निचोड़ है। दूसरी तरफ़ मुसलमानों में इस्लाम को उजागर करने की लहर पैदा हुई।

देश में पैदा होनेवाली इस चेतनता को हम अधूरी धार्मिक व राजनैतिक चेतनता कह सकते हैं। इस चेतनता के असर से जो साहित्य और कविता पैदा हुई, वह बड़ी हद तक मौलाना हाली के अधूरे मज़हबी और क़ौमी खयाल की पूर्ति थी। मेरे खयाल में इक़बाल व टैगोर इसी की सच्ची पैदावार हैं। इक़बाल का फलस्फा इस्लामी है और टैगोर का वैदान्तिक।

यह और इनके रास्ते पर चलनेवाले अपने जमाने के नये साहित्य बनानेवाले कहलाये और समाजी व सियासी लहर से इन की कल्पना को नयी कविता का दरजा दिया गया।

इसके बाद क़ौमी तरक्क़ी का मंजिल-ब-मंजिल सफर आपके सामने ही हुआ है। रात की कहानी है, सुबह सवेरे क्या दोहराऊँ। पर कविता व साहित्य की इन्कलाबी आत्मा बस यहीं तक आकर नहीं रुक गई। वह एक हवा का न रुकने वाला तेज झोंका थी, जो सारे चमन को जगाती हुई नये पौदों के सरों पर पहुँच गई और उनको पैदाइश (Creation) के झूलने में चौंका दिया। एक नया दरवाजा खुला। यूँ तो पहले ही पुराने जीवन के असर से उर्दू साहित्य और कविता में बहुत-कुछ घरेलू रंग पैदा हो चुका था। हिन्दी-उर्दू निरागी में प्रेमचन्द और रागी में अकबर, इकबाल और कुछ चकबस्त जिसके पैदा करने वाले थे। अगर कुछ और मुड़कर देखा जाय तो अनजान तरीक़े से नज़ीर अकबरबादी की कविता में जितना मुकामी रंग पाया जाता है, वह आजकल के किसी उर्दू कवि की कविता में नहीं पाया जाता।

जमाना कुछ और आगे बढ़ा, समाज की नई लहर ने हमारी कविता में Realism

का नया दरवाज़ा खोला। यह तो बड़ी अच्छी बात थी पर कवियों की सारी तवज्जह Realistic Romantic Poetry पर ही जमकर रह गई।

बढ-चढ़कर जो तरक्क़ी ई, सो बस इतनी कि किसान और मज़दूर को कविता में खास जगह मिल गई। उर्दू शायरी तो किसान और मज़दूर की डायरी बनकर रह गई। यह तरक्क़ी भी बहुत अच्छी थी, पर बदकिस्मती से इस कविता की बोली भी पुरानी और दरबारी ही रही। इसमें जिन बेचारों की विपता बयान की गई थी, वही उसको नहीं समझ सकते थे।

बुनियादी तब्दीली या असली मक़सद उसी वक्त पूरा हो सकता है कि नई कविता में शक्ति पैदा करने के लिए भावों और कल्पनाओं के साथ बोली में भी तब्दीली पैदा की जाय, जो सचमुच मज़दूरों और किसानों की नुमाइन्दगी कर सके। मेरी मुराद कविता में घरेलू रंग पैदा करने से है। मैं चाहता हूँ कि उर्दू शायरी जो ईरानी उपमाओं और हज़ारों कोस दूर की नहरों, दरियाओं, पहाड़ों और परिन्दों के ज़िक्र से भरी पड़ी है, उनको छोड़कर, हिन्दुस्तानी उपमाओं और खास अपने सुनार के घड़े हुए जेवरों से अपनी कविता की नई-नवेली दुल्हन को सजाया और संवारा जाय। इस तरह हमारी शायरी में अपनी खास बात (Individualily) पैदा हो सके, जो किसी क़ौम की उठने और बढ़ने वाली, उठाने और बढ़ाने वाली कविता की खुसूसियत होती है।

यह कोई उपज नहीं है; ईमानदारी और इन्साफ़ से सोचा जाय तो यही सच है कि हम अपने भावों और कल्पनाओं को कामयाबी के साथ उसी बोली में अदा कर सकते हैं, जो हमारी माँ की बोली होती है और उन्हीं चीज़ों से अपनी कविता में उपमा देते हैं जो हमारे बहुत पास होती हैं। खासकर जिन्हें हम देख चुके होते हैं। उपमा की तारीफ़ भी यही है कि वह पास-से-पास जगह की चीज़ से सम्बन्ध रखती हो।

मैं मानता हूँ कि कला में इस खयाल को आखरी दरजा नहीं दिया जा सकता। कवि की कल्पना न दिखाई देने वाली चीज़ों को पैदा करने में भी आज़ाद है; मगर इस पर भी

देखी और छुई जानेंवाली चीजों को महसूस और देखी जानेवाली चीज़ों से उपमा देनें के लिए कवि कुदरती तौर पर मजबूर है।

मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि अधूरी क़ौमी और सियासी लहर ने हिन्दुस्तान की देशी बोलियों के साहित्य पर बहुत गहरा असर डाला। इस तब्दीली ने उर्दू शायरी की तो बिल्कुल कायापलट ही करदी। हर किसी को शायरी के नये स्कूल ने अपने रंग में रंग लिया। यहाँ तक कि लखनऊ-स्कूल भी, जिसको अपने चोखे रंग पर बड़ा घमण्ड था, दामन न बचा सका। क्या दिलचस्प बात है कि अभी उर्दू शायरी के इस नये स्कूल की हो सकनेवाली बढ़ोतरी पूरी तरह होने भी न पाई थी कि ज़माने की रंगारंगी ने इसको भी फ़ीका और बेरंग कर दिया। सियासी और मुल्की चेतना ने तरक्क़ी की और कई मंजिलें तय कीं और यह ख़याल दिल में घर करने लगा कि रोगी को दवा ठीक नहीं दी गई। सोचने वालों ने यह नतीज़ा निकाला कि वह ज़माने और असलियत से अभी कोसों पीछे हैं। सियासी तजुर्बों ने यह भी बताया कि देश का यह रोग धार्मिक नहीं, समाजिक और माली है। इस रोग को जानते ही सोशलिज्म के इब्तदाई ख़यालों की लहर जनता में दौड़ने लगी और गो इस लहर को फैलाने की कोई भरपूर कोशिश नहीं की गई, इस पर भी नौजवानों में इस नये ख़याल ने अपनी एक जगह पैदा करली। इस नई लहर का असर हिन्दुस्तानी साहित्य के हर पहलू पर पड़ा, पड़ रहा है और मैं समझता हूँ, आनेवाले ज़माने में और भी ज्यादा पड़ेगा। आज के साहित्य में पुराने तौर-तरीकों की जगह तरक्क़ी की चाह, क्रान्ति और हमागीरी ने ले ली है; जिससे यह पता चलता है कि पुराने ख़यालों की बढ़ोतरी की अब कोई उम्मीद नहीं। यह नई लहर तो उस अधूरी धार्मिक व राजनैतिक लहर की भी ज़िक्र है जो इससे पहले समाज को अपने तूफ़ान में बहा ले गई थी और जिसके उतार-चढ़ाव की गोद ने हाली, इक़बाल, अकबर और प्रेमचन्द जैसे अन्मोल रत्न हमको अर्पण किये थे।

देखते-ही-देखते कुछ बरसों में यह इन्कलाब कैसे हो गया? "यह कैसे" इन्हीं दो लफ्जों

में जीवन की दुखती हुई रग छिपी हुई है। अधूरी क़ौमी, सियासी लहर में बह जाने की असली वजह यह थी कि जनता उन सारी पुरानी और दकियानूसी बातों से तंग आ चुकी थी जो साम्राज्य और उसके रंगों में रंगी हुई थी और अब जनता की आत्मा आज़ादी चाहती थी; मगर समाज उसी पुरानी अफ़ीम की पीनक में था और जनता की तड़प को अपने बन्धनों से रोक रहा था। हाँ, मुसलमानों में कुछ सर सय्यद अहमदखां ने और हिन्दुओं में राजा राममोहनराय और उनके बाद आनेवाले नेताओं ने दमाग़ी आज़ादी की लहर जरूर दौड़ाई थी; मगर उसकी मिसाल ऐसी थी, जैसे शक्कर चढ़ाकर रोगी को कुनेन दी जाय। सो यह हालत भी रह थोड़े ही सकती थी नये सियासी और सामाजिक विचार साहित्य पर अपना रंग जमाये बग़ैर न रह सके। हर तरफ से एक शोर उठा कि साहित्य को जिन्दगी का दर्पण होना चाहिए। सच यह है कि जनता की बेदारी ने 'Art as an art' के ख़याल में कोई जान न छोड़ी। समाज की जिन्दगी का ढांचा ही बदल गया और राजपाट की हरदम तब्दीली ने ऊँचे दर्जे के आदमियों की मुक़द्दमी मिटाने की नींव डाल दी। इस इन्कलाब के होते ही "साहित्य जनता की सेवा के लिए" के खयाल ने एक जानदार शक्ल पा ली। अब एक साहित्यकार और कहानी लिखने वाले या कवि के लिए यह ज़रूरी नहीं रहा कि वह किसी एक आदमी के ख़याल और शौक़ के लिए कविता और साहित्य का बच्चा एक्टरस ज़च्चा की तरह जने। अब एक आदमी के बजाय उसकी पीठ पर हज़ारों आत्माओं के शौक़ और ज़रूरत की चाहना का दबाव है। इस चाहना को पूरा करना ही साहित्य को जिन्दगी का दर्पण बनाना है।

यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि अदबी इन्कलाब हो चुकने पर कविता और साहित्य को फायदामन्द और आम बनाने के लिये पहले 'टेकनीक' बदलनी पड़ती है और साथ ही ऐसी बोली में बोलना और लिखना जरूरी हो जाता है जिसे आम लोग अच्छी तरह समझ सकें। सबसे पहले तो बुनियादी खयाल को बदलने की जरूरत होती है। पर आप जानते हैं कि उर्दू

शायरी हो या हिन्दी काव्य अभी तक उन्हीं पुराने विचारों व फलस्फों की ग़ुलाम हैं, जिनमें जनता का दमाग़ हज़ारों साल से उलझा हुआ है। दुनिया का बड़े-से-बड़ा कवि और साहित्य-कार हमसे यही कहता रहा है कि "थोड़ी चीज़ पर धीरज रखना ऊँचाई है और सब्र का फल मीठा"; पर जो मिस्तरी समाज की धार्मिक मशीनरी के चिकटे हुए कल-पुरजों को जानता है, वह ख़ूब समझता है कि यह अश्लोक क्यों रटाये जाते थे। यह तालीम जातीवार फ़ायदे के लिये जरूरी थी। जनता में धीरज रखनेवाले न होते तो सब्र न करनेवालों को जिन्दग़ी शान्ति और खुशी से कैसे गुजरती।

इस तमाम छान-बीन और फैलाव से मुझे यह बताना है कि इस वक्त तक दुनिया के बड़े-से-बड़े कवियों ने अपने जमाने का साथ दिया। यूँ कहिये कि वह अपने जमाने की पैदावार थे और अगर वह ऐसा साहित्य पैदा न करते जैसा कि उनका जमाना चाहता था, तो वह ज़िन्दा न रह सकते थे। उनका ज़माना उनकी जबान से बोलता था। अब भारतवर्ष की नई सुबह है; क्रान्ति की देवी अंगडाई लेकर जमाही लेती हुई उठ रही है; हर तरफ़ जागृति और जिन्दगी हँस रही है; हर तरफ़ कामयाबी और तरक्क़ी की धुन्धली तस्वीरें परछाइयों की तरह चलती-फिरती दिखाई दे रही हैं। कुछ-कुछ ही सही, पर क्रान्ति की आत्मा जीवन के रोम-रोम में ऐसे दौड़ रही है जैसे दिक़ के रोगी के रग-पट्ठों में सेहत की रोशनी।

यह है हमारी आज की दुनिया, जिसमें सवाल होता है कि काव्य क्या है? अपनी-अपनी बोली में बहुत से महाकवियों ने आपको कविता की तारीफ़ बताई, मैं क्या बता सकता है। हाँ, मैं उन पियासों में से ज़रूर हूँ जो बताने से ज्यादा जानने की धुन मे रहते हैं। शायरी कैसी होनी चाहिए———? जबसे यह दुनिया बनी उस वक्त से लेकर इस वक्त तक सुन्दरता और कविता की अनगिनत तारीफ़ें की गई; मगर किसी तारीफ़ पर यह दुनिया एक जबान न हो सकी। सो अब भी क्या दावा किया जा सकता है। लेकिन मैं १७ साल के सोच-विचार और अधूरे तजुर्बों की जान टूटे-फूटे लफ्ज़ों में आपके सामने रखता हूँ।

कविता कवि के भावों, कल्पनाओं और आत्मा के विश्वास का रङ्गीन अक्स है।

कविता कवि की आत्मा और कवि अपने जमाने की पैदावार होता है। भावना, कल्पना, और विश्वास को पूर्ण और सुन्दर लफ्ज़ों में ज़ाहिर करने की महारत कर लेना कवि के दमाग़ से सम्बन्ध रखता है, बाक़ी सब-कुछ उसकी आत्मा में हैं।

याद रखिये चित्रकारी, संगीत, मूर्तिकला—इन सारी कलाओं में भी सीखने का हिस्सा बस राई बराबर है। कवि की तरह पूरे तौर पर न सही, फिर भी चित्रकार, गायक और मूर्तिकार के लिये भी मन और आत्मा को संवारने और निखारने की जरूरत होती है। एक सच्चा शायर संसार और उसकी चीजों या संसार से ऊँची बातों पर गहरा सोच-विचार करता है और अपने विश्वास का सांचा आत्मा की रोशनी में बनाता है। उसे अपने आदर्श से कुदरती लगाव होता है। वह प्रकृति की किताब को गहरी नज़र से पढ़ता है। यह सब क्या है ?——यह सब क्यूँ है ?——और दुनिया को क्या और कैसा होना चाहिये ??

इस सवाल और जवाब में उसकी आत्मा उलझी रहती है।

काव्य इस अन्दरूनी और ज़ाहिरी उलझाव और खींचातानी का जीव है।

बस, सुन्दर कुमारियों, हसीन सीन-सीनरियों, चमकते-दमकते लिबासों, फूलों, सितारों, झरनों और गाती हुई नद्दियों ही से कुदरती शायर का असर लेना Aesthetic sense का कोई कमाल नहीं। कवि की यह आदत पुराने सिस्टम की नेव पर पड़ी है, जिसमें तस्वीर का एक ही पहलू देखा जाता था; मगर आप यह ख़याल न कर लीजियेगा कि कवि के लिए सुन्दरता से असर लेना कोई पाप है। मैं यह बोझ तो दमागों पर डालना ही नहीं चाहता, कि कवि को क्या होना चाहिए। "कवि" को कवि होना चाहिए; मगर सुन्दरता ही नज़र को नहीं खींचती, बदसूरती भी ख़ूबसूरती की तरह एक नज़र आने वाली सच्चाई है और दिल

को सुन्दरता ही की तरह खींचती है। लचकती हुई कमरों की बजाय झुकी हुई कमरों को देखकर जिस आँख से टप दे सी एक आँसू गिर पड़े, वह आँख सबसे बड़ी कवि है।

जीवन के एक ही रुख से असर लेने के मानी यह हैं कि कवि अधूरा कवि है और उसकी कला एक रुखी और अधूरी है। पुराने जमानों के कवि अगर राजा-महाराजों के गायक थे तो हमारे समाज के तरीकों को सामने रखते हुए इस जमाने के कवि जनता के गीत गानेवाले होने चाहिएँ। मैं समझता हूँ कि एक सच्चा कवि हर दम अपनी असली पोज़ीशन को जानता, बूझता और समझता रहता है कि वह कौन-सा चोला उतार फेंके और कौन-सा बाना पहन ले। मेरा ख़याल है कि पक्के शायर की असर लेने की शक्ति कभी सीमित नहीं होती। संसार में जितने बड़े कवि गुज़रे, वह सारे के सारे यूँ तो अपने जमानों की पैदावार थे मगर जो दुःख आज दुःख है वह उनके जमानों में भी दुःख था, इसलिए उनकी कविता में कहीं-कहीं जनता के राग पाये जाते हैं। उर्दू शायरी में महाकवि नज़ीर अकबराबादी इसकी अमर मिसाल है।

बात यह है कि जब तक कवि सुन्दरता और प्रेम के ही राग गाता था उसको परखने वाले सुन्दरता और प्रेम के ही दायरे में उसको परखते और देखते थे। हमारे ज़माने ने कवि को सुन्दरता और प्रेम के गीत गाने वाले से बहुत ऊँचा कर दिया है; इसलिए कसौटी भी सख़्त हो गई है। आदमी की सोच-विचार की शक्ति, उस का दिमाग और दिल तरक्की और नयेपन की जिस मंजिल की तरफ उड़ा चला जा रहा है, मैं आपको बताता हूँ कि उस मंजिल में पइयों चलते साहित्य और बेमानी कविता की गुँजाइश नहीं।

कोई सच्चा शायर इससे इन्कार नहीं कर सकता कि अगर वह Creator है तो नई पैदावार करने के लिए उसे अपने विश्वास को एक साँचे में ढालना होगा और अपने खोटे-खरे की हरदम फिक्र करनी होगी। अब रहा उसका विश्वास, सो उसका धर्म होना चाहिए कि काव्य को जात-पात, देशी-बदेशी, रंग-नस्ल और हर मुल्की बन्धन से आज़ाद रखे। जिस

तरह प्रकृति की सुन्दरता अमीर और गरीब, सुखी और दुखी के लिए आम हैं ऐसे ही कविता के फायदों को तमाम दुनिया के लिए आम करदे । सच्चे शायर का फर्ज इन्सानियत है और उसका धर्म उस सारी दबी हुई दुनिया को उभार देना है जो किसी वजह से अब तक दबी हुई है । वरना हम जीव होते हुए उसे Creator नहीं कह सकते ।

जो शायर कोई नई चीज़ पैदा कर सकता है वह कभी आस-पास का गुलाम नहीं रह सकता और ज़माने में रहते हुए एक नया जमाना पैदा करने की शक्ति रखता है ।

कविता को क़ौमी होना चाहिए या इन्कलाबी, सच पूछिये तो यह चाहना भी बड़ी हद तक गलत है । असल में कवि की आत्मा जबतक क़ौमी या इन्कलाबी न होगी, सच्ची कौमी या इन्कालाबी कविता पैदा हो नहीं सकती । जब तक कवि के मन का खून कविता में रंग नहीं भरता उसमें रचाव और निखार पैदा नहीं होता ।

आखिर में मैं यह कह देना चाहता हूँ कि उर्दू शायरी तरक्की और कामयाबी की मंजिलें तय करके उस मंजिल तक आ पहुँची है जहाँ किसी बोली की ऊँची से ऊँची शायरी पहुँची हुई है । नये स्कूल के माननेवालों ने जो पगडण्डी बनाई है, उस पगडण्डी पर लोग शौक और तेज़ी से सफर कर रहे हैं । अब उर्दू कविता गुल-बुलबुल की शायरी नहीं है, बल्कि उसमें सब रस पूरी मिठास और घुलाव के साथ पाये जाते हैं । यही नहीं बोली में भी बहुत-कुछ घर का रंग पैदा हो रहा है ।

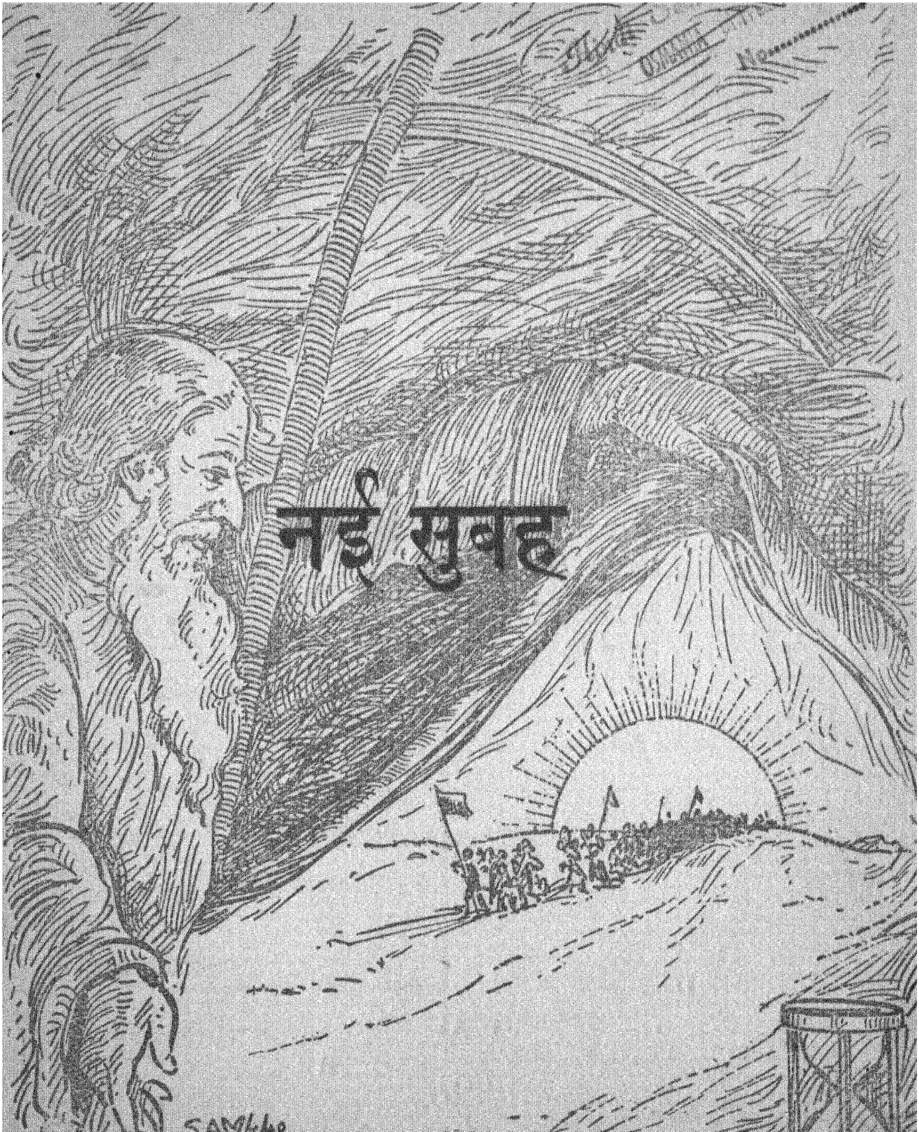
नई सुबह
SAM/40

पहला हिस्सा

क़ौमी-तराना

अय वतन, अय वतन, अय वतन !

जानेमन,[1] जानेमन, जानेमन !!

(१)

ज़र्रे ज़र्रे में महफ़िल सजा देंगे हम तेरे दीवारो दर जगमगा देंगे हम,

तुझ को हस्ती[2] का गुलशन बना देंगे हम आस्मानों पै तुझ को बिठा देंगे हम,

बन के दुश्मन तेरा जो उठेगा यहाँ

उस को तहतुस्सरा[3] में गिरा देंगे हम,

और तहतुस्सरा को फ़ना[4] के समन्दर में अर्थी बना कर बहा देंगे हम,

अय वतन ! अय वतन !!

सुन लें ये इनसो[5] जानो[6] ज़मीनो ज़मन[7] ।

अय वतन, अय वतन, अय वतन !

जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

---

१. मेरी आत्मा २. जीवन ३. पाताल ४. मौत ५. (इन्स) आदमी ६. (जान) जिन परी ७. वक़्त ।

(२)

सोने वालों को इक दिन जगा देंगे हम रस्मो-राहे ग़ुलामी मिटा देंगे हम,
तेरे बैरी के टुकड़े उड़ा देंगे हम आस्मानो ज़मीं को हिला देंगे हम,
कौन कहता है कमज़ोर निर्बल है तू
हर तरफ़ ख़ूँ के दरिया बहा देंगे हम,
जिस तरफ़ मे पुकारेगा हिन्दोस्ताँ, उस तरफ़ ही वफ़ा की सदा देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
सर से बाँधे हुए है तिरंगा कफ़न,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

(३)

तेरी हस्ती हिमाला की चोटी बनी माहो-ख़ुरशीद[१] की उस पै बिन्दी लगी,
रोशनी शर्क़[२] से ग़र्ब[३] तक हो गई सिज़दे[४] में झुक गई अज़मते ज़िन्दगी[५],
अज़मते ज़िन्दगी की क़सम है हमें,
तेरी इज्ज़त पै सर तक कटा देंगे हम,
वक़्त आने दे अय माँ तेरे नाम पर अपनी हस्ती ओ मस्ती मिटा देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
ख़ून से अपने भर देंगे गंगो-गमन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

---

१. चांद सूरज २. पूरब ३. पश्चिम ४. नमस्कार ५. जीवन की शान

(४)

मस्तो ख़ुशबू हवाओं से शीतल है तू माधुरी है, मनोहर है, कोमल है तू,
प्रेम-मदिरा की लबरेज़[१] छागल है तू सर पै दुनिया के रहमत[२] का बादल है तू,
आँख उठा के जो देखा किसी ने तुझे,
छावनी अपनी लाशों से छा देंगे हम,
तेरे पाकीज़ा-पैकर[३] को रूहों की बारीक चादर के नीचे छुपा देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
तुझ पै क़ुरबाँ ज़रो-माल और जानो तन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

(५)

तेरी नदियाँ रसीली मधुर नग़्माख़्वाँ[४] तेरे पर्वत तेरी अज़मतों के निशाँ,
तेरे जंगल भी हँसते हुए गुलसिताँ तेरे गुलशन भी रश्के-बहारे-जिनाँ,[५]
ज़िन्दाबाद अय ग़रीबों के हिन्दोस्ताँ,
तेरा सिक्का दिलों पर बिठा देंगे हम,
जो भी पूछेगा जन्नत का हम से पता राहे कश्मीर उस को बता देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
तू चमन-दर-चमन[६] है अदन-दर-अदन[७],
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

---

१. भरा हुआ २. महरबानी ३. पवित्र शरीर ४. गीत गाने वाली ५. बैकुण्ठ की शोभा को शर्माने वाला ६. बागों से भरा हुआ ७. जन्नत में जन्नत

(६)

गुलशने ऐशो आरामो राहत है तू बेकसी में कनारे-मोहब्बत[१] है तू,
बेबसों और गुलामों की दौलत है तू ज़िन्दगी के जहन्नम में जन्नत है तू,
सींचकर खूने दिल से तेरी क्यारियाँ
और भी तुझको जन्नत बना देंगे हम,
हों वो गुलचीं कि सय्याद दोनों के सर, तेरे क़दमों पै इक दिन झुका देंगे हम
अय वतन ! अय वतन !!
हम तेरे फूल हैं, तू हमारा चमन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

(७)

जिसका पानी है अमृत वो मखज़न[२] है तू जिसके दाने हैं बिजली वो ख़िरमन[३] है तू,
जिसके कंकर हैं हीरे वो मादन[४] है तू जिससे जन्नत है दुनिया वो गुलशन है तू,
देवियों देवताओं का मसकन[५] है तू
तुझको सिज़दों से काबा बना देंगे हम,
सिर्फ़ उल्फ़त नहीं सारे संसार में तेरी अज़मत का डंका बजा देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
यह फबन, यह वक़ार[६] और यह बाँकपन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

---

१. प्रेम की गोद २. जख़ीरा ३. खलिहान ४. खान ५. घर ६. शान ।

(८)

यह सितारे यह निखरा हुआ आस्माँ आस्माँ से हिमाला की सरगोशियाँ,[१]
यह तेरी अज़्मतों का अटल राज़दाँ[२] मुस्तक़िल,[३] मअ़तबर, मोहतशम[४], जाविदाँ[५]
इसकी चोटी से ख़ूँख़्वार दुनियाँ को फिर
हम, पयामे[६] हयातो[७] वफ़ा[८] देंगे, हम,
फिर मोहब्बत का नग़मा सुना देंगे हम फिर ज़माने को जीना सिखा देंगे हम,
अय वतन ! अय वतन !!
ज़िन्दगी फिर भी लेगी हमारी शरन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

१. कानाबाती २. भेद जानने वाला ३. अटल ४. शानदार ५. अमर ६. (पयाम) संदेसा ७. (हयात) जीवन ८. प्रेम, निबाह।

जमना

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

जिसके पाये-नाज़[1] मसजूदे[2] फ़क़ीरो-शाह थे,
जिसके साहिल[3] तीरंदाज़ों की जोलांगाह[4] थे,
चांदनी में जिसकी ठण्डी रेत पर सोते थे हम,
नीलगूं[5] धारे में जिसके ग़ोताज़न[6] होते थे हम,
जिसने पांडो के दिले-वीरां[7] को बख़्शी ज़िन्दगी,
जिसकी बेकल मौज[8] भी तस्कीन का इक जाम थी,
साहिलों पर जिसके सहरायें-लक़ोदक़[9] था कभी,
जो दरिंदों[10] और हैवानों का था मलजा[11] कभी,
ज़ौक़[12] ने उल्फ़त के जिसको रश्के-गुलशन कर दिया,
गुलबदामन[13] कर दिया, जन्नत-ब-दामन[14] कर दिया,
जिसको पाण्डो ने सँवारा क्या वो दोशीज़ा[15] है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

---

१. प्यारे चरण २. (मसजूद) पूज्य ३. किनारा ४. घोड़ा दौड़ाने की जगह ५. नीला ६. डुबकियां लगाना ७. उजड़ा दिल ८. लहर ९. वीरान जंगल १०. जंगली जानवर ११. शान्ति मिलने की जगह १२. चसका १३. आंचल में फूल लिए हुए १४. आंचल में स्वर्ग लिए हुए। १५. कुंवारी

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?
जिसके आगे सर्द था क़ुलज़ुम[1] वही दरिया है तू,
जिसके पाकीज़ा[2] किनारे मन्दिरों के शहर थे,
जिसके क़तरे देखने वालों को रश्के-बहर[3] थे,
जिसकी गोदी में हज़ारों क़िले थे लाखों चमन,
जिसकी मौजों में बहा करती थी दुनिया और धन,
जो कभी सूरत-नुमाये[4] कौसर[5] ओ तस्नीम थी,
जिसके साहिल पर घने कुंजों की इक फ़िरदौस[6] थी,
जिसके साहिल से बहादुर ज़िन्दगी पाते रहे,
अर्जुनो भीमो युधिष्ठर गुर्ज़ चमकाते रहे,
आस्मां जन्नत के मोती जिस पे बरसाता रहा,
आर्यअज़मत[7] का झंडा जिस पे लहराता रहा,
जिसको जौहर[8] ने तराशा था वही हीरा है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?
नौ-उरूसे-गुलसिताँ[9] दोशीज़ये-सहरा[10] है तू,
जिसके सीने पर कमल के फूल खिलते थे कभी,
सारी दुनिया के ख़ज़ाने जिसमें मिलते थे कभी,

---

१. रूम सागर २. पवित्र ३. सागर को लजाने वाले ४. सूरत दिखाने वाली ५. स्वर्ग की नहर। जो कभी···तस्नीम थी—जो कभी स्वर्ग की नहरों के दर्शन कराने वाली थी। ६. जन्नत ७. आर्यों की बड़ाई ८. कान्ति, हर चीज़ की रूह ९. बाग़ की नई दुल्हन १०. जंगल की कुवांरी

जिसकी चोटी मोतियों की कान[1] थी हीरों की जान,
भीक जिससे माँगते थे नूर की हफ़्त[2] आस्मान,
जिसकी छाती गोशए-अग़ोशे-मादर[3] थी कभी,
जिसकी गोदी अम्न[4] और राहत का मन्दर थी कभी,
जो कभी मीठे सुरों में गा के बहलाती भी थी,
और कभी पेड़ों के साये में सुला जाती भी थी,
फ़र्ज़ को अपने अगर हम भूल जाते थे कभी,
बेख़ुदी[5] में ऐश की महफ़िल जमाते थे कभी,
तुन्दख़ू[6] मौजों के नग़्मों[7] से जगा देती थी तू,
उठके अपने पाँवों के घुंघरू बजा देती थी तू,
महफ़िले हिन्दोस्ताँ की मस्त रक़्क़ासा[8] है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?
कृश्न की बंसी का इक बहता हुआ नग़्मा है तू,
देवकी हर सुबह जिसके घाट पर आती रही,
बत्न[9] में गोकल के पैग़म्बर को नहलाती रही,
नग़्मये-गौतम किनारे पर तेरे गूँजा किया,
बंसरी का मस्त तेरी गोद से पैदा हुआ,
तेरे साहिल पर कभी आया परेशां वासदेव,
कंस का मारा हुआ मक़हूरो[10] हैरां वासदेव

---

१. खान २. सात ३. माँ की गोद का कोना ४. शान्ति ५. मस्ती ६. तेज़ मिज़ाज, बिफरी हुई ७. गीतों ८. नाचनेवाली ९. कोख १०. (मक़हूर) मुसीबत का मारा

कंस के ज़ुल्मो सितम की सख़्त हैबत[1] दिल पे थी,
गोरधन पर इक नज़र थी और इक साहिल पे थी,
याद है अब तक तेरा तूफ़ां उठाना, याद है,
गोरधन को देख कर मौजों पर आना याद है,
किस क़दर जादू भरा था शौक़े-पाबोसी[2] तेरा,
तेरी बेताबी पै आख़िर कृश्न को रहम आ गया,
कृश्न ने अपना क़दम मौजे-रवाँ[3] पर रख दिया,
ताज[4] उल्फ़त[5] का वफ़ा के आस्तां[6] पर रख दिया,
बोसे देकर कृश्न के क़दमों को तू बहने लगी,
माइले–मक़सूदो[7] महवे–जुस्तजू[8] बहने लगी,
नुज़हते-आग़ोश[9] थी, बाज़ीचा[10] थी, गहवारा[11] थी,
आस्माने हिन्द का बहता हुआ सय्यारा[12] थी,
क्या तुझे वह कृश्न का गेंदें उड़ाना याद है,
साहिलों को अपने बाज़ीचा बनाना याद है,
गेंद का मौजों पे गिरना कूदना वह कृश्न का,
अज़दहे का साँवरे-पैकर पे कुण्डल मारना,
कृश्न का उस वक़्त भी बंसी बजाना याद है,
नाचना और तेरी मौजों को नचाना याद है,
नाग के फन्दे से बच कर बाहर आना याद है,

---

१. डर २. पाँव चूमने का अरमान ३. बहती हुई लहर ४. मुकट ५. प्रेम ६. देहलीज़ ७. (माइले मक़सूद) लक्ष की तरफ़ ८. खोज में डूबी हुई ९. गोद को महका देने वाली १०. खेलने का स्थान ११. पालना १२. तारा

मत्र मे पहला दर्से-आज़ादी[1] सुनाना याद है,
गोपियों का वो सरे-साहिल[2] नहाना याद है,
कृश्न का रंगी लिबासों को चुराना याद है,
गोपियों का जिस्मे-उरियां[3] को छुपाना याद है,
कृश्न का बंसी बजा कर मुस्कराना याद है,
हर सहर जिसकी कमल थी और हर शब चांदनी,
अधखिली कलियों की ख़ुशबू से मुरक्कब[4] चांदनी,
जो मधुर मुरली की लय पर उम्र भर बहती रही,
कृश्न से अफ़सानए–शामो–सहर[5] कहती रही,
उम्र भर जो ज़िन्दगी की पन्द[6] फ़रमाती रही,
मौजे-गुल[7] जिसकी रवानी[8] की क़सम खाती रही,
शाम के हलके धुंधलके में ब-अन्दाज़े-हिजाब[9],
छेड़ती थी कुंज में राधा मुहब्बत का रबाब[10],
हुस्न का गहवारा थी दारुलअमाने[11] इश्क़ थी,
जिसकी हर मौजे रवां आरामजाने-इश्क़[12] थी,

कृश्न जिसमें तैरते थे क्या वही दरिया है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?
अज़मते-माज़ी[13] का धुंधला-सा इक आईना है तू,

---

१. आज़ादी का सबक़ २. किनारे पर ३. नंगा बदन ४. समोई हुई, तैयार की हुई ५. सुबह शाम की कहानी। ६. नसीहत ७. फूलों की लहर ८. बहाव ९. पर्दे के अन्दाज़ में १०. बाजा ११. (दारुल अमान) पनाह का दरवाज़ा, अमन की जगह १२. प्रेम का आराम १३. बीते हुए ज़माने की शान

जिसका साहिल था शिकस्तो-फ़तह[1] की जोलानगाह,
जिसका साहिल देशभक्तों की थी इक क़ुरबानगाह,[2]
जिसकी रेती थी शहीदों के लिए नूरी-कफ़न,[3]
ख़ून के क़तरों में जो बनती रही रश्के चमन,
थी चिता हर मौज जिसकी जलने वालों के लिये,
और इक क़ब्रे-रवाँ[4] थी मरने वालों के लिये,
अंजुमे-यूनानियाँ[5] चमका तेरी आग़ोश में,
बाख़तर का कारवाँ[6] उतरा तेरी आग़ोश में,
तेरी गर्दन पर कभी अफ़ग़ान की शमशीर थी,
और कभी मुग़लों के नैयर-बोस[7] नेज़ों की अनी,
ख़ुद तुझे अक्सर तेरे बेटों ने भी ज़ख़्मी किया,
आर्यों ने अपने ख़ूँ से भी तुझे भर भर दिया,
जिसके साहिल अज़मते तैमूर की हैं यादगार,
जिसके साहिल हश्मते-बाबर[8] के हैं आईनादार,[9]
दौलते तैमूर की जाहो-जलालत[10] दफ़न है,
तेरे साहिल पर मुसलमानों की अज़मत दफ़न है,
मर्सियाख़्वाने जलालो-हश्मते रफ़्ता है[11] तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू?

---

१. हार जीत २. बलिदान होने का स्थान ३. पवित्र चमकीला कफ़न ४. बहती हुई क़ब्र ५. यूनानियों का सितारा ६. बाख़तर का कारवां—यूनान के एक सूबे बेक्ट्रिया के रहनेवाले ७. सितारों को चूमने वाले ८. बाबर की शानशौकत ९. दिखाने वाली १०. शान-शौकत ११. मर्सिया…है—बीती हुई शानशौकत का मर्सिया पढ़ने वाली

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू,
सोहबते-माज़ी[१] का इक पुरदर्द[२] अफ़साना है तू,
शानागिरी[३] शहजहाँ को तेरे गेसू की मिली,
मर के भी की जज़बए-मुमताज़[४] ने मश्शातगी,[५]
एक कोहेनूर दामन पर तेरे टाँका गया,
जो तेरी आबी दुलाई के लिए तारा बना,
ताज से रातों की ख़ामोशी में क्या कहती है तू,
आके उसकी गोद में आहिस्ता क्यों बहती है तू,
तेरे साहिल पर कहाँ पहली सी वो आबादियां,
अब न वो क़िले न वो झंडे न परचम[६] और निशां,
अब कहाँ वो अज़मतें वो दबदबे और वह जलाल
शाम लाती है कहाँ तेरे लिए तारों की शाल,
रात को अंजुम[७] तेरी ज़ुल्फ़ों से अब मिलते नहीं,
सुबहदम[८] मौजों पै तेरी अब कमल खिलते नहीं,
अब कहाँ चेहरे से तेरे नूरे-इशरत[९] का ज़हूर,[१०]
अब कहाँ आखों में तेरी रंग-दुनियाए-सरूर,[११]
तेरे पैकर[१२] पर लिबासे-ज़िन्दगी[१३] है तार तार,
तेरे साहिल पर न गुलशन हैं, न गुलशन की बहार,
संख के नग़मे हैं मन्दिर में न मस्जिद में अज़ां,

---

१. बीते हुए जमाने का जलसा २. दर्द से भरा हुआ ३. कंघी करना ४. मुमताज की भावना ५. सिंगार ६. झंडे ७. तारे ८. सुबह सवेरे ९. ख़ुशी की चमक १०. प्रगट होना ११. नशे की दुनिया का रंग १२. शरीर १३. जीवन की पोशाक

और न साहिल पर तेरे वो देवियाँ वो गोपियाँ,
आह वो तेरे ज़माने इक फ़साना हो गये,
नाचते थे मोर जिन कुंजों में वो क्या हो गये,
यादगारे हशमते तारीख़े देरीना है तू[1],
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू?

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू,
जंगलों में हिन्द के इक तिश्ना-लब[2] बुढ़िया है तू,
ग़ासिबों[3] के समज़दा[4] तीरों से जो ज़ख्मी हुई,
जिसकी छाती नेज़ए-अग़यार[5] से छलनी हुई,
जिसका बरबत[6] इम्तदादे-वक़्त[7] ने टुकड़े किया,
जिसकी मौजें पढ़ रही हैं ज़िन्दगी का मर्सिया,
जिसकी हर मौजे-रवां है आज इक साज़े-ख़मोश[8]
जिसकी लहरों में नहीं पहला सा वो जोशो-ख़रोश,
जोशज़न और मौजज़न[9] जिसके किनारे कट गये,
काटते थे जो समन्दर को वो धारे कट गये,
जिसकी आँखें आंसुओं से पुर हैं और दिल बेक़रार,
जिसका दामन टुकड़े टुकड़े और गरेबाँ[10] तार तार,
और उस पर ज़ुल्म ये भी है कि बेपरदा है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू?

---

१. इतिहास की बड़ाइयों की यादगार २. प्यासी ३. लुटेरे ४. ज़हरीले ५. विदेशियों के बर्छे ६. एक बाजा ७. ज़माने की गर्दिश ८. चुप बाजा ९. जोश और मौजें मारने वाले १०. गला

सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू,
ख़ौफ़े-मुस्तक़बिल[१] है तू अन्देशए-फ़र्दा[२] है तू,
काश इक दिन ये तेरे टूटे किनारे फट पड़ें,
काश इक दिन ये तेरे ख़ामोश धारे फट पड़ें,
तेरी मौजें ज़ालिमों के आस्तां[३] तक हों बुलन्द,
तेरी लहरें ग़ासिबों के उस मकाँ तक हों बुलन्द,
जिस मकाँ में तेरी बरबादी के मन्सूबे हुए,
जिसके खम्भे ख़ूने-इन्सानी[४] में हैं डूबे हुए,
ज़ुल्म के धारे से टकराये तेरी मौजे रवां,
बहरो-बर[५] में गूँज उठ्ठे इक सदाए-अलअमां,[६]
काश इक दिन इस तरह ग़ैज़ो-ग़ज़ब[७] में आये तू,
जानिबे-मग़रिब[८] ग़ुलामी को बहा ले जाये तू,
फिर वही आज़ादियाँ हों फिर वही मय-ख़्वारियाँ,
फिर वही दिल शादियाँ हों, फिर वही सरशारियाँ[९],
ख़ुद ही साक़ी ख़ुद ही 'साग़र' ख़ुद ही मयख़ाना है तू,
या ज़वालो-इर्तिक़ा[१०] का एक पैमाना है तू,
सच बता अय मेरी जमना क्या वही जमना है तू?

---

१. आने वाले ज़माने का डर २. आने वाली कल का अन्देशा ३. दहलीज़ ४. आदमी का ख़ून ५. समुद्र और ख़ुश्की ६. शान्ति के लिये पुकार ७. क्रोध और सख़्ती ८. पश्चिम यानी योरप की तरफ़ ९. ख़ुशियां १० (ज़वाल) गिरी हुई हालत, इर्तिका-तरक़्क़ी।

आफ़ताब

(१)

इश्क़[१] को दिल से ताल्लुक़ दिल को सोज़े-ग़म[२] से रब्त[३],
फ़ितरते-मय-नोश[४] को आईने[५]-कैफ़ो-कम[६] से रब्त,
है अज़ल[७] से नेस्ती[८] को हस्ती-ये-आदम[९] से रब्त,
और शुआये[१०] आफ़तावे सुवह को शबनम[११] से रब्त,
आह क्या शय[१२] है ये फ़ितरत[१३] के "ताल्लुक" का निज़ाम[१४]।
सब इसी का अक्स हैं, क्या रोज़ो-शब[१५] क्या सुबहो शाम ॥

(२)

मालिनों को गुलसिताँ में फूल चुनते देख कर,
कोयलों को बाग़ में सर अपना धुनते देख कर,
और पपीहों को ग़मे-सोज़ाँ[१६] से भुनते देख कर,
कोहसारों[१७] को हदीसे-इश्क़[१८] सुनते देख कर,

---

१. प्रेम २. दुःख की चिनगारी ३. लगाव ४. फितरत-नेचर, मयनोश-शराबी ५. नियम ६. कैसा और कितना ७. वह ज़माना जिसकी इब्तिदा न हो, हमेशगी ८. मरण ९. हस्ती-जिन्दगी, आदम-आदमी १०. (शुआ) किरण ११. ओस १२. चीज़ १३. प्रकृति १४. सिस्टम १५. दिनरात १६. जलता हुआ दुःख १७. पहाड़ों १८. प्रेम के श्लोक

सुबहदम सीना फ़लक का दर्द से शक़[१] हो गया।
फ़र्ते-हैरत[२] से महेअनवर[३] का मुंह फ़क़ हो गया॥

(३)

बर्बते-नूरी[४] पै भैरों रागनी गाता हुआ,
साज़ से किरनों के रोशन राग बरसाता हुआ,
अपनी मूसीक़ी[५] से दुनिया भर को गरमाता हुआ,
ज़िन्दगी की मौज हर इक शय में दौड़ाता हुआ,
पर्दए-मशरिक़[६] से साक़ी-ये-सहर[७] पैदा हुआ।
बाद-ये-मशरिक़ बदस्तो नग़्मागर पैदा हुआ[८]॥

(४)

दैर[९] में नाकूस[१०], मन्दिर में गजर बजने लगा,
मैकदे[११] में हल्क़-ये-ज़ंजीरे[१२] दर बजने लगा,
जुम्बिशे-मिज़राब[१३] से साज़े-सहर[१४] बजने लगा,
ख़ुद ब ख़ुद साज़े ख़मोशे बहरोबर[१५] बजने लगा,
रूहे-हस्ती[१६] जाग कर महवे-तरन्नुम[१७] हो गई।
ज़िन्दगी बेदार होकर रक़्स[१८] में गुम हो गई॥

---

१. फटा हुआ २. अचम्भे की ज्यादती ३. पूर्ण चन्द्र ४. जगमगाता हुआ सितार ५. सांगीत ६. पूर्व का पर्दा ७. सुबह का साक़ी ८. बाद······हुआ—गाता हुआ और हाथ में पूर्व की शराब लिए हुए। कवि का इशारा अपनी किताब की तरफ़ भी है ९. मन्दिर १०. संख ११. मधुशाला १२. दरवाजे की जंजीर का घेरा १३. मिज़राब की चोट १४ सुबह का बाजा १५. जलथल का ख़ामोश बाजा १६. जीवन की आत्मा १७. सांगीत में डूब जाना १८. नाच।

(५)

लाल[१]ओ सरवो[२] समन[३] नख्लो-शजर[४] रोशन हुए,
सब्ज़ये-काहीदा[५] पर लालो गोहर रोशन हुए,
सहने-काबा मन्दिरों के बामो-दर रोशन हुए,
कोहो-सहरा[६] दैरो काबा बहरोबर रोशन हुए,
आस्मां रोशन हुआ और खाकदां[७] रोशन हुआ।
परतवे-अनवार[८] से सारा जहां रोशन हुआ॥

(६)

अय नक़ीबे सुबह[९] अय सर-चश्मये अम्वाजे-नूर[१०],
अय कलीदे[११] खुम-सिताने[१२] सुबह साक़ीये-सुरूर,[१३]
हर शुआये-गर्म[१४] तेरी लमअये[१५] सदबर्क़े-तूर[१६],
तेरे दम से हर रगे हस्ती[१७] में इक मौजे—शऊर[१८]।
ज़र्रा ज़र्रा ज़िन्दगी के नूर से ताबिन्दा[१९] है।
ज़िन्दगी ताबिन्दा है ताबिन्दगी रख्शिन्दा[२०] है।

(७)

गौहरीं-शबनम[२१] के क़तरे मोतियों का ये निखार,
ये उरूसे-सुबह[२२] के सीने पै हीरों की बहार,

---

१. लाला, अफ़ीम का फूल २. सरव—एक पेड़ ३. चमेली ४. पौधे और पेड़ ५. घटा हुआ, कटी हुई घास ६ पहाड़ और जंगल ७. दुनिया ८. जगमगाती हुई ज्योति का अक्स ९. सुबह का नक़ीब, चारण १०. नूर की लहरों का स्रोत ११. (कलीद) कुंजी १२. मधुशाला १३. आनन्द का साक़ी १४. गरम किरण १५. (लमआ) ज्योति १६. तूर की सैकड़ों बिजलियाँ १७. जीवन की नस १८. जानने की लहर १९. रोशन २०. चमकीला २१. मोतियों जैसी ओस २२. सुबह की दुल्हिन।

ये समन्दर ये बयाबाँ ये चमन ये कोहसार,
ये मुरक़्क़स[1] नद्दियां गाते हुए ये आबशार[2],
सब को तूने रोशनी दी जगमगाने के लिये।
क़ासिमे-अनवार[3] है तू इक ज़माने के लिए॥

(८)

जादये-अफ़लाक[4] के अय मरकबे[5]-नूरीं-रकाब[6],
अय ज़मीं की नौजवानी आस्मानों के शबाब[7],
आलमे-मौजूद[8] में तेरा नहीं कोई जवाब,
खाक हैं तेरे क़दम की कहकशानों[9] माहताब[10],
क़ल्बे-फ़ितरत[11] का जहीम-अफ़रोज़[12] अंगारा है तू।
फूट कर मरकज़ से मैदानों में आवारा है तू॥

(९)

नाज़िरे-आलम[13] है तू, एक आतशीं-मंज़र[14] है तू,
जौहरे[15] आईना है, आइनये-जौहर[16] है तू,
फ़ितरतन[17] नज़्ज़ारये-खामोश[18] का खूगर[19] है तू,
दहर[20] की तारीखे पारीना[21] का इक दफ़्तर है तू,

---

१. नाचती हुई २. झरना ३. रोशनी बाँटने वाला ४. आस्मानों का रास्ता ५. (मरकब) सवारी ६. रोशन रकाब-रोशन रकाबों वाला घोड़ा ७. जवानी ८. यह दुनिया ९. (कहकशाँ) आकाश गंगा १०. चन्द्र ११. प्रकृति का दिल १२. जहीम-नरक, नरक को रोशन करने वाला, चमकने वाला। १३. दुनिया को देखने वाला १४. आग से भरा हुआ सीन १५. (जौहर) कान्ति १६. जौहर का दर्पन, निरा जौहर १७. क़ुदरती १८. चुपचाप देखना १९. आदी २०. दुनिया २१. पुरानी।

तेरी किरनें राज़दारे[1] अज़मते-देरीना[2] हैं ।
तेरे जलवे यादगारे इशरते-दोशीना[3] हैं ।।

(१०)

हर किरन तेरी है दुनिया को पयामे-ज़रनिगार,[4]
ख़ुमसिताने अन्जुमो[5] कौकब[6] का जामे-ज़रनिगार,[7]
ख़ुद कलीमे-ज़रनिगारो[8] ख़ुद कलामे ज़रनिगार,
इक ख़तीबे-ज़रनिगार[9] और इक इमामे[10] ज़रनिगार,
अपना ख़ुतबा[11] जोश में जिस वक़्त फ़रमाता है तू ।
दहर को सैलाबे-ज़रीं[12] में डुबो जाता है तू ।।

(११)

सुब्ह के हल्के धुँधलके में परी-पैकर[13] है तू,
या उरूसे सुबह का इक ज़रफ़िशां[14] झूमर है तू,
या बिरहमन की जबीं[15] का क़श्क़ये-अनवर[16] है तू,
या फ़लक के हाथ में सोने का इक साग़र है तू,
या किसी शायिर के दिल का दाग़ है दहका हुआ ।
या बहिश्ते हुस्न का इक फूल है महका हुआ ।।

---

१. राज़दार, भेदी २. पिछली शान ३ बीता हुआ ऐश ४. सुनहरी संदेश
ुम) सितारे ६. तारा ७. सुनहरी शराब का प्याला ८. सुनहरी बातें करनेवाला
ब करने वाला, सुनहरी बोलने वाला १०. (इमाम) सरदार ११. एड्रेस
हरी तूफ़ान १३. परियों जैसे बदन वाला १४. सोना बरसाने वाला १५. माथा
कता तिलक ।

(१२)

रोशनी तेरी मताये-खानये-आशुफ्ता-हाल[१],
तेरी किरनों में किसानों के लिये तारों की शाल,
और मजदूरों को पिछली रात से तेरा ख़याल,
सब्त[२] है मुनइम[३] के दिल पर भी तेरी मुहरे-जलाल[४],
तू क़रीबो-दूर के अहसास[५] से आज़ाद है।
ख्वाजओ[६] मजदूर के अहसास से आज़ाद है।

(१३)

गुंचगीये-या-समन[७], गुल का तबस्सुम[८] रक्स में,
तेरी ख़ातिर है जहाँने-रंगो-बू[९] गुम रक्स में,
है समन्दर और समन्दर का तलातुम[१०] रक्स में,
ख़ाकदाँ का ज़िक्र क्या है बज़्मे-अंजुम[११] रक्स में,
इक जहाँ तेरे लिये शामो सहर आवारा है।
तू है क़ायम अपने मरकज़ पर मगर सैयारा[१२] है॥

(१४)

सूये-मग़रिब[१३] जा रहा है रंग बरसाता हुआ,
जैसे इक मज़दूर दिन भर का थका हारा हुआ,

---

१. ग़रीब के घर की पूँजी, मताअ-पूँजी ख़ाना-घर, आशुफ़्ता हाल-ग़रीब २. लिखना ३. साहूकार ४. बड़ाई की मोहर ५. ख़्याल से मतलब ६. (ख़्वाजा) सरदार ७. चमेली का कलीपन ८. मुस्कराहट ९. बहार की दुनिया १०. लहरों का बराबर जोश मारना ११. तारों की सभा १२. गर्दिश में रहनेवाला तारा १३. पश्चिम की तरफ़।

सुर्ख़ आग़ोशे-शफ़क़[१] में शोलासाँ[२] दहका हुआ,
जिस तरह कोई सिपाही ख़ून में डूबा हुआ,
नौनिहालाने-चमन[३] के ख़ून से रंगी है तू।
क्या शहीदाने वतन के ख़ून से रंगी है तू?

(१५)

ग़ुंचओ-गुल[४] हों रिहा और आशियाँ[५] आज़ाद हो,
बुलबुलें आज़ाद हों और गुलसितां आज़ाद हो,
एशिया आज़ाद हो हिन्दोस्तां आज़ाद हो,
पंजये ज़ुल्मों सितम से कुल जहाँ आज़ाद हो,
हम भी हों आज़ाद तेरी ही शुआओं[६] की तरह।
और दुनिया में रहें ज़िन्दा शुजाओं[७] की तरह॥

---

१. शाम की लाली की गोद २. चिनगारी की तरह ३. बाग़ के नये पौधे, नौजवान ४. फूल और कली ५. घोंसला, घर ६. किरणें ७. बहादुरों।

परचम[1]

उड़ रहा है यह फ़ज़ा[2] में कौन लहराता हुआ,
नौबनों[3] नग़्मे उरूजे-क़ौम[4] के गाता हुआ।
अपने क़द्दे-बरतरो-बाला[5] पै इतराता हुआ,
और झोंके नौजवानों की तरह खाता हुआ।
अज़मते-अक़वाम[6] की अय दास्ताने-हुर्रियत[7],
अय बयाने-हुर्रियत[8], अय तर्जुमाने-हुर्रियत[9]।
रायते-रहमत[10] है तू मयख़ानये अक़वाम में,
सुबह में तेरी तजल्ली[11] नूर तेरा शाम में।
औजे-हस्ती[12] तेरे दम से, तुझ से मयराजे-हयात,[13]
तुझ में आसूदा[14] है हक्क़ों[15] हुर्रियत की कायनात[16]।
हिन्दियों के जज़बये आज़ाद के आईनादार,
उनकी ग़ैरतमन्दियों की ग़ैरफ़ानी[17] यादगार।

---

१. झण्डा २. वायुमण्डल ३. नये नये ४. क़ौम की बड़ाई ५ ऊँचा और शानदार क़द ६. क़ौमों की बडाई ७. आजादी की कहानी ८. आजादी का बयान ९. आजादी को बताने वाला १०. मेहरबानी का झण्डा ११. ज्योति १२. जीवन की शान १३. जिन्दगी की बुलन्दी १४. आराम से १५. (हक़) सच्चाई १६. दुनिया १७. अमर।

तेरे रंगों में उमूले जिन्दगी का राज है,
जिन्दगी का राज है ताबिन्दगी का राज है।
तेरी जुम्बिश से है लर्जिश[1] गर्दिशे अय्याम में,
इन्क़िलाबे हिन्द पोशीदा है तेरे नाम में।

रात दिन है फ़ुर्सते तहरीके-बेदारी[2] तुझे,
वजह बेताबी है क़ौमों की निगूँसारी[3] तुझे।

(२)

अय मेरे रूहे वतन, शाने वतन, जाने वतन,
तेरी हर इक मौज से रासिख[4] है ईमाने वतन।
तू कि इक हुर्रियते-महसूस[5] है अक़वाम की,
जिस को सिजदे कर रही है बेखुदी में जिन्दगी।
वह जो इक गुम्बद है जन्नत में तिलाई[6] रंग का,
जिस से इक निकला है चश्मा नक़रई[7] आहंग[8] का।
उसके औजे नूर-परवरदा[9] पै लहराता है तू।
झूमकर उसके कलस को चूम चूम आता है तू।
रफ़अते-तूबा[10] अज़ल[11] ही से वदीयत[12] है तुझे,
बेतकल्लुफ़ अर्श-बोसी[13] की इजाज़त है तुझे।

---

१. थरथराहट २. जागृति की तहरीक ३. दबना, झुकना ४. क़ायम ५. नज़र आने वाली आज़ादी. ६. सुनहरी ७. रुपहला ८. आवाज़ ९. रोशनी की पाली हुई ऊँचाई १०. तूबा की ऊँचाई, तूबा—एक बहिश्त का दरख्त ११. अनादि १२ धरोहर १३. अर्श को चूमना।

अर्श[१] के पर्दों को भी अक्सर उठा आता है तू,
लामकाँ[२] की सरहदे आखिर से टकराता है तू।
अर्शो कुर्सी तेरे ही अफ़साने का इक बाब है,
बोसे देने के लिये क़ुत्सी[३] बहुत बेताब हैं।
तेरे क़दमों में है जंजीरे ग़ुलामी पाश-पाश,[४]
ज़ुल्म के दिल में तेरे मंज़र से है गहरी ख़राश[५]।
इक अटल आवाज़ है तू इक मुकम्मल अहतजाज[६],
ज़ुल्म से तू ही तलब करता है नेकी का ख़िराज[७]।

तेरी बुनियादें वतन में अब हिला सकता है कौन,
तुझ को औजे-कामयाबी[८] से गिरा सकता है कौन ?

(३)

ख़न्दा-ज़न[९] है देर से अह्ले वतन के दिल में तू,
जल्वागर है आज शेख़ो बिरहमन के दिल में तू।
अय कि तू है ज़ामिने-आज़ादिये-हिन्दोस्ताँ,[१०]
अय कि तू है बायसे आबादिये हिन्दोस्ताँ।
अय निशाने ज़िन्दगी, अय गल्लाबाने[११] ज़िन्दगी,
अय हुदीख्वाने-वफ़ा,[१२] अय सारबाने-ज़िन्दगी[१३]।

---

१. छत ईश्वर का तख़्त २. जहाँ मकान न हो ३. फ़रिश्ते ४. टुकड़े टुकड़े ५. घाव ६. विरोध ७. लगान ८. कामयाबी की ऊँचाई ९. हँसना १०. हिन्दुस्तान की आज़ादी की ज़मानत करनेवाला ११. गल्ले की रखवाली करने वाला १२. प्रेम को बढ़ाने के गीत गाने वाला, हुदा—वह गीत जो ऊँट वाले ऊँटों को तेज़ चलाने के लिये गाते हैं १३. सारबान—जीवन की हिफ़ाज़त करनेवाला, ऊँटों को हाँकनेवाला।

तुझ में है ख़ूने शहीदाँ, रंग-अफ़रोज़े-हयात,[1]
तुझ में पोशीदा है इक साज़े-वफ़ा[2] सोज़े-हयात[3]।
तेरी ख़ातिर ख़ाक और ख़ूँ तक में अट जायेंगे हम,
तेरी इज़्ज़त के लिये मैदाँ में कट जायेंगे हम।
अपनी लाशों पर तुझे क़ायम करेंगे एक बार,
तेरे दामन को बना देंगे फ़ज़ाये-लालाज़ार[4]।
नग़्मये-ग़म[5] के अलावा नग़्मये शादी[6] भी हो,
यानी साये में तेरे एलाने-आज़ादी भी हो।
नग़्मये-क़ौमी[7] हो और मसरूर[8] अक़वामे-वतन,[9]
बादये-ताज़ा[10] से हो लबरेज़ हर जामे वतन।
सब्त हो जाये दिले आलम पै तेरी बरतरी[11]
ख़ौफ़ से लरज़े[12] में आ जाये शिकोहे-सरवरी[13]।
अयतराफ़े[14] सर बलन्दी[15] में सर अपने ख़म[16] करें
जी में आता है कि तुझ को सिज़्दये-पैहम[17] करें।

---

१. ज़िन्दगी के रंग को चमकाने वाला २. प्रेम का बाजा ३. ज़िन्दगी की चिनगारी ४. बाग़ की फज़ा ५. दुःख का गीत ६. ख़ुशी का गीत ७. क़ौमी गीत ८. ख़ुश ९. भारत के फिरके १०. नई शराब ११. बड़ाई १२. (लरज़ा) कांपना १३. सरवारी की शान १४. (अयतराफ़) मानना १५. ऊंचाई १६. झुकाना १७. लगातार पूजा करना।

वतनियत[1]

है जहाँ मस्कने-रंगीं[2] समनो[3] सुंबुल[4] का
है जहाँ मौल्दे-शादाब[5] शमीमो[6] गुल का
है जहाँ ख्वाबगहे-सब्ज़ा[7] हरीमे-नसरीं[8]
मजलिसे-नग्तरनो-सर्व[9] का क़सरे-रगीं[10]
रंगो-बू का वो सरा-पर्दये[11] रानाओ-जवाँ[12]
शाम है जिसकी घटा सुबह शगुफ़्ता[13] कलियाँ
जिसमें क़ुमरी की सदा सौते-हज़ार[14] आती है
रूह करती हुई तक़्सीमे-बहार[15] आती है
उसे आईने-तकल्लुम[16] में चमन कहते हैं।

---

१. वतनियत–राष्ट्रीयता २. रंगीन जन्मभूमि ३. (समन) चमेली का फूल ४. बालछड़, एक खुशबूदार घास ५. हरी भरी जन्मभूमि ६. (शमीम) खुशबूदार हवा ७. हरियाली की सोने की जगह ८. सेवती का रंगमहल ९. (मजलिसे-नस्तरन) सेवती की सभा, सर्व–एक दरख़्त १०. रंगमहल ११. पर्देदार जगह १२. सुन्दर और जवान १३. खिला हुआ १४. बुलबुल की आवाज़ १५. बहार बाँटती हुई १६. बोलने चालने का क़ायदा।

(२)

और होता है जहाँ आदमे-ज़ीशाँ[१] पैदा
मज़हरे-ज़ाते-ख़ुदा[२] आयये-यज़दाँ[३] पैदा
सूरतें ख़ाक मे जिस मुल्क की होती हैं अयाँ[४]
मर्गो-तख़लीक़[५] का मौक़ा जिसे मिलता है जहाँ
जो है बाज़ीचये-तिफ़ली[६] व गुज़रगाहे-शबाब[७]
है जहाँ महदो-लहद[८] मरकज़े-बेदारियो-ख़्वाब[९]
और अबो जद[१०] के जहाँ नक़्शे-क़दम[११] तावाँ[१२] हों
अपने असलाफ़[१३] के रायातो-अलम[१४] ताबाँ हों
उसे क़ानूने मुहब्बत में वतन कहते हैं।

(३)

बेनियाज़[१५] अपने चमन मे हों अगर सर्वो समन
और नंगे-वतनियत[१६] हों अगर अह्ले-वतन
आदमी को वतनियत का अगर पास न हो
उल्फ़ते-बाग़[१७] की फूलों में अगर बास न हो
फूल को फूल ना इन्सान को इन्साँ कहिये
इसे हैवाँ उसे मरदूदे-गुलिस्ताँ[१८] कहिये

---

१. शान रखने वाला २. ख़ुदा की ज़ात को दिखाने वाला ३. ख़ुदा का निशान ४. प्रगट ५. मरना और पैदा होना ६. बचपन के खेलने की जगह ७. जवानी के गुज़रने का रास्ता ८ झूला और क़ब्र ९. जागने और सोने की जगह १०. बाप दादा ११. पांवों के निशान (मतलब बुज़ुर्गों के चलन से है) १२. रोशन १३. पुरखे १४. झण्डे और निशान १५. लापरवाह १६. राष्ट्रीयता को लजानेवाले १७ बाग़ का प्रेम १८ बाग़ का ज़लील, फटकारा हुआ।

खिल्क़तन[१] उसका महल[२] सहने गुलिस्तां में नहीं
फ़ितरतन[३] उसकी जगह आलमे-इमकाँ[४] में नहीं
हम उसे खतरए तहज़ीबे-मुदन[५] कहते हैं ।

(४)

रंगो-बू से नहीं जब फ़ितरते-बुस्ताँ[६] खाली
वतनियत से हो फिर क्यों दिले इन्साँ खाली
वतनियत ही हक़ीक़त में है वो ज़ज़्बये-पाक[७]
जिससे इन्सान को होता है वफ़ा का इदराक[८]
वतनियत में सदाक़त[९] की भी है शाने-जमील[१०]
वतनियत है मेरी राय में ईमाने-जलील[११]
कर तो ले पहले मज़ाक़े-वतनियत[१२] पैदा
दिल में हो जायेगा खुद नूरे-हक़ीक़त[१३] पैदा
इसे खुरशीदे-मुहब्बत[१४] की किरन कहते हैं ।

---

१. जन्म से २. जगह ३. क़ुदरती ४. दुनिया ५. तहज़ीब के लिए खतरा ६. बाग़ का स्वभाव ७. पवित्र भावना ८. ज्ञान ९. सच्चाई १०. सुन्दर शान ११. ईमान–दिल से खुदा पर विश्वास रखना, जलील–शानदार १२. वतनियत की लगन १३. सच्चाई का नूर १४. प्रेम का सूरज ।

नया पुजारी

कोई है बहारे-चमन[1] का पुजारी
कोई है गुलो[2] या समन[3] का पुजारी,
बुते-मौलवी[4] को कोई पूजता है,
कोई क़श्क़ये-बिरहमन[5] का पुजारी,
ग़ुलामे-ग़ुलामाने-ज़मज़म[6] है कोई,
कोई मौजे-गंगो-जमन[7] का पुजारी,
मगर मेरा ज़ौक़े-परस्तिश[8] जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी

(२)

कोई है परस्तारे[9] गेसूय-हिन्दू,[10]
कोई है बुते-सीमतन[11] का पुजारी,

---

१. बाग़ की बहार २. (गुल) गुलाब ३. चमेली ४. मौलवी की मूर्ति ५. ब्राह्मण का तिलक ६. ज़मज़म के ग़ुलामों का ग़ुलाम। ज़मज़म—मक्के में काबे के पास पवित्र कुआ ७. गंगा जमना की लहरें ८. पूजन का शौक़ ९. (परस्तार) पुजारी १०. हिन्दू के केश ११. चाँदी जैसे तन की प्रेमिका

कोई सुर्ख़ टीके पै सर धुन रहा है,
कोई शोलये–अन्जुमन[1] का पुजारी,
कोई है मुरीदे कनीज़ाने–काबा[2],
कोई दुख़्तरे–बिरहमन[3] का पुजारी,
मगर मेरा ज़ौक़े परस्तिश जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी

(३)

ऋषिकेश में कोई बैठा हुआ है,
कोई हर की पैड़ी के गुन गा रहा है,
बनारस की गलियों में फिरता है कोई,
मज़ारों पै जाकर कोई नाचता है,
कलीसा[4] में है महवे-तसलीस[5] कोई,
कोई दैर में मूर्ती पूजता है,
मगर मेरा ज़ौक़े परस्तिश जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी

(४)

वतन वह वतन वह महकता शिवाला,
वह राहत[6] का मन्दिर मुहब्बत का काबा,[7]

---

१. अंजुमन की चिनगारी (टीके की उपमा है) २. काबे की दासियों का चेला (मतलब मुसलमान लड़कियों से) ३. ब्राह्मण की लड़की ४. गिरजा ५. त्रास की पूजा में खोया हुआ। तसलीस—ईसाइयों के धर्म से मुराद है ६. आराम ७. प्रेम मन्दिर

खतीबे-हिमाला[1] का ज़रकार-मिम्बर,[2]
वह जमना की गोदी वह गंगा का झूला,
वह मन्दिर है मेरा वतन जिसके अन्दर,
हज़ारों ख़ुदा हैं तो लाखों कलीसा,
मगर मेरा ज़ौक़े परस्तिश जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी

(५)

वहाबी[3] है कोई, कोई सोमनाती,[4]
मआबिद[5] किसी ने बनाये हैं ज़ाती,
हर इक से मुहब्बत, हर इक से अख़ूवत,[6]
मैं हिन्दी हूँ मजहब मेरा कायनाती,[7]
मुहब्बत से ऊँचा नहीं कोई मज़हब,
मुहब्बत से ऊँची नहीं कोई जाती,
मगर मेरा ज़ौक़े परस्तिश जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी

(६)

हर इक क़ैदे-फ़र्ज़ी[8] से आज़ाद हूँ मैं,
तरक़्क़ी-दहे[9] बज़मे-ईजाद[10] हूँ मैं,

---

१. लेक्चर देने वाला हिमालय २. सोने का काम किया हुआ सिंहासन, मतलब हिन्दुस्तान से है ३. मुसलमानों का वह फ़िर्क़ा जो मजहबी असूलों का कट्टर पाबन्द होता है। ४. मतलब उस हिन्दू से है जो कट्टर धर्मी हो ५. पूजा की जगह ६. भाईचारा करना ७. कुल संसार पर छाया हुआ ८. बेकार बन्धन ९. तरक़्क़ी देनेवाला १०. दुनिया से मतलब है।

अक़ीदे[१] मेरे सामने काँपते हैं,
उसूले-मुहब्बत[२] की बुनियाद हूँ मैं,
न जुन्नार[३] का ग़म न तसबीह का ग़म,
दिमाग़ी ग़ुलामी से आज़ाद हूँ मैं,
मगर मेरा ज़ौक़े परस्तिश जुदा है—
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतन का पुजारी,

---

१. विश्वास २. मुहब्बत का उसूल ३. जनेऊ

क़ौमी गीत

दावा है हर आन हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।
जंगल और गुल्ज़ार हमारे   दरिया और कुहसार हमारे,
कूचे और बाज़ार हमारे   फूल हमारे ख़ार हमारे,
हर घर हर मैदान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।
गो नहीं हम में फ़ौजी क़ुव्वत   फिर भी बहुत है दिलमें हिम्मत,
और हमारे साथ है क़ुदरत   अब कोई ताक़त कोई हुकूमत,
रोक तो दे तूफ़ान, हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।
हम से भारत की रौनक़ है   आज़ादी दिन रात सबक़ है,
अपनी धनक है अपनी शफ़क़[1] है   हर ज़र्रे पर अपना हक़ है,
खेत अपने दहक़ान[2] हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।

---

१. सांझ की लाली २. देहाती।

मन्दिर मस्जिद और मयख़ाना[१] बादा[२] साग़र[३] और पैमाना,
जंगल बस्ती और वीराना हर महफ़िल और हर काशाना[४],
हर दर हर एवान[५] हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।
गो है पामाल[६] अपनी हस्ती हर सू है पस्ती[७] ही पस्ती,
तन-आसानी[८] एश परस्ती दिन भर फ़ाक़ा शब[९] भर मस्ती,
है यह मगर ईमान[१०] हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।
हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो सिर्फ़ यहां एक क़ौम बसी हो,
बार[११] न पाये ख्वाह कोई हो चाहे वह ख़ुद अपनी ही ख़ुदी हो,
देख ज़रा अरमान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

---

१. मधुशाला २. सुरा ३. शराब का प्याला ४. घर ५. राजमहल ६. मिटी हुई ७. नीचाई, बर्बादी ८. काहिली ९. रात १०. विश्वास ११. दख़ल ।

आज़ादी

वह आज़ादी जो इन्सानों की अज़मत[1] को बढ़ाती है,
वह आज़ादी ग़ुलामी जिसके आगे थरथराती है,
वह आज़ादी जो इन्सानों का इक पैदायशी हक़ है,
वह आज़ादी जो इस्तिब्दाद[2] के क़िलओं को ढाती है,
वह आज़ादी जो ज़ामिन[3] है उरूजे-मुल्को-मिल्लत[4] की,
वह आज़ादी जो बामे कामयाबी पर चढ़ाती है,
वह आज़ादी जो हर ज़र्रे को ख़ुद बख़्शी है क़ुदरत[5] ने,
वह आज़ादी जो चिड़ियों को परी-पैकर[6] बनाती है,
वह आज़ादी कि जिसके नूर से हैं दो-जहां[7] रोशन,
वह आज़ादी जो हर ज़र्रे में इक मिशअ़ल[8] जलाती है,
वह आज़ादी पयम्बर जिसको लाये आस्मानों से,
वह आज़ादी जो हर इन्सां को पैग़म्बर बनाती है,

---

१. बड़ाई २. सख़्ती ३. ज़मानत देने वाली ४. क़ौम और वतन की बढ़ोतरी ५. प्रकृति ६. परियों जैसे बदन वाली ७. दो दुनियांयें, ज़मीन और आस्मान ८. मशाल।

वह आज़ादी हुकूमत जिसकी है फ़ितरत[१] की वसअत में,
सितारों की तरह जो बहरो-बर[२] पर जगमगाती है,

वह आज़ादी क़वीतर[३] जिसके बाज़ू हैं मुसीबत में,
वह आज़ादी जो वामाँदों[४] को शानों[५] पर उठाती है,

वह आज़ादी हिफ़ाज़त जिससे है नामूसे-क़ौमी[६] की,
वह आज़ादी जो जुल्मो-जौर[७] की बुनियाद ढाती है,

वह आज़ादी इलाही ख़स्ता-कामों[८] को भी मिल जाये,
वह आज़ादी इलाही हम ग़ुलामों को भी मिल जाये।

सरों पर हो हमारे सायये-दामाने-आज़ादी[९],
हमारी जान आज़ादी हो हम हों जाने-आज़ादी[१०],

शहादत[११] दे रहे है खुद हमारे खून के क़तरे,
कि हमसे है जहां में रौनक़े दामाने-आज़ादी[१२],

वह दिन आये, वह वक्त आये, वह लम्हे जल्दतर[१३] आयें,
कि सींचा जाये ताज़ा ख़ून से बुस्ताने-आज़ादी[१४],

इलाही मौसमे-गुल[१५] में कुछ ऐसा इन्क़िलाब आये,
यकायक बाग़ में हो एक दिन एलाने आज़ादी,

---

१. क़ुदरत २. समन्दर और खुश्क़ी ३. बहुत मज़बूत ४. गिरे हुये कमज़ोर ५. कन्धे ६. क़ौमी इज्ज़त (यहाँ सियासत से मतलब है) ७. कठोरता ८. कमज़ोर, मोहताज ९. आज़ादी के आंचल का साया १०. आज़ादी की आत्मा ११. गवाही १२. आज़ादी के आंचल की शोभा १३. तुरत १४. आज़ादी का बाग़ १५. बसंत ऋतु।

हर इक मौजे-जमन[१] बन जाय इक सैलाबे-हुर्रियत[२],
न अपने रोकने से भी रुके तूफ़ाने आज़ादी,
ज़मीं से आस्मां तक हुर्रियत का बोलबाला हो,
हमारे हाथ में हो नक़्शये–इमकाने-आज़ादी[३],
हर इक ज़र्रे को सिज़दा-गाहे-आज़ादी[४] बना दें हम,
जबीने[५] शौक़ हो और मंज़िले-इरफ़ाने-आज़ादी[६],
मसावातो-अख़्वत[७] हो मुहब्बत की हुकूमत हो,
हमारा परचमे-अज़मत[८] हो और मैदाने आज़ादी,

ग़रीब आबादियां ज़रखेज़ ख़ित्तों[९] से बदल जायें,
गुलामी की बलाय एशिया के सर से टल जायें।

उठ अय मशरिक़[१०] और अपने हक़्क़े-फ़ितरी[११] की हिफ़ाज़त कर,
जो आज़ादी तेरा मक़सूम[१२] है उसकी हिमायत[१३] कर,
फ़ज़ा पर ग़ौर कर हर चीज़ को हासिल है आज़ादी,
बलन्द[१४] अपनी नज़र, अपनी तबीअत, अपनी फ़ितरत[१५] कर,
हिला दे जौरो-इस्तिब्दाद[१६] की संगीन[१७] बुनियादें,
ग़ुलामी के बुतों को गुर्ज़े-हुर्रियत[१८] से ग़ारत कर,

---

१. जमना की लहर २. आज़ादी का तूफ़ान ३. आज़ादी मिल सकने का नक्शा ४. आज़ादी का मन्दिर ५. जबीन-माथा ६. आज़ादी को समझने की मंज़िल ७. बराबरी और भाई चारा ८. बड़ाई का झण्डा ९. ज़मीन का घिरा हुआ हिस्सा (मुल्क से मतलब है) १०. पूर्व, एशिया ११. क़ुदरती हक़ १२. भाग्य १३. तरफ़दारी १४. ऊंची १५. नेचर १६. कठोरता और सख़्ती १७. पत्थर जैसी १८. आज़ादी का गदा।

अगर बेदार-बख़्ती[१] की सनद लेनी है दुनिया में,
तसाहुल[२] को मिटा और इन्सदादे[३] ख़्वाबे-ग़फ़लत[४] कर,
गुलामी मुस्तक़िल[५] लानत है और तौहीने-इन्सां[६] है,
गुलामी से रिहा हो और आज़ादों में शिरकत[७] कर,
तेरी क़ुर्बानियां बेकार हर्गिज़ हो नहीं सकतीं,
मगर पैदा दिले-बेकैफ़[८] में कैफ़े-शहादत[९] कर,
जो मुस्तक़बिल[१०] में फ़िक्रे-अहतमामें सुर्ख़रूई[११] है,
तो अपने ख़ून से रंगीं बयाज़े-मुल्को-मिल्लत[१२] कर,
क़दम हैं चन्द बाक़ी हद्दे-मंज़िल[१३] तक पहुंचने में,
अभी कुछ और कोशिश कर अभी कुछ और हिम्मत कर,
क़रीब एवाने-आज़ादी[१४] है क्यों मायूस होता है,
तबस्सुम[१५] कामयाबी का मुझे महसूस[१६] होता है।

---

१. ख़ुश क़िस्मत २. सुस्ती ३. इन्सदाद-मिटाना ४. बेकारी और भूल की नींद ५. अटल ६. आदमी का अपमान ७. हिस्सा लेना ८. नीरस हृदय ९. क़ुर्बानी का वलवला १०. आने वाला ज़माना ११. इज्ज़त पाने के इन्तज़ाम की धुन १२. क़ौम और वतन की किताब १३. मंज़िल का छोर १४. आज़ादी का महल १५. मुस्कान १६. ज़ाहिर।

अह्द[1]

जब 'तिलाई-रंग'[2] सिक्कों को नचाया जायगा,
जब मेरी ग़ैरत[3] को दौलत से लड़ाया जायगा,
जब रगे-इफ़लास[4] को मेरी दबाया जायगा,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा—
और अपने पाँओं से अम्बारे-ज़र[5] ठुकराऊँगा।

(२)

जब मुझे पेड़ों से उरियाँ[6] करके बाँधा जायगा,
गर्म आहन[7] से मेरे होंठों को दाग़ा जायगा,
जब दहकती आग पर मुझको लिटाया जायगा,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा—
तेरे नग़्मे गाऊँगा और आग पर सो जाऊँगा।

---

१. प्रतिज्ञा २. सुनहरी रंग ३. ख़ुद्दारी, आत्माभिमान ४. मुफ़लिसी की रग ५. दौलत का ढेर ६. नंगा ७. लोहा।

(३)

अय वतन जब तुझ पे दुश्मन गोलियाँ बरसायेंगे,
सुर्ख़ बादल जब फ़सीलों[१] पर तेरी छा जायेंगे,
जब समन्दर आग के बुर्जों से टक्कर खायेंगे,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा—
तेग़ की झन्कार बनकर मिस्ले-तूफ़ाँ[२] आऊँगा।

(४)

गोलियाँ चारों तरफ़ से घेर लेंगी जब मुझे,
और तनहा छोड़ जायेगा मेरा मरकब[३] मुझे,
और संगीनों पै चाहेंगे उठाना सब मुझे,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा—
मरते-मरते इक तमाशाये-वफ़ा[४] बन जाऊँगा।

(५)

ख़ून से रंगीन हो जायेगी जब तेरी बहार,
सामने होंगी मेरे जब सर्द लाशें बेशुमार,
जब मेरे बाज़ू पै सर आकर गिरेंगे बार-बार,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा—
और दुश्मन की सफ़ों पर बिजलियाँ बरसाऊँगा।

---

१. चहार दीवारी २. तूफ़ान की तरह ३. घोड़ा ४. निबाह और प्रेम का तमाशा।

(६)

जब दरे-ज़िन्दाँ[१] खुलेगा बरमला[२] मेरे लिये,
इन्तहाई[३] जब सज़ा होगी रवा[४] मेरे लिये,
हर नफ़स[५] जब होगा पैग़ामे-क़ज़ा[६] मेरे लिए,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा—
बादाकश[७] हूँ ज़हर की तल्ख़ी[८] से क्यों घबराऊँगा।

(७)

हुक्म आख़िर क़त्लगह[९] में जब सुनाया जायगा,
जब मुझे फाँसी के तख़्ते पर चढ़ाया जायगा,
जब यकायक तख़्तये-ख़ूनी[१०] हटाया जायगा,
अय वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा—
अहद करता हूँ कि मैं तुझ पर फ़िदा होजाऊँगा।

---

१. जेलख़ाने का दरवाजा २. एक साथ ३. ज्यादा से ज्यादा ४. जायज ५. साँस ६. मौत का सन्देसा ७. शराबी ८. कडुआहट ९. क़त्ल करने की जगह १०. वह तख़्ता जिस पर आदमी को खड़ा करके फांसी दी जाती है।

राम

हिन्द के मरकज़ से निकली शाहराहे-ज़िन्दगी,[1]
सब से पहली है यही तफ़सीर-गाहे-ज़िन्दगी,[2]
हिन्दियों को फ़ैज़े-क़ुदरत[3] से हुआ इरफ़ाने-नफ़्स,[4]
जामे हिन्दी में छलक उट्ठी मये-ईक़ाने-नफ़्स,[5]

साहिले सरजू यहाँ, गंगा यहाँ जमना यहाँ,
कृष्ण और राधा यहाँ, रामा यहाँ सीता यहाँ,
राज़-हाये-ज़िन्दगी[6] सुलझाये जाते थे यहाँ,
अहले-इरफ़ाँ[7] हर क़दम पर पाये जाते थे यहाँ,

---

१. जीवन का बड़ा रास्ता २. ज़िन्दगी को बयान करने की जगह, यानी सब से पहले हिन्दुस्तान ने दुनिया को बताया कि ज़िन्दगी क्या है ३. क़ुदरत का फ़ैज़, ४. आत्मा का ज्ञान ५. आत्मा के विश्वास की शराब। वेदान्तियों ने आत्मा के कई रूप माने हैं। एक वह जो जीवन को दुनिया की लज्ज़तों में फँसा देता है। दूसरा वह जो सत्य की रोशनी में पाप और दूसरे बुरे भावों को बताता है। यह रूप ऋषियों की आत्मा का होता है। तीसरा शान्त रूप, जो भगवान के हुक्म पर चलाता है और बुरी बातों से बचाता है। यहां आत्मा के इसी रूप से मतलब है। ६. जीवन के भेद ७. ज्ञानी।

शमए-हिन्दी[1] बुझ के भी पैहम[2] दरख़्शाँ[3] है हनोज़,[4]
राम के नूरे-हिदायत[5] से फ़रोज़ाँ[6] है हनोज़,
जिस का दिल था एक शमए-ताक़े-एवाने-हयात,[7]
रूह जिस की आफ़ताबे-सुबह-इरफ़ाने-हयात,[8]

जिन्दगी की रफ़अतों[9] से मंज़िलों ऊँचा था वह,
आस्माने-मार्फ़त[10] का एक सैयारा-था वह,
सामने जिस के लरज़ उट्ठा शिकोहे-सरवरी[11],
वह बहादुर जिसने बातिल[12] को शिकस्ते-फ़ाश[13] दी,

जिस का हर जलवा शुआये-हक़[14] का मज़हर[15] हो गया,
ज़र्रा ज़र्रा जिस के परतव से मुनव्वर[16] हो गया,
हिन्दियों के दिल में बाक़ी है मुहब्बत राम की,
मिट नही सकती क़यामत तक हुकूमत राम की,

ज़िन्दगी की रूह था रूहानियत की शान था,
वह मुजस्सम[17] रूप में इन्सान के इरफ़ान[18] था।

---

१. भारत के दीपक २. लगातार ३. चमकने वाला ४. अभी तक ५. हिदायत की रोशनी, हिदायत-रास्ता बताना ६. रोशन ७. जीवन के महल के ताक़ का दीपक ८. जीवन के ज्ञान की सुबह का सूरज ९. ऊँचाइयां १०. ज्ञान का आकाश ११. सरदारी की शान १२. झूठ १३. खुली हुई हार १४. सत्य की किरण १५. जाहिर होने की जगह १६. रोशन १७. जिस्म रखने वाला १८. ज्ञान।

श्रीकृष्ण

बिन्दिरा के घाट हैं, फिर तुम्हारे मुन्तज़िर[1],
मौजे-आब[2] मुन्तज़िर, हैं सितारे मुन्तज़िर,
दर्द से भरी हुई, हैं फ़ज़ायें मुन्तज़िर,
मन्दिरों के साये में, हैं घटायें मुन्तज़िर,
गोपियों की ख़ाक में, सोज़े-इन्तज़ार[3] है,
हर कमल के जाम में, ख़ूने-सद-बहार[4] है,
कोयलों की कूक में, गीत का मज़ार[5] है,
मौसमे-बहार[6] इक, दुख भरी पुकार है,
हर क़दम पै बाद-ये-ज़िन्दगी[7] बहाओ फिर,
अय गोपाल झूम कर बन्सरी बजाओ फिर ।

बन्सरी की तान से, सुबहो-शाम मस्त हों,
अर्ज़ो-चर्ख़[8] मस्त हों, बेनिज़ाम[9] मस्त हों,
वज्द[10] में हों अक़्लो-दीं[11], बेख़ुदी हो रक़्स[12] में,
बन्सरी की तान पर, ज़िन्दगी हो रक़्स में,

---

१. राह तकने वाला २. पानी की लहर ३. इन्तिज़ार की चिनगारी ४. सौ बहारों का ख़ून ५. क़ब्र, समाधि ६. बसन्त ऋतु ७. जीवन मदिरा ८. धरती और आकाश ९. बेक़ायदा १०. ईश्वर प्रेम में झूमने की हालत ११. बुद्धि और धर्म १२ नाच ।

बन्सरी के कैफ़[१] से, इक जहां हो रक़्स में,
इक जहाँ का ज़िक्र क्या, लामकाँ[२] हो रक़्स में,
रक़्स में ज़मीन हो, आसमाँ हो रक़्स में,
जोश पर बहार हो, गुलसिताँ हो रक़्स में,
हाँ उठाओ बन्सरी, बन्सरी उठाओ फिर,
अय गोपाल झूम कर बन्सरी बजाओ फिर।

नन्द की कुटी में तुम, मिस्ले-माहताब[३] थे,
मिस्ले-माहताब क्या, अस्ले-आफ़ताब[४] थे,
हुस्न[५] की शराब थे, इश्क़ का शबाब[६] थे,
अपनी खुद नज़ीर थे, अपना खुद जवाब थे,
सिर्रे-हर-जमाल[७] थे, राज़े-हर-जलाल[८] थे,
हुस्न का कमाल[९] थे, इश्क़ का मआल[१०] थे,
अपने रुख़[११] से पर्द-ये-ज़ाहिरी[१२] उठाओ फिर,
इक जहाँ को हुस्न का, हैरती[१३] बनाओ फिर,
ब्रज की फ़ज़ाओं को नशे में रचाओ फिर,
अय गोपाल झूमकर बन्सरी बजाओ फिर।

फ़ितरते-यक़ीं[१४] में अब, सोज़े-तिश्नगी[१५] नहीं,
चश्मे-शौक़[१६] हर तरफ़, तुमको देखती नहीं,

---

१. रस २. जहाँ मकान न हो, ईश्वरीय दुनिया ३. चन्द्रमा जैसे ४. सूरज की असलियत ५. सुन्दरता ६. जवानी ७. हर ख़ूबसूरती का भेद, सिर-भेद ८. हर बड़ाई का भेद ९. बड़ाई, इन्तिहा १०. नतीजा ११. मुखड़ा १२. माया का पर्दा १३. भौचक्का १४. विश्वास की नेचर १५. प्यास की चिनगारी १६. प्रेम की आँख।

आँख है न हौसले, जल्वा[१] है न तूर[२] है,
कोर-बातनी[३] है एक, और दूर दूर है,
मौत ग़मज़दा[४] सी है, ज़िन्दगी नज़ार[५] है,
हुस्न है बरहना-सर[६], इश्क़ सोगवार[७] है,
सुबहो-शाम गूँज उठे, और रात गूँज उठे,
कायनात[८] गूँज उठे और हयात गूँज उठे,
मुस्करा के गाओ फिर, गा के मुस्कराओ फिर,
अय गोपाल झूमकर बन्सरी बजाओ फिर।

बन्सरी के कैफ़ से, दिल को गुदगुदाओ फिर,
प्रेम और प्रीति की, रीति को जगाओ फिर,
ज़मज़मों[९] की गोद से, नकहतें[१०] बरस पड़ें,
बन्सरी की लय से फिर, जन्नतें बरस पडें,
नज्मो-कौकबो-क़मर[११], हद्दे-राह[१२] हैं तो क्या,
आस्मानो लामकाँ, सद्दे-राह[१३] हैं तो क्या,
ख़ुद ही तुम कमल बनो, ख़ुद ही मुस्कराओ फिर,
बूये-गुल[१४] के रूप में, सब के पास आओ फिर,
बन्सरी बजाओ फिर दो-जहाँ[१५] पै छाओ फिर,
अय गोपाल झूमकर बन्सरी बजाओ फिर।

---

१. ज्योति २. एक पवित्र पहाड़ जहाँ हज़रते मूसा को ईश्वर ने अपने दर्शन दिये ३. मन का अन्धापन ४. उदास ५. निढाल ६. नंगे सर ७. मातमी ८. दुनिया ९. राग, वह आवाज़ जो दूर से आ रही हो १०. (नकहत) फूल की ख़ुशबू ११. सितारे और चांद १२. रास्ते की हद १३. रास्ते की रोक, दीवार १४. फूल की ख़ुशबू १५. दो दुनियाएँ (इन्सान की और ख़ुदा की दुनिया)।

मौज का सितार हो, बन्सरी के ज़मज़मे,
साहिले–जमन[१] हो और, ज़िन्दगी के ज़मज़मे,
मस्ते गुफ़्तगू[२] हों फिर, या समन की झाड़ियां,
तूरे–आशिक़ी[३] बनें, ब्रज की पहाड़ियाँ,
केसरी के रंग में, डूब जाय ज़िन्दगी,
आशिक़ी के रंग में, डूब जाय ज़िन्दगी,
रूहे-बानक़ाब[४] का, हर नक़ाब फूँक दो,
मौत ज़िन्दगी ही क्या, सब हिजाब[५] फूंक दो,
जिस तरह भी हो सके एक बार आओ फिर,
अय गोपाल झूमकर बन्सरी बजाओ फिर।

माहो आफ़ताब को, हुक्मे–इन्तज़ाम[६] दो,
फिर शबे–हयात[७] को, इज़्ने[८] सुबहो-शाम दो,
रूहे–मुनफ़इल[९] को फिर, इशरते–दवाम[१०] दो,
इश्क़ की शराब का, तुन्दोतेज़[११] जाम दो,
कुल फ़ज़ा खमोश है, इज़्ज़ते–कलाम[१२] दो,
हुर्रियत का दरस[१३] दो, जंग का पयाम दो,
एशिया ग़ुलाम है, इस ग़ुलाम की सुनो,
हिन्द डूबने को है, डूबते को थाम लो,
साहिले-मुराद[१४] तक हिन्दिओं को लाओ फिर,
अय गोपाल झूमकर बन्सरी बजाओ फिर।

---

१. जमना का तट २. बातचीत में मस्त ३. प्रेम पर्वत ४. पर्देबार आत्मा, ५. पर्दा ६. काम को पूरा करने का हुक्म ७. जीवन की रात ८. इजाज़त देना ९. शर्मीली और दुःखी आत्मा १०. अमर ख़ुशी ११. सर चकरा देने वाला १२. बातें करने की इज्ज़त १३. सबक़ १४ मुराद का किनारा।

गौतम बुद्ध

ज़र्रे ज़र्रे पर कपिलवस्तू के छाई थी बहार,
ऐश की तजदीद[1] के पैग़ाम[2] लाई थी बहार,
जामे-मय[3] रंगीनियों से था शराब अन्दर शराब,
फूल थे लाला-ब-लाला और गुलाब अन्दर गुलाब,
हुस्ने-काफ़िर[4] रक़्स में था ख़ुम-बसर[5] मीना-बदोश,[6]
इश्क़े-मिस्कीं[7] था गरेबाँ चाक मस्ते-नाओ-नोश,[8]
ज़िन्दगी रक़्साँ[9] थी पैहम पर्दा-हाये साज़[10] पर,
बज रहा था साज़े-हस्ती[11] हुस्न की आवाज़ पर,
इशरतें थीं, बेख़ुदी थी, ठुमकियाँ थीं, रक़्स था,
चाक कर डाला था हस्ती ने गरेबाँ होश का,

---

१. नया करना २. संदेसा ३. शराब का गिलास ४. काफ़िर ख़ुदा के न मानने वाले को कहते हैं, मगर यहां कवि का मतलब ऐसी सुन्दरी रमणी से है जिसे देखकर न ईश्वर का ध्यान रहे न आदमी का, खो देने वाली ख़ूबसूरती ५. मद का मटका सर पर लिये ६. कन्धे पर मदिरा की बोतल लिये ७. बेचारा प्रेम ८. पीने-पिलाने में मस्त ९. नाचती हुई १०. साज़ यानी बाजे के पर्दे ११. जीवन का बाजा।

रूह पर छाई हुई थी माद्दीयत[१] ऐश की,
ग़र्क़ थी तूफ़ाने-बेहोशी में ग़म की ज़िन्दगी,
गर्मिये-इशरत[२] से ठंडा था चिराग़-अहसास[३] का,
पैकरे-इन्साँ[४] में यख़[५] था रूह का आतिश-कदा,[६]
दब गई थी ऐश से रूहानियत[७] इन्सान की।
पड़ चुकी थीं सर्द सी चिनगारियाँ ईमान[८] की॥
यक-ब-यक तेरी नज़र से हट गये पर्दे तमाम,
अब न साक़ी था, न पैमाना, न साग़र था, न जाम,
रंग महलों से जसोदा का कन्हैया चल दिया,
चाँदनी में मंज़िले-इरफ़ाँ[९] का जोया[१०] चल दिया,
ख़ुश्क़-लब[११] हैराँ निगाहें ख़ाक-आलूदा-जबीं,[१२]
तिश्नये-अयनुल-यक़ीं[१३] दीवानये-हक़्क़ुल-यक़ीं,[१४]
ज़िन्दगी तेरी नज़र में सफ़हये-सादा[१५] हुई,
रूह तेरी ख़ानक़ाहे-ग़म[१६] का सज्जादा[१७] हुई,

---

१. (माद्दा) हर चीज़ के बनाने के सामान को कहते हैं, मगर महात्मा बुद्ध का आदर्श दुनियाँ और इन्सानी ख़ुदग़र्ज़ी से ऊँचा था, सो यहाँ शायर का मतलब ऐश की माद्दियत से ख़ुशी की भावना और उस भावना से पैदा होने वाली बुराइयों से है २. ख़ुशी की आंच ३. ज्ञान का दीपक, अहसास-महसूस करने की ताक़त ४. आदमी का तन ५. बर्फ़ ६. वह मकान जहाँ आग सुलगती है ७. रूहानी ताक़त ८. विश्वास ९. ज्ञान की मंज़िल १०. खोजी ११. सूखे होंठ १२. मिट्टी से भरा हुआ माथा १३. आँख से देखकर विश्वास करने के लिए बेचैन १४. सत्य को सत्य मानकर विश्वास करने के लिये दीवाना । १५. कोरा पन्ना १६. दुःख की कुटिया १७. ऋषियों के बैठने की जगह, किसी ऋषि की जगह लेने वाला ।

इश्क़ का साग़र बना उल्फ़त का पैमाना बना,
दिल तेरा कैफ़े-तलाशे-हक़[१] का मयख़ाना बना,

सा़ग़रिस्ताने[२] हक़ीक़त[३] ख़ुम-सितांने[४] इश्क़ की,
अव्वलीं-तामीर[५] अनूमा[६] के कनारों पर हुई,

तालिबे-हक़[७] आम के बाग़ों में ठहरा सात दिन,
हफ़्तख़्वाने-ज़िन्दगानी[८] थे ये गोया सात दिन,

ओरू-बिल्वा[९] की फ़ज़ायें हक़ का गहवारा बनीं।
बिन्धिया की चोटियाँ तूरे हक़ीक़त हो गईं ।।

अय सदाक़त के चमन परवरदये-मौजे-शमीम[१०]
याद है अब तक ज़माने को तेरा ज़ोहदे-अज़ीम,[११]

सर्दो-गर्मे शाहराहे हक़ का लज़्ज़तचश है तू[१२]
जो भड़कता ही रहा वह शोलये-आतश[१३] है तू,

कामियाबे-इम्तिहाने-ज़िन्दगी[१४] करता हुआ,
कामराने-ज़िन्दगी-ओ-आशिक़ी[१५] करता हुआ,

---

१. सच्चाई की खोज का रस २. (सागरिस्तां) शराब के प्यालों की जगह ३. सत्य ४. ख़ुमिस्ताँ-शराब के मटकों की जगह ५. पहली नींव ६. एक नदी ७. सत्य का खोजी ८. ज़िन्दगी के सात युग ९. बिन्ध्याचल का उत्तरी जंगल १०. फूल में बसने वाली ख़ुशबू के झोंकों में पला हुआ ११. महाबन शक्तिमान १२. सर्दो.........है तू—सच्चाई की बडी राह के ठंडे और गर्म सुखदुख के मज़े चखे हुए १३. आग की चिनगारी १४. जीवन के इम्तिहान में पास १५. प्रेम और जीवन में ख़ुश

इश्क़[1] ले आया नरंजारा[2] के साहिल पर तुझे,
क़ुदरतें हासिल हुईं फिर रूह और दिल पर तुझे,
छिड़ गया रग रग में तेरी इक नया साज़े-हयात,
साये में पीपल के तुझको मिल गया राज़े-हयात,

हक़ नहीं मिलता कि हक़ का रास्ता मिलता नहीं।
"ढूँढ़ने पर आदमी आये तो क्या मिलता नहीं" ॥

अय मुहब्बत के पयामी रहम के पैग़ाम-बर,
तूने पहुँचाई ज़माने को हक़ीक़त की ख़बर,
ज़िन्दगी का राज़े-असली तुझ पै उरियाँ हो गया,
शान्ती और हक़ का हासिल तुझको इरफ़ाँ हो गया,
राजगढ़ रोशन हुआ तेरी तजल्ली-याद[3] से,
नय सितांने-वेलवाना[4] गूँज उठा नग़मात से,
देवताओं के बुतों को पारा-पारा[5] कर दिया,
तूने हल[6] तख़लीक़े-आदम[7] का मुअम्मा[8] कर दिया,
तेरी ताक़त से हुआ कम इक़्तिदारे-बिरहमन[9]
टुकड़े टुकड़े हो गया हुस्ने-विक़ारे-बिरहमन,[10]

---

१. यहाँ उस प्रेम से मतलब है, जो आदमी को जानदार से लेकर बेजान चीज़ों तक से हो सकता है और जो महात्मा गौतम को था २. एक नदी ३. रोशनियाँ ४. वेलवाना-राजा बिम्बिसार की राजधानी, नयसिताँ-बाँसों का जंगल ५. टुकड़े-टुकड़े ६. उलझी हुई बात को सुलझाना ७. आदमी की पैदायश ८. गुत्थी ९. ब्राह्मण क़ौम की शक्ति १०. ब्राह्मणों की इज्ज़त का क़िला।

सल्तनत तेरे लिये इक तूदये-ख़ाशाक[१] थी,
माद्दीयत तेरे नूरानी क़दम की ख़ाक थी,
जुज़्वे-आला[२] तेरे दीने-आशिक़ी-अफरोज़[३] का,
ऐत्क़ादे-नेको[४] फ़ेले-नेको[५] क़ौले-नेक[६] था,
नीयते-नेको[७] ख़याले-नेको[८] अक़दस-बेख़ुदी,[९]
ज़िन्दगीये-नेको[१०] सईये-नेक[११] तेरा धर्म थी,
तेरे साग़र में शराबे-इश्क़े-आलमगीर[१२] थी,
तेरे मयख़ाने की अदना ख़ाक भी इकसीर थी,

सर-ब-सिज्दा[१३] हो गई दुनिया हुज़ूरे-एशिया[१४] ।
छा गया तारीकि-ये-आलम[१५] पे नूरे एशिया ॥

अय मेरे प्यारे वतन के राहिबे-आली-मुक़ाम[१६],
आज भी कलमा तेरा पढ़ती है दुनिया सुबहोशाम,
तेरा एक-एक लफ़्ज़ है इक कुल्लिया-अख़लाक़[१७] का,
कर दिया तूने मुदव्वन[१८] फ़लसफ़ा-अख़लाक़ का,
अम्न[१९] सरनामा[२०] तेरे क़ानूने-अख़लाक़ी[२१] का है,
रहम इक उनवाँ[२२] तेरी तालीमें-रूहानी[२३] का है,

---

१. कूड़े का ढेर २. सबसे बड़ा हिस्सा ३. प्रेम को चमकाने वाला धर्म ४. नेक विश्वास ५. नेक काम ६. नेक वचन ७. नेक नीयत ८. नेक विचार ९. पवित्र भाव में खो जाना १०. नेक जीवन ११. नेक कोशिश १२. सारे संसार की मुहब्बत की शराब १३. सिज्दे में सर झुका देना १४. एशिया के सामने १५. दुनिया का अन्धेरा १६. ऊँचे दर्जे के विरक्त १७. नेकी का निचोड़, कुल्लिया-सब का सब, अख़लाक़-नेकी १८. तरतीब देना १९. शान्ति २०. सुर्ख़ी २१. नेक क़ानून २२. शीर्षक २३. आत्मिक आदर्श ।

तेरी तालीमात[1] पर हिन्दोस्ताँ को नाज़ है,
हिन्द को क्या नाज़ है सारे जहां को नाज़ है,
तिफ़्ल-मग़रिब[2] जहलो-बेहोशी[3] में जब आलूदा[4] था,
सारा मशरिक़ तेरी तालीमात से आसूदा[5] था,
जाग ख़्वाबे नाज़[6] से और अम्न का फिर गीत गा,
फिर तेरा मसकन निशाना है सितम और ज़ुल्म का,
फ़ितनये-तहज़ीबे-नौ[7] ने इक क़यामत[8] ढाई है,
तेरे हिन्दुस्तान पर ताज़ा मुसीबत आई है,
जिस ज़मीं से तूने आवाज़े-विला[9] की थी बुलन्द,
जिस ज़मीं से तूने इक बाँगे-दिरा की थी बुलन्द,
वह ज़मीं अग़यार[10] के हाथों से फिर बर्बाद है,
ज़ुल्मो[11] बातिल[12] और निफ़ाक़ो[13] किज़्ब[14] से आबाद है,
कोना-कोना गोशा-गोशा ज़र्रा-ज़र्रा है ग़ुलाम,
अय मेरे गौतम तेरी आज़ाद दुनियां है ग़ुलाम,

कर ग़ुलामी से रिहा हमको फिर अरमाँ है यही।
आज हिन्दुस्तान में मफ़हूमे-निरवाँ[15] है यही।।

---

१. धर्म २. योरुप का बच्चा ३. नादानी और ग़फ़लत ४. लिसड़ा हुआ ५. माला-माल ६. बेपरवाह और प्यारी नींद ७. नई तहज़ीब का फ़ितना ८. प्रलय ९. मुहब्बत की सदा १०. ग़ैर, मुराद अँग्रेज़ों से है ११. अत्याचार १२. झूठ १३. निफ़ाक़-फूट १४. झूठ १५. निर्वाण का मतलब।

हिन्दुस्तान

(१)

हिन्द की अय सरज़मीं अय ख़ित्तये-पाके-वतन,[१]
ग़ाज़ये[२] रूये-महो-ख़ुर्शीद[३] अय ख़ाके-वतन,
अय गुलिस्ताने वफ़ा अय सीनये-चाके-वतन,[४]
अय मुहब्बत-ख़ेज़[५] आग़ोशे तरब-नाके-वतन,[६]
जोशे-इशरत[७] तुझमें है हंगामये-ग़म[८] तुझमें है,
अय बिसाते-दो-जहाँ[९] हर एक आलम तुझ में है ।

(२)

नग़माज़ारे-रूह[१०] भी गहवारये-इलहाम[११] भी,
जन्नते नज़्ज़ारा तेरी सुबह भी है शाम भी,

---

१. पवित्र जन्मभूमि २. (ग़ाज़ा) उबटना ३. चाँद सूरज का चेहरा ४. भारतमाता का ज़ख़्मी सीना ५. प्रेम से भरी हुई ६. ख़ुशी से भरी हुई वतन की गोद ७. ख़ुशी का जोश ८. दुःखों की भीड़ ९. दुनिया की दौलत, फ़र्श १०. आत्मा के गीतों की जगह ११. आकाशवाणी का झूला ।

मरकज़े-अहरार[१] तू है मरजये-अक़वाम[२] भी,
मयकदा भी, कावा भी, काशानये-असनाम[३] भी,
मुस्कराई किल्के-क़ुदरत[४] तेरा नक़्शा खींच कर,
तुझको ख़ालिक़[५] ने बसाया इत्रे-दुनियां खींच कर,

(३)

कृष्ण तेरा इक पयम्बर,इक नबी गौतम तेरा,
ज़र्रा ज़र्रा है हक़ीक़त का यहाँ महरम[६] तेरा,
ताज़ा गंगा और जमना से है कैफ़ोकम तेरा,
तू वह जन्नत है कि गिरवीदा[७] है इक आलम तेरा,
इक़्तिदारे-आरिया[८] में भी तेरा आवाज़ा[९] है,
क़लये-अज़मत[१०] का तू एक आहनी[११] दरवाज़ा है।

(४)

मुस्तरिब[१२] थी सितवते-यूनानियाँ[१३] तेरे लिये,
मुस्तइद[१४] थी हिम्मते-अफ़ग़ानियाँ तेरे लिये,
जोश में थी क़ुव्वते-ईरानियाँ[१५] तेरे लिये,
किस क़दर थीं आरज़ू-सामानियाँ[१६] तेरे लिये,

---

१. वीरों का केन्द्र २. क़ौमों का ठिकाना ३. बुतों का घर (मन्दिर) ४. क़ुदरत की क़लम ५. पैदा करने वाला ६. जानने वाला, दोस्त ७. चाहने वाला ८. आर्यों की ताक़त ९. गूँज १०. बड़ाई का क़िला ११. लोहे का (मजबूत) १२. बेचैन १३. यूनानियों की शान १४. तैयार १५. ईरानियों की क़ुव्वत १६. चाहतों के सामान।

परचमे-इस्लाम लहराया तेरी आ ोश में,
यह फ़रिश्ता भी चला आया तेरी आग़ोश में,

(५)

तूने देखे हैं ज़माने में हज़ारों इन्क़लाब,
तू कभी है महवे-बेदारी[१] कभी मजबूरे-ख्वाब,[२]
जज़रो-मद[३] हस्ती[४] का तुझ में पा चुका है इल्तिहाब[५],
थरथराता है तेरी अज़मत से अब तक आफ़ताब,
औजो-पस्ती[६] से तेरी तारीख़[७] कब बेगाना[८] है,
तू मुकम्मल इक किताबे-इबरतो-अफ़साना[९] है,

(६)

तेरा हर ज़र्रा है जामे-अंगबीने-हुस्नो-इश्क़[१०],
आस्ताँ[११] पर तेरे नाज़ाँ[१२] है जबीने-हुस्नो-इश्क,
तूने समझी है अदाये-दिल-नशीने[१३] हुस्नो-इश्क़,
अय तरफ़गाहे-वफ़ा[१४] अय सरज़मीने हुस्नो इश्क़,
कुछ हैं क़िस्से इश्क़ के कुछ हुस्न के अफ़साने हैं
हीरो-राँझा नल-दमन तेरे ही सब दीवाने हैं।

---

१. जागने में खोया हुआ यानी जागने की तैयारियों में २. सोने के लिये मजबूर ३. उतार चढ़ाव ४. जिन्दगी ५. आग का भड़कना ६. उचाई निचाई ७. इतिहास ८. अनजान ९. नसीहत और कहानियों की किताब १०. हुस्न और इश्क़ के शहद का प्याला ११. चौखट १२. इतराया हुआ, फख्र करना १३. दिल में खुबने वाली अदा १४. प्रेम की खुशियों की जगह।

(७)

तेरे जंगल भी हैं अय हिन्दोस्ताँ गुलशन-बदोश,[1]
और काँटे गुलफ़िशानो[2] गुलचकानो[3] गुलफ़रोश,[4]
कोह तेरे अर्जुमन्दो[5] सरबलन्दो[6] बर्फ़पोश,[7]
तेरे दरिया मौज-खेज़ो[8] कैफ़-बारो[9] पुर-ख़रोश,[10]
जल्वये क़ुदरत है तू, फ़ितरत का काशाना[11] है तू,
जिसमें हर इक रंग की मय है वह मयख़ाना है तू।

(८)

अर्जुनो भीषम तेरी अक़लीम[12] के सहरा-वो-साम,[13]
देवता मन्दिर के तेरे क़ाबिले-सद-अहतराम,[14]
ख़्वाजये अजमेर तेरी बज़्मे-इरफ़ाँ[15] के इमाम,[16]
शिवलीओ[17] आज़ाद[18] तेरे तर्जुमाने-अहतशाम,[19]
कारवाने-रफ़्ता[20] तेरा किस क़दर पुरजोश था,
तू कभी ग़रनातओ[21] बग़दाद का हम-दोश[22] था।

---

१. कन्धों पर बाग उठाये हुए २. फूल खिलाने वाले ३. फूल बरसाने वाले ४. फूल बेचने वाले ५. ऊँचे ६. बहुत ऊँचे ७. बर्फ़ से ढके हुये ८. मौजें मारते हुये ९. मस्ती बरसाते हुये १०. शोर से भरे हुए ११. घर १२. राजधानी १३. दो ईरानी पहलवानों के नाम १४. सौ इज्ज़त करने के क़ाबिल १५. ज्ञान सभा १६. नेता १७. मौलाना शिवली, हिन्दुस्तानी लिटरेचर के एक बडे तारीख़दाँ १८. मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'आज़ाद' देहलवी, उर्दू लिटरेचर के हीरो १९. तर्जुमान-बताने वाला, अहतशाम-बड़ाई २०. पिछला क़ाफिला यानी बीता हुआ ज़माना, गुज़रे हुये लोग २१. ग़रनाता-स्पेन की राजधानी २२. बराबर।

(९)

मयकदे में गो नहीं अब मय-गुसाराने-क़दीम,[१]
है मगर महफ़ूज़ हर गोशे में सामाने-क़दीम,[२]
मुन्तज़िर है नग़मये-नौ[३] का शबिस्ताने-क़दीम,[४]
फिर छिड़ेगा तेरा अफ़साना बउनवाने-क़दीम,[५]
ग़म के यह सामाँ निशाते-जाविदाँ[६] बन जायेंगे,
ज़र्रे फिर अँगड़ाई लेकर आस्माँ बन जायेंगे।

(१०)

सुबह् की रौनक़ गई और शाम का जल्वा गया,
दामने-मग़रिब[७] तेरी रंगीनियों पर छा गया,
सब हमें मालूम है क्या रह गया और क्या गया,
ख़ैर अब तक बज़्म[८] में जो आ गया वह आ गया,
अब यह क़दग़न[९] है कि कोई ग़ैर आ सकता नहीं,
रंग अपना तेरी महफ़िल में जमा सकता नहीं।

(११)

वक़्त आयगा कि फूलों से सजा देंगे तुझे,
वक़्त आयेगा कि हम दुल्हिन बना देंगे तुझे,
ख़ून के छींटों से रंगे-इर्तिक़ा[९] देंगे तुझे,
गोद में लेकर सुरैया[१०] पर बिठा देंगे तुझे,

---

१. पुराने पियक्कड़ २. पुराना सामान ३. नया गीत ४. पुराना विश्रामगाह ५. पुराने तरीक़े से ६. अमर ख़ुशी ७. मग़रिब का आँचल यानी योरुप का असर ८. सभा ९. मुमानिअ़त ९. तरक़्क़ी का रंग १०. छः सितारों का झुरमुट।

नग़मये हिन्दोस्ताँ गूँजेगा साज़े-अर्श[1] तक,
चोटियां होंगी हिमाला की फ़राज़े-अर्श[2] तक ।

(१२)

अब हमारे हाथ हैं तेरी हिफ़ाज़त के लिये,
अब हमारा ख़ून है तेरी हिमायत के लिये,
रूह अब तैयार है अह्सासे-ग़ैरत[3] के लिये,
अय वतन अब वक़्फ़ हैं हम तेरी ख़िदमत के लिये,
कर चुके हैं अज़्मे-रासिख़[4] आज अपने दिल में हम,
सदरे महफिल बन के बैठेंगे तेरी महफ़िल में हम ।

(१३)

तेरे हामी हैं बहुत ग़मख़्वार तेरे अय वतन,
अय वतन हैं जोश में सरशार[5] तेरे अय वतन,
ख़ून से सींचेंगे बर्गो-बार[6] तेरे अय वतन,
ख़ुद बनेंगे ख़ादिमो-दिलदार[7] तेरे अय वतन,
लूट सकता है बहारे-मस्तीये-गुलज़ार[8] कौन,
हम अभी ज़िन्दाँ हैं हो सकता है फिर हक़दार कौन ?

---

१. अर्श के बाजे तक २. अर्श की ऊँचाई तक ३. शराफ़त का अहसास ४. पक्का इरादा ५. मतवाला ६. फूल पत्ती ७. चाकर और प्रेमी ८. बाग़ की मस्ती की बहार ।

तलोशान[1] पहाड़ के शहीद

[उन ३८० चीनी देशभक्तों के नाम जो सन् १९३२ ई० में चीन पर जापान के हमलों का बचाव करते हुए कोरिया की सरहद, तलोशान पहाड़ पर उत्तरी एशिया की ख़ून को जमा देने वाली सर्दी की ज्यादती से जम कर रह गये; जिनके जमे हुए बदनों पर गर्म वर्दियाँ और हाथों में राइफ़िलें थीं, और जो मर कर भी बहादुर सन्तरियों की तरह खड़े हुए देश-भक्ति और प्रेम की अमर तस्वीर बने हुए थे]

तख़ैयुल[2] आज़िमें[3] परवाज़[4] हो कोहे-तलोशाँ पर,
हुदूदे-कोरिया[5] पर सरज़मीने-ख़ूं-बदामा[6] पर,
जो इक बाज़ीचये-ख़ूँरेज़[7] है आसारे-मशरिक़[8] में,
जो इक मशहद[9] है तारीख़ी शहादत-ज़ारे-[10]मशरिक़ में,
जो इक जावेद-गुलशन[11] इक बहारे-ग़ैर-फ़ानी[12] है,
जो इस्तिक़लाल[13] की इक यादगारे ग़ैर-फ़ानी है,

---

१. चीन का एक पहाड़ २. ख़याल ३. (आज़िम) इरादा करने वाला ४. उड़ना ५. कोरिया की हदें ६. ख़ून से लिथड़ी हुई ज़मीन ७. ख़ून बरसानेवाला खेल ८. पूरब यानी एशिया वग़ैरह के निशान ९. शहीदों का क़ब्रस्तान १०. (शहादत-ज़ार) शहीद होने की जगह ११. अमर बाग़ १२. न मिटने वाली बहार १३. आज़ादी, हिम्मत ।

जहाँ इक कारवाँ सोया हुआ है आदमियत का,
जहाँ मदफ़न[१] बना है चीन की रूहे-सदाक़त[२] का,
जहां खुद मुतरिबे-फ़ितरत[३] रबाबे-ग़म[४] बजाता है,
जहाँ वक़्त अपनी लहने-ज़ार[५] में नौहा[६] सुनाता है,
जो इस्तअमार[७] की क़ुर्बानगाहे हश्र-सामाँ[८] है,
जो अर्ज़े-चीन[९] के सीने पै इक गंजे-शहीदाँ[१०] है,
जहां इक शमअ रोशन की वतन पर मिटने वालों ने,
चिराग़ां[११] कर दिया दुनियाँ में चीनी नौनिहालों ने,
ज़माने की कोई आँधी बुझा सकती नहीं जिसको,
कभी तारीख़ भूले से भुला सकती नहीं जिसको,
परस्ताराने-हुर्रियत[१२] का जो ऊँचा शिवाला है,
बहादुर और मुक़द्दस[१३] चीनियों का जो हिमाला है,
ज़माने में बहुत ऊंचा जो इक चर्खे-बिसालत[१४] है,
जो इक गर्दूने-अज़मत[१५] है जो इक अर्शे-शुजाअत[१६] है,
जहाँ पहरा वतन पर मिटने वाले मर के देते हैं,
ज़माने से शुजाअत और वफ़ा की दाद लेते हैं।

---

१. दफ़न करने की जगह २. सत्य की आत्मा ३. बाजा बजाने वाली फ़ितरत ४. ग़म का बाजा ५. दुःखी आवाज़ ६. रोना धोना ७. आजकल किसी मुल्क पर किसी दूसरी क़ौम का क़ब्ज़ा करके अपनी आबादी बढ़ाने और वहाँ इल्म और तहज़ीब फैलाने को कहते हैं। यहाँ अमरीका, ब्रिटेन और दूसरी साम्राज्यी ताक़तों से मुराद है ८. क़यामत जैसे सामानों वाली ९. चीन की ज़मीन १०. जहाँ बहुत से शहीदों की क़ब्रें हों ११. रोशनी १२. आज़ादी के पुजारी १३. पवित्र १४. बहादुरी का आकाश १५. बड़ाई का आस्मान १६. वीरता की सब से ऊंची बलन्दी

खुदा की रहमतें हों नौनिहालाने चमन तुम पर,
फ़लक[१] से फूल बरसें अय शहीदाने वतन तुम पर,
क़यामत तक तुम्हारा नाम मुर्दा हो नहीं सकता,
वफ़ा-ओ-फ़र्ज[२] का यह नक़्श[३] धुंधला हो नहीं सकता,
कभी जब याद आओगे वतन पर मिटने वालों में,
नई इक जिन्दगी हो जायगी पैदा ख़यालों में,
बदन में ख़ून की हर बूंद असर से थरथरायेगी,
रगों में आदमी के रूहे-ईमाँ[४] दौड़ जायगी,
क़दम फ़र्जोवफ़ा की राह में जब डगमगायेंगे,
तुम्हारे मुन्जमिद-अजसाम[५] उस दिन काम आयेंगे,
तुम्हारी याद उखड़े पाँव मैदाँ में जमा देगी,
मुहब्बत और इस्तक़लाल का अमृत पिला देगी,
रंगा है जिसको खूने-गर्म[६] ने इबरत[७] के दामाँ[८] पर,
वह परचम हश्र[९] तक लहरायगा कोहे-तलोशाँ पर।

---

१. आस्मान २. प्रेम और कर्तव्य ३. तस्वीर ४. विश्वास की आत्मा ५. जमे हुए बदन ६. गरम ख़ून ७. ख़ौफ़ ८. आंचल ९. प्रलय अंजाम।

बहादुरशाह ज़फ़र[१]

याद अय्यामे[२] कि तक़दीरे मुग़ल ताबिन्दा[३] थी,
मिटते मिटते शौक़ते-बावर[४] जहाँ में ज़िन्दा थी,
याद अय्यामे कि था हर हर नफ़स[५] मौजे-शराब[६],
रक़्स में थी ज़िन्दगानी वज्द करता था शबाब,
याद अय्यामे कि हर ज़र्रा था जन्नत-आशकार[७],
सुबहदम जमना के घाटों पर नहाती थी वहार,
हर क़दम पर थी नज़ारा-सोज़[८] लाले की दहक,
हर रविश[९] पर थी मशामे-जाँ[१०] चमेली की महक,
लालओ-गुल थे चमन में माहो—अन्जम का जवाव,
मस्त फ़ौव्वारों से रह रह कर बरसता था शबाब,
बामोदर थे चिलचिलाती धूप की क़ुर्बानिगाह,
जलवये-इशरत[११] से हरदम ख़ीरा[१२] रहती थी निगाह,

---

१. आख़िरी मुग़ल बादशाह २. बीते हुये वह दिन याद हैं जबकि मुग़ल क़ौम की क़िस्मत जाग रही थी ३. रोशन ४. बाबर बादशाह की शान ५. सांस ६. शराब की लहर ७. स्वर्ग को दिखानेवाला, सुन्दर ८. सैर को जलानेवाली ९. बाग़ की पटरी १०. आत्मा की महक ११. ख़ुशी की ज्योति १२. चौंधियाई हुई ।

जगमगाती थी महो-अन्जुम से ज़र्रों की जबीं,
हमसरे-हफ़्त-आस्माँ[१] थी ऐश-मंज़िल[२] की ज़मीं,
चान्दनी क़दमों में आकर लोटती थी रात को,
खेलती थी माहो–अन्जुम से जवानी रात को,

नग़मये-ग़ालिब[३] फ़ज़ा में गूँजता था रातदिन,
ज़ौक़[४] का हर ज़मज़मा था शौक़ अफ़ज़ा रातदिन,
पत्ता पत्ता इस चमन का दफ़्तरे-तारीख़[५] है,
यानी हर ज़र्रा वतन का महज़रे[६] तारीख़ है,

फूल बाग़े दहर के कुम्हला चुके, मुरझा चुके,
शमए-सोज़ाने-चमन[७] को भी पसीने आ चुके,
रोने वाले सिसलीओ[८] बग़दाद[९] को भी रो चुके,
आठ आठ आँसू जहाँनाबाद[१०] को भी रो चुके,

अय ज़फ़र, क्या क़ाबिले-अश्के-मुहब्बत[११] तू न था,
तेरी क़िस्मत का किसी की आँख में आँसू न था,
जी में आता है कि तुझको हश्र तक रोया करूँ,
और तसव्वुर में तेरी तसवीर को देखा करूँ,

---

१. सात आकाश का मुक़ाबला करनेवाली २. ख़ुशी मनाने की जगह ३. उर्दू फ़ारसी के महाकवि ग़ालिब का गीत (कविता) ४. उर्दू के महाकवि ५. इतिहास का दफ़्तर ६. (महज़र) वह काग़ज़ जिसमें जनता किसी बात की गवाही लिखे ७. बाग़ का जलता हुआ दीपक ८. सिसली—एक द्वीप जहाँ पहले मुसलमानों की हुकूमत थी ९. ईराक की राजधानी १०. दिल्ली का पुराना नाम ११. प्रेम के आँसुओं के क़ाबिल।

जश्न तेरा फातिहा थी शौकते-अस्लाफ़[१] की,
शान तेरी मातमे-माज़ी[२] की इक तस्वीर थी,
बाग़बाँ[३] की आँख का काँटा हदफ़[४] सैयाद का,
आईना मज़लूमियत[५] का नक्श[६] था बेदाद[७] का,
नकहते-सोज़ाने-गुल[८] था बूये-कुश्ता[९] था ज़फ़र,
जल रहा था बाग़े-हस्ती[१०] और तकता था ज़फ़र,
महफ़िले-बाबर की तू वह शमए-आख़िर[११] था ज़फ़र,
जिसके पर्तों में नज़र आती थी माज़ी की सहर,
हर घड़ी ताबूत थी ज़िन्दा जनाज़ा हर नफ़स,
नौहाख़्वाने-अज़मते-तैमूर[१२] तेरा हर नफ़स,
सर जवाँ बेटे का देखे और शुक्रे-हक़[१३] करे,
एक दुनिया सामने तेरी निगाहों के मरे,
अय ज़फ़र तेरा कलेजा था कि तू ज़िन्दा रहा,
बुझ गई हर शमअ् और तू फिर भी ताबिन्दा रहा,
बेज़बाँ रोते थे तुझ पर आदमी का ज़िक्र क्या,
मौत भी बाग़ी थी तुझसे जिन्दगी का ज़िक्र क्या ?
इबरत अय अहले जहाँ देखा जलाले इन्क़िलाब[१४],
ज़र्रे में तब्दील होकर रह गया वह आफ़ताब,

---

१. पुरखों की शान २. बीते हुये ज़माने का मातम ३. माली ४. निशाना ५. ग़रीबी बेचारगी ६. तसवीर ७. सख़्ती ८. गुलाब की जली हुई ख़ुशबू ९. मसली हुई ख़ुशबू १०. जीवन का बाग़ ११. बुझता हुआ दिया १२. तैमूर की बड़ाई का नौहा पढ़ने वाला १३. ख़ुदा का शुक्र १४. इन्क़लाब की शान ।

जिसकी किरनें नूर-पाशे-अज़मते-देरीना[१] थीं,
ज़िन्दगी बख़्शे-जलालो-शौकते-पारीना थीं[२],
दिन दहाड़े लूट ली जाये मताए-अकबरी[३],
यह समाँ चश्मे-फ़लक[४] ने भी न देखा था कभी,
फिर नई अँगड़ाई लेने को है दौरे-इन्क़लाब[५],
सुबह आतिश-रेज़[६] है ख़ूँबार[७] नूरे-आफ़ताब[८],
कँपकपा देगी किसी दिन ख़ूने-नाहक़ की पुकार,
ज़ुल्म ख़ुद ज़ालिम का हो जायेगा ख़ूनी इश्तिहार,
एक दिन खुल जायगा राज़े-मकाफ़ाते-अमल[९],
इन्तिक़ामे-क़ुदरते-हक़[१०] है ज़माने में अटल,
तेरे मुन्सिफ़[११] भी बड़े मुजरिम[१२] बनेंगे एक दिन,
हामिले-इल्ज़ाम[१३] भी मुल्ज़िम[१४] बनेंगे एक दिन,
जिसने तुझको जीते जी बेदर किया बेघर किया,
गोशये-ख़ामोशे-मोलद[१५] से तुझे बाहर किया,
काश इक दिन हम उसे सिम्तेचमन[१६] रुख़सत करें,
हिन्द के परदेस से सूये-वतन[१७] रुख़सत करें।

---

१. पुरानी शान शौक़त की ज्योति बरसाने वाली २. ज़िन्दगी......थी—पिछली शान को ज़िन्दा करने वाली ३. अकबर बादशाह की दौलत ४. आकाश की आँख ५. इन्क़लाब का चक्कर ६. आग बरसाने वाली ७. ख़ून बरसाने वाला ८. सूरज की रोशनी ९. राज़-भेद, मकाफ़ात-बदी का बदला, अमल-कर्म १०. इन्तक़ाम-बदला, क़ुदरते-हक़—ख़ुदा की कुदरत ११. इन्साफ़ करने वाला १२. जुर्म करनेवाला १३. इल्ज़ाम लगाने वाले १४. जिस पर इल्ज़ाम लगाया जाय १५. जन्मभूमि का शान्त कोना १६. बाग़ की तरफ़ १७. जन्मभूमि की तरफ़, इंग्लैण्ड से मुराद है।

बाँगे-दिरा[1]

खुरशीदे-अमल[2] ज़िया-फिशाँ[3] है सारा माहौल[4] नौजवाँ है,
फिर फ़िक्रे-हुसूले[5]-आशियाँ[6] है तय्यार हो रहनुमा[7] कहाँ है ?
हंगामे[8] दिराए कारवाँ है ।

फिर दश्तो[9] चमन का ज़र्रा ज़र्रा फिर बज़्मे-कुहन[10] का ज़र्रा ज़र्रा,
फिर खाके-वतन[11] का ज़र्रा ज़र्रा मन्ज़िल की तलब[12] में सरगराँ है ।
हंगामे दिराए कारवाँ है ।

फिर हिन्द की मजलिसे-अज़ा[13] में अहरार[14] के मरकज़े-विग़ा[15] में
इस्लाम की यसरबी[16] फ़ज़ा में गूंजा हुआ नारए-अज़ाँ[17] है ।
हंगामे दिराए कारवाँ है ।

---

१. काफ़िले की घण्टी की आवाज २. अमल का सूरज ३. रोशनी बरसाने वाला ४. आसपास ५. फ़िक्र-धुन, हुसूल हासिल करना ६. घोंसला (घर) ७. रास्ता दिखाने वाला ८. हंगाम-वक़्त ९. दश्त-जंगल १०. पुरानी सभा ११. जन्मभूमि की मिट्टी १२. धुन १३. मातमी जलसा १४. आज़ाद १५. जंगी मरकज १६. चमन, मदीनेवाली फ़ज़ा १७. अज़ाँ का नारा ।

मौक़ूफ़[१] है कूच जिस सहर[२] पर तारी[३] है अभी से बामो-दर पर,
है सुबह-रहील[४] अपने सर पर सिर्फ एक ही रात दरम्याँ है।
हंगामें दिराए कारवाँ है।

है मुबह तलाशे-क़िस्सा-ख़्वाँ[५] क्या अन्देशये—फ़ुरसते—बयाँ[६] क्या,
अब ख़दशये[७] तूले दास्ताँ क्या[८] यह लमहे-ख़त्मे—दास्ताँ है[९]।
हंगामे दिराए कारवाँ है।

पाबन्दियाँ अब हमें नहीं रास ख़ुद्दारियों का ज़रूर है पास,
अल्लाह रे, इन्क़लाबे-अहसास[१०] अब सिजदा ख़िलाफ़े-आस्ताँ[११] है।
हंगामे दिराए कारवाँ है।

हस्ती अपनी ख़राब कर दो उम्मीद को कामयाब कर दो,
दुनिया में इक इन्क़लाब कर दो एलान यही यहाँ वहाँ है।
हँगामे दिराए कारवाँ है।

आज अपनी फ़नाइयत[१२] दिखादे बेगानगी[१३] के हिजाब[१४] उठा दे,
बेख़ौफ़ आगे क़दम बढ़ा दे हिन्दी को सलाए-इम्तिहाँ[१५] है।
हंगामे दिराए कारवाँ है।

---

१. रुका हुआ २. सुबह ३. छाया हुआ ४. कूच की सुबह ५. कहानी कहनेवाले की खोज ६. बयान करने की फ़ुर्सत का डर ७. ख़दशा—डर ८. अब······क्या—अब कहानी लम्बी होने का डर क्या ? ९. कहानी ख़त्म होने की घडी है। १०. अहसास का इन्क़लाब ११. आस्ताँ (देहलीज़) के ख़िलाफ़ १२. फ़ना—मौत, मर-मिटने का शौक़ १३. ग़ैरियत, परायापन १४. परदा १५. इम्तिहान की पुकार।

जवानी का तराना

(१)

अय जवानो, नौजवानो तोड़ दो बन्द-ज़ारे[1] ग़ुलामी,
ख़ुश-जमालो[2], नौ-निहालो[3] फेंक दो सर से बारे-ग़ुलामी,[4]
अय हुसैनो-अली के सपूतो अय मोहम्मद के शहज़ोर[5] बेटो,
नस्ल से बादशाहों की तुम हो
फिर भी हो यार-ग़ारे[6] -ग़ुलामी !

अय जवानो, नौजवानो !

(२)

अभिमन्यू की औलाद थे तुम अहदे-माज़ी[7] की रूदाद[8] थे तुम,
याद है, पहले आज़ाद थे तुम,
अब हो, इक यादगारे ग़ुलामी ।

अय जवानो, नौजवानो !

---

१. बन्दज़ार-क़ैदख़ाना २. सुन्दर ३. बच्चो ४. ग़ुलामी का बोझ ५. वीर ६. ग़ुलामी के लंगोटिया दोस्त ७. बीता हुआ ज़माना ८. कहानी ।

(३)

यह तुम्हारी छलकती जवानी और यह लानते-जाविदानी,[१]
यह सरा-सीमगी,[२] सर-गरानी[३]
यह दिले-दाग़दारे-ग़ुलामी ।[४]
अय जवानो, नौजवानो !

(४)

इस ग़ुलाम आस्माँ को उलट दो अर्ज़[५] हिन्दोस्ताँ को उलट दो,
हो सके तो जहाँ को उलट दो,
क्यों है बाक़ी दयारे-ग़ुलामी[६] ।
अय जवानो, नौजवानो !

(५)

खत्म हो दौर बरबादियों का वक़्त है आलम-ईजादियों का[७],
कर दो एलान आज़ादियों का,
हो चुका इश्तिहारे ग़ुलामी ।
अय जवानो, नौजवानो !

(६)

अपनी इज्ज़त की बंसी बजाओ अपनी अज़मत की भेरी बजाओ,
आतिश-अफ़शाँ[८] नफ़ीरी बजाओ,
फूँक दो नग़मा-ज़ारे-ग़ुलामी ।[९]
अय जवानो, नौजवानो !

---

१. अमर लानत २. परेशानी ३. सर भारी होना ४. ग़ुलामी से दाग़दार दिल ५. अर्ज़-ज़मीन ६. ग़ुलामी का शहर ७. ज़माना पैदा करने का वक़्त ८. आग बरसाने वाली ९. ग़ुलामी के गीतों की जगह ।

(७)

यह वतन सारी क़ौमों का मलजा[१] वह वतन मसकन[२] अहले वफ़ा का,
यह वतन सारी दुनिया का काबा,
और यूँ शर्मसारे[३] ग़ुलामी ।
अय जवानो, नौजवानो !

(८)

आन ज़ाहिर हो अहले-विग़ा[४] की शान ज़ाहिर हो दस्ते-ख़ुदा[५] की,
है जहाँ क़ब्र अहले वफ़ा की,
अब वहाँ हो मज़ारे ग़ुलामी ।
अय जवानो, नौजवानो !

(९)

नग़मे-नग़मे से बैराग बरसे हर तरफ़ आतशी–राग[६] बरसे,
हर तरफ़ से नई आग बरसे,
जल उठे कारोबारे ग़ुलामी ।
अय जवानो, नौजवानो !

---

१. शांति मिलने की जगह २. रहने की जगह ३. शर्मसार–लजाया हुआ ४. लड़ने वाले ५. ख़ुदा का हाथ ६. आग बरसाने वाला गीत ।

ईद

जिस दिन तस्कीने-क़ल्ब[1] मुमकिन होगी,
मशरिक़[2] की फ़ज़ा ख़मोशो-साकिन[3] होगी,
मयख़ानए-हुर्रियत[4] में आयेगी बहार,
'साग़र' मेरी ख़ास ईद उस दिन होगी।

तस्कीनो-निशात[5] ख़स्ता कामों[6] की नहीं,
गुलगश्ते-चमन[7] गराँ-ख़िरामों[8] की नहीं,
आज़ाद हैं जिनके मुल्क जो हैं आज़ाद,
ईद उन की है, दुनिया में ग़ुलामों की नहीं।

---

१. मन की शान्ति २. एशिया ३. शान्त और चुप ४. आज़ादी का शराबख़ाना ५. शान्ति और ख़ुशी ६. कमज़ोर और काहिल ७. बाग की सैर ८. आहिस्ता चलने वाले।

मैं चाँद न देखूँगा

करूँ अय हम-नफस[1] नज़्ज़ारये-बज़्मे-फलक[2] क्योंकर,
कि फ़ुरसत ही नहीं ज़ानूए-ग़म[3] से सर उठाने की।
दरो दीवार जब से मिट गये उठती नही नजरें,
इक उफ़्तादा[4] जमीं सी रह गई है एशख़ाने की।
तुलूवे-महरो-मह[5] अब तक मुसल्सल[6] इक फ़साना है,
बिखर कर रोज़ मिल जाती हैं कड़ियाँ इस फ़साने की।
ज़मीं का मन्ज़रे-तारीक[7] बीनाई[8] भी ले डूबा,
तमाशाये-फ़लक[9] क्योंकर करें आँखें ज़माने की।
नज़र पर क्या असर हो दिल-फ़रेबी-ये-मनाज़िर[10] का,
मेरे होंटों में अब हिम्मत कहाँ है मुस्कराने की।
ज़मी में क़ुव्वतें अपनी नज़र की जज़्ब[11] करने दे,
कि इक दिन लौटनी हैं वसअतें[12] इस कारख़ाने की।

---

१. दोस्त, साथी २. आकाश की समा का नजारा ३. दुःख का घुटना ४. मिटी हुई ५. चांद सूरज का निकलना ६. लगातार ७. सियाह सीन ८. देखने की ताक़त ९. आस्मान का देखना १०. सीन सीनरी का लुभावनापन ११. पैवस्त १२. लम्बाइयां।

अक़ीदत[१] की बलन्दी पर नई दुनियाँ बनाऊँगा,
मैं सिजदों में उठा लाया हूँ ख़ाक इक आस्ताने की।
वह दुनियाँ आस्माँ जिस पर न हो और चाँद हों लाखों,
जिन्हें क़िस्मत न हो आदत निकल कर डूब जाने की।
चमन हों वह चमन जिन में ख़िज़ाँ आते हुये लरज़े,
इरम[२] बन बन के झूमें जिन में शाख़ें आशियाने की।
जहाँ वहदत[३] ही वहदत हो मुहब्बत ही मुहब्बत हो,
ज़रूरत ही न हो आईने-ख़ैरो-शर[४] बनाने की।
जहाँ हर साँस में बूये-बक़ाये-जा-विदानी[५] हो,
जहाँ बाक़ी न हों यह ज़हमतें[६] मिटने मिटान की।
गुलामी और पामाली को जिस दिन माँद[७] देखूँगा,
तो फिर अय हम-नशीं[८] मैं सर उठा कर चाँद देखूँगा।

---

१. दिल का भरोसा २. स्वर्ग ३. एकता ४. नेकी और बदी का क़ानून ५. अमर जीवन की ख़ुशबू ६. तकलीफें ७. मन्द ८. दोस्त, साथी।

ग़द्दारी

जब अक़वामो[1]-मिलल[2] पर बारिशे-इफ़लास[3] होती है,
जब इन्साँ की तबीयत ग़म से बे–अहसास[4] होती है,
रिज़ालत जब असर अपना जमाती है शराफ़त पर,
हविस जब ग़ालिब आजाती है अहसासे मोहब्बत पर,
ग़ुलामी मुल्क को चारों तरफ़ से घेर लेती है,
तबाही सूए–आबादी[5] रुख़ अपना फेर लेती है,
उलूमो–जहल[6] में जब फ़र्क़े–नाज़ुक[7] भी नहीं रहता,
दिमाग़ोदिल पै खिंच जाता है जब तारीक[8] परदा–सा,
महासिन[9] क़ौम के अफ़राद[10] से जब रूठ जाते हैं,
मफ़ासिद[11] जब किसी मिल्लत[12] पै बदबू बनके छाते हैं,
जब अख़लाक़े-हमीदा[13] की तिजारत होने लगती है,
जब औसाफ़े–शरीफ़ा[14] में बग़ावत होने लगती है,

---

१. अक़्वाम-क़ौमें २. क़ौमें ३. मुफ़लिसी की वर्षा ४. अहसास से ख़ाली ५. बस्ती की तरफ़ ६. ज्ञान और अज्ञान ७. नाज़ुक फ़र्क़, फ़र्क़—अन्तर ८. काला ९. ख़ूबियां १०. जनता ११. बुराइयां १२. जाति १३. अच्छे कर्म १४. ख़ूबियां ।

जब इन्सानों के दिल शैतान के दमसाज़[१] होते हैं,
ज़माने में जहन्नुम के दरीचे[२] बाज़[३] होते हैं,
दिले मख़लूक़[४] जब बदमस्तियों में डूब जाता है,
जब उसकी रूह में नफ़सानियत[५] का रंग आता है,
निकलते हैं हिजाबे-मुल्क[६] से मक्कारो-मक्कारी[७],
हुवैदा[८] मासियत[९] के बत्न[१०] से होती है ग़द्दारी,
यही साँपन फिर अपने बत्न से ग़द्दार जनती है,
वतन और क़ौम में अफ़रादे-नाहन्जार[११] जनती है ।

---

१. लंगोटिया यार २. खिड़कियां ३. खुलना ४. जीव, इन्सान ५. खुदगर्ज़ी ६. मुल्क के पर्दे से ७. मक्कार और उनकी मक्कारी ८. जाहिर ९. पाप १०. पेट ११. बुरे लोग ।

फ़िरक़ा परस्त

न यह बज़्मी,[1] न यह रज़्मी,[2] न यह आज़ादो ज़िन्दानी[3],
न ज़ौक़े-जाँ-दही[4] इस को, न शौक़ो-फ़िक्र-क़ुर्बानी[5]।
न मज़हब से इसे मतलब, न मशरब[6] से इसे मतलब,
न अपनी क़ौमियत के अस्ल मतलब से इसे मतलब।
यह इक वारफ़्तए-एज़ाज़[7] और इज़्ज़त का दीवाना,
यह इक फ़ानूसे[8] शमए[9] दौलतो-हशमत[10] का परवाना।
यह नामूसे-वतन[11] की जिन्स का सौदागरे-अरज़ल[12],
यह दुनिया में मताए-हुर्रियत[13] का ग़ासिबे-अव्वल[14]।
ग़ुलामी पर जो मरता है, ग़ुलामी जिस पै मरती है,
यह जिस की रूह पाए-अहरमन[15] पर सिजदे करती है।

---

१. समाज में हिस्सा लेने वाला २. फ़ौजी ३. क़ैदी ४. जान देने की तरंग ५. क़ुर्बानी की चिन्ता और शौक़ ६. उसूल ७. इज़्ज़तों की ख़्वाहिश रखने वाला ८. फ़ानूस-शीशे का गिलास जिस में मोमबत्ती लगी होती है ९. शमा-दीपक, मोमबत्ती १०. माल और बड़ाई ११. वतन की इज़्ज़त १२. महानीच सौदागर १३. आज़ादी की दौलत १४. पहिला लुटेरा १५. शैतान का पाँव।

ग़रज़ का यह पुजारी, यह मुरीदे-नफ़्से-अम्मारा[१],
वतन के आस्मानों पर यह इक मनहूस-सय्यारा[२]।
यह इक खूँख्वार बेटा मादरे–गेती[३] के सीने पर,
मुसिर[४] है जो बजाये शीर[५] माँ का खून पीने पर।
यह इल्मो क़ुदरते-इन्साँ[६] से ऐसा काम लेता है,
कि फ़र्ते-ग़म[७] से शैताँ भी कलेजा थाम लेता है।
यह इक फ़र्दे-वतन,[८] लेकिन वतन-सोज़ो[९] वतन-दुश्मन[१०],
यह इक नख्ले-चमन,[११] लेकिन चमन-सोज़ो[१२] चमन-दुश्मन[१३]।
नुमायन्दा यह ज़ुल्मोजौर[१४] का नेकी की खिदमत में,
यह चश्मे-अहरमन[१५] का नूर बरबादी की ज़ुल्मत[१६] में।
मगर क्या उसकी हस्ती हुर्रियत[१७] को रोक सकती है,
बुराई नेकियों के क़ाफ़िले को टोक सकती है ?
कहीं अनवार[१८] पर ज़ुल्मत का ग़ल्बा[१९] हो भी सकता है,
कहीं अहरार[२०] पर रजअ़त[२१] का हमला हो भी सकता है ?
कभी अख़लाक़[२२] पर आमाले-बद[२३] ने फतह पाई है,
कभी यज़्दानियत[२४] पर शैतनत भी ग़ालिब आई है ?

---

१. पाप की तरफ़ ले जानेवाले भाव का ग़ुलाम २. पुच्छल तारा, धूमकेतु ३. धरती माता ४. हठ करना ५. दूध ६. इंसान का ज्ञान और शक्ति ७. रंज की ज्यादती ८. वतन में रहने वाला ९. (वतन सोज़) वतन को जलाने वाला १०. वतन का बैरी ११. बाग़ का पौदा १२. (चमन सोज़) बाग़ को जलाने वाला १३. बाग़ का बैरी १४. कठोरता १५. शैतान की आँख १६. अंधियारी १७. आज़ादी १८. रोशनी १९. छा जाना २०. आज़ादी चाहने वाले २१. पीछे क़दम रखना, मुराद ग़ुलामी चाहनेसे है २२. अच्छी आदतें २३. बुरे कर्म २४. ईश्वरता

कभी साग़र सदाक़त[१] का किसी तोहमत ने तोड़ा है,
हक़ीक़त[२] पर कभी बातिल[३] ने अपना नक़्श[४] छोड़ा है ?
भरूँगा रंग तस्वीरे वतन में रूहे-पुरग़म[५] का,
तो पानी होके बह जायेगा ख़ूँ इस नंगे-आलम[६] का,

---

१. सच्चाई ३. सत्य २. असत्य ४. निशान ५. दुःखी आत्मा ६. दुनिया का भार ।

आज़ादी का तराना

हम आज से हैं आज़ाद............आज़ाद............आबाद,
ले अपना क़फ़स[1] सय्याद[2]............सय्याद............बर्बाद ।
है मकतल[3] सब्ज़ा–ज़ार[4]
हर पत्ता है ख़ूँ–बार[5],
हर क़तरा है गुलनार[6],
हर ज़र्रा है कय्याद[7]............कय्याद............शद्दाद[8],
हम आज से हैं आज़ाद............आज़ाद............आबाद ।

(२)

अंगारा है हर गुल,
वह गुल हो या बुलबुल,
है बाग़ी जुज़[9] वो कुल,

---

१. पिंजरा २. शिकारी ३. क़त्ल करने की जगह ४. हरियाला मैदान ५. ख़ून बरसाने वाला ६. एक छोटा पौदा जिसमें सिर्फ़ फूल लगते हैं ७. मक्कार ८. आद क़ौम का एक बड़ा बादशाह जिसने स्वर्ग के नमूने का एक बाग़ बनाया था और ख़ुदा होने का दावा किया था ९. टुकड़ा ।

वह सर्व हो या शम्शाद[1]·········शम्शाद·········गुलज़ाद[2],
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद ।

(३)

गुलज़ार में है एक जंग,
बजने को है खूनी चंग,
फूटेगा गुलों से रंग,
होली है मेरे सय्याद·········सय्याद·········बर्बाद,
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद ।

(४)

है खून में गुलशन चूर,
हर गुल का है दामन चूर,
ज़ख्मों से है तन-मन चूर,
यह तारीख़ी बेदाद[3]·········बेदाद·········सय्याद,
ले अपना क़फ़स सय्याद·········सय्याद·········बर्बाद ।

(५)

औरंगे-चमन[4] को छोड़,
उठ ताजे-समन[5] को छोड़,
हट गंगो-जमन को छोड़,
अब खुद हैं हम शहज़ाद·········शहज़ाद·········महज़ाद[6],
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद ।

---

१. एक दरख़्त २. फूल का बेटा ३. ज़ुल्म ४. बाग़ का सिंहासन ५. चमेली का मुकट ६. चांद के बेटे ।

(६)

पिन्दारे–नफ़स[१] को भूल,
काशानये–ख़स[२] को भूल,
अब दामो–कफ़स[३] को भूल,
अब सर्व[४] भी है आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद,
ले अपना क़फ़स सय्याद·········सय्याद·········बर्बाद।

(७)

हाथों पै है सर और जान,
आँखों में हैं सौ तूफ़ान,
इंसान हैं हम इंसान,
अब होश में आ सय्याद·········सय्याद·········बर्बाद,
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद।

(८)

ज़ंजीर के टुकड़े थाम,
शमशीर[५] के टुकड़े थाम,
ले तीर के टुकड़े थाम,
यूँ होते हैं आज़ाद·········आज़ाद·········सय्याद,
ले अपना क़फ़स सय्याद·········सय्याद·········बर्बाद।

---

१. जीवन का घमण्ड २. झोंपड़ा ३. जाल और पिंजरा ४. ईरान का सुन्दर पेड़ जिसमें फूल नहीं लगते और जिसकी उपमा ईरान के शायर प्रेमिका के क़द से देते हैं और उसको चमन का क़ैदी कहते हैं। कवि कहता है कि वह भी आज़ाद है। ५. तलवार।

(९)

अय साक़िये-लाला-फ़ाम[1]
उठ और उछाल इक जाम,
है जाम ही में अंजाम[2],
मयख़ाना रहे आबाद·········आबाद·········आज़ाद,
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद।

(१०)

आज़ादी की है धूम,
मस्तों में मिल कर झूम,
आकाश के रथ को चूम,
हो इक रक़्से-आज़ाद[3]·········आज़ाद·········दिलशाद,
हम आज से हैं आज़ाद·········आज़ाद·········आबाद।

---

१. अफ़ीम के सुर्ख़ फूल सा तन रखने वाला साक़ी, साक़ी—शराब पिलानेवाला
२. नतीजा ३. आज़ाद नाच।

गांधी

तूने मग़रिब[1] पर नुमायाँ[2] कर दिया हक़्क़े-वतन,[3]
बाग़बाँ[4] से खोल कर कह दी हदीसे-या-समन,[5]
कामगारे-हुर्रियत[6] अय शह्र-यारे-हुर्रियत,[7]
अय रईसे-हुर्रियत[8] अय ताजदारे-हुर्रियत,[9]

हिन्दियों के जज़्बये-क़ौमी की इक सूरत है तू,
चलता फिरता परचमे-रंगीने-हुर्रियत[10] है तू,
रख दिया क़ुदरत ने कान्धे पर तेरे बारे-वतन,[11]
कर लिया तसलीम तुझ को सब ने सरदारे-वतन,

अय दिमाग़े-ज़ुल्म[12] पर इक ज़र्बेकारिये-शदीद,[13]
मुस्तबद-दुनिया[14] के सर पर ज़ाला-बारीयें-शदीद,[15]

---

१. योरप २. ज़ाहिर ३. भारत की आज़ादी का हक़ ४. माली ५. चमेली की सच्ची बात ६. आज़ादी का ख़ुश क़िस्मत ७. आज़ादी का बादशाह ८. आज़ादी का सरदार ९. आज़ादी का राजा १०. आज़ादी का रंगदार झण्डा ११. वतन के फ़र्ज़ का बोझ १२. अत्याचार का दिमाग़ १३. भरपूर चोट १४. ज़ालिम दुनिया १५. ओलों की सख़्त वर्षा।

किस क़दर आज़ाद है कितना बहादुर दिल है तू,
ख़ुद–सरों में साइ-ये–आज़ादिये कामिल है[१] तू,
महफ़िले-अग़यार[२] तेरे ज़िक्र से आबाद है,
बज़्मे-दुश्मन[३] में भी तू आज़ाद सा आज़ाद है,
ख़ूब वाक़िफ़ इस हक़ीक़त से हैं दीवाने तेरे,
बादये-फ़ितरत से हैं लबरेज़ पैमाने तेरे,
वह तास्सुर[४] है तेरे इक नारये-आज़ाद[५] में,
ज़लज़ला आया हुआ है क़स्रे-इस्तब्दाद[६] में,
देखिये मशरिक़ को क्या मिलता है मग़रिब से ख़िराज,[७]
कोई ज़ंजीरे-ग़ुलामी या कोई कांटों का ताज।

---

१. ख़ुदसरों.........है—पूर्ण स्वराज्य की कोशिश करने वाला २. ग़ैरों की सभा (अंग्रेज़) ३. बैरी की सभा ४. असर ५. आज़ाद नारा ६. इस्तब्दाद-एक आदमी की हकूमत सख़्ती, क़स्र-महल ७. लगान, यहाँ इनाम से मतलब है।

मोतीलाल नेहरू

कल कोई कहता था बासद-नालाओ-आहो-फ़ुग़ाँ[1]
दूर है हम से बहुत आज़ादिये हिन्दोस्ताँ,
सैद[2] क्या सय्याद[3] क्या है बाग़बाँ बुलबुल-फ़रोश,[4]
बुलबुलें हैं इस चमन की लाला-सोज़ो[5] गुल-फ़रोश,[6]
फूल इस गुलशन के हैं पाबन्द[7] और तारे ग़ुलाम,
चाँद क़ैदी आस्माँ क़ैदी है सय्यारे ग़ुलाम,
बादबाँ[8] को क्या कहूँ मौजे-हवा[9] को क्या कहूँ,
नाखुदा दुश्मन सही, लेकिन खुदा को क्या कहूँ,
"सुबह" है रोशन जनाज़ा हिन्दिये-बीमार[10] का,
रात की तारीकियाँ[11] ताबूत[12] हैं अनवार का,
मन्दिरों को फूंक दे क्या प्रार्थना क्या आरती,
ज़िन्दगी नाखुश है तुझ से देख इधर अय भारती,

---

१. सौ आहोज़ारी के साथ २. शिकार ३. शिकारी ४. बुलबुल को बेचने वाला ५. फूल को जलाने वाली ६. फूल बेचने वाली ७. क़ैदी ८. नाव की पाल ९. हवा का झोंका १०. बीमार हिन्दुस्तानी ११. अंधियारियाँ १२. मुर्दे का सन्दूक ।

इस परस्तिश के ग़ुलू[१] ही ने मिटाया है तुझे,
आस्मानों से बलन्दी के गिराया है तुझे,
राम तू ख़ुद क्यों न बन और ख़ुद कन्हैया क्यों न हो,
ज़िन्दगी के बुतकदे[२] में तेरी पूजा क्यों न हो,
अय मुसलमाँ ! अय मुजाहिद ! अय हक़ीक़त के अमीं[३]
कब तक आख़िर सिजदये-बेरूह[४] और तेरी जबीं,
कैफ़ अम्रे–लाज़िमी[५] है इश्क़ के आदाब में,
हुर्रियत है शर्ते-अव्वल[६] ज़िन्दगी के बाब में,
अब कहाँ वो सालिके-रफ़्ता[७] वो जज़्बाती[८] कहाँ,
मयकदे में अब वो अगले से ख़राबाती[९] कहाँ,
दास है अब और न जौहर है न मोतीलाल है,
मयकशाने-हुर्रियत[१०] का मयकदे में काल है,
आह वो मोती ! कि जिसकी ज़ौ से रोशन था वतन,
जिसकी हस्ती थी सदाक़त[११] की शुआओं का चमन,
फ़ितरते-तदबीर[१२] जिसकी हर अदा पर लोट थी,
इशरते-तक़दीर[१३] जिसकी हर अदा पर लोट थी,
जिसके सीने में अमानत थी बुलन्द-अख़लाक़[१४] की,
जिसके दिल में थी समाई वुसअ़ते-आफ़ाक़[१५] की,

---

१. ज़्यादती २. मन्दिर ३. सत्य की धरोहर रखने वाले ४. बेजान नमस्कार, मतलब झूठे सिजदे से है ५. जरूरी बात ६. पहली शर्त ७. खुदा के वो खास बन्दे जो गुज़र चुके हैं ८. भावनाओं का रसिया (भावुक) ९. शराबी १० आज़ादी के मतवाले ११. सच्चाई १२. सोचने का स्वभाव १३. क़िस्मत का ऐश १४. ऊँचे और अच्छे कर्म १५. दुनिया की लम्बाई चौड़ाई

वो जवाँ जो खुश था क़स्रे-नौजवानी[१] फूंक कर,
मुस्कराता था मताये-ज़िन्दगानी[२] फूंक कर,
ग़म गदाये-आस्ताँ[३] था ऐश दर्बानि-हयात[४],
हमसरे–चर्खे–बरीं[५] था जिसका एवाने-हयात[६],
रूह जिसकी जज़्बये–आज़ाद से सरशार[७] थी,
ज़िन्दगी मयख़ानये–अहरार[८] की मयख़्वार थी,
ख़ाक होने, ख़ाक करने के लिए तैयार था,
आदमी के भेस में बर्क़े–सरे–कुहसार[९] था,
है वतन शानों पै जिसके मिसले अतलस[१०] आज भी,
रहबरी करती है जिसकी रूहे-अक़दस[११] आज भी,
गर्म था दिल जज़्बये-इश्क़े-वतन[१२] की आग से,
साज़ ख़ुद बेचैन था सोज़े–वफ़ा[१३] के राग से,
जिसने अपने सब्रे-मुहकम[१४] से ये साबित कर दिया,
मरते मरते भी नहीं झुकता है सर आज़ाद का,
ज़िन्दगी बाज़ी है दुनिया एक बाज़ीगाह[१५] है,
मौत भी आज़ाद की मंज़िल नहीं है, राह है,

---

१. नौजवानी का महल २. जीवन की पूँजी ३. चौखट का भिखारी ४. जीवन का दरबान ५. आकाश की बराबरी करने वाला ६. जीवन का राजमहल ७. नशे में चूर ८. आज़ादों का मयख़ाना ९. पहाड़ी की चोटी पर चमकने वाली बिजली १०. नवें आस्मान का नाम ११. पवित्र आत्मा १२. जन्मभूमि के प्रेम की भावना १३. मुहब्बत की जलन १४. अटल धीरज १५. खेलने की जगह

है जवाहर जिसके मिजमर[१] ही का एक सोज़े-तमाम[२],
सुबह जिससे आतश-अफ़गन[३] है तो सोज़-आगीं है शाम,
इक नवाये-शोला[४] है सद-शोलये-आवाज़[५] है,
जिसका दिल आतिशकदा है रूह मिजमर-साज़[६] है,
ज़ौक़े-बरबादी[७] मिला आफ़ाक़-ईजादी[८] मिली,
दस्ते-क़ुदरत[९] से जिसे तौरीसे-आज़ादी[१०] मिली,
मरकज़े-सद-आरज़ू[११] गहवारये-उम्मीद[१२] है,
उसकी हर मौजे-तबस्सुम[१३] हिन्दियों की ईद है,

आयगा अय दोस्त ! इक वह भी ज़माना आयगा,
ये स्याह दारे-गुलामी[१४] ख़ुद-ब-ख़ुद गिर जायगा,
चर्ख़[१५] को चूमेगा आज़ादी का मन्दर एक दिन,
देवताओं के भी याँ झुक जायेंगे सर एक दिन,
बुत नये होंगे, नया बुतख़ाना, बुतगर[१६] भी नये,
आस्ताँ होगा नया, सिजदे नये, सर भी नये,
अज़मतो–इक़बाल होंगे ख़ाकरोबे–आस्ताँ[१७]
वक़्त होगा मुजरई[१८] देगा सलामी आस्माँ,

---

१. अंगीठी २. दहकती हुई चिनगारी ३. आग लगाने वाली ४. आग की लपट की आवाज़ ५. आवाज़ की सौ चिनगारियाँ ६. अंगीठी बनाने वाली ७. मिटने का चस्का ८. दुनिया ईजाद करना ९. क़ुदरत का हाथ १०. आज़ादी की विरासत ११. सौ आशाओं का केन्द्र १२. आशा का पालना १३. मुस्कान की लहर १४. ग़ुलामी का दरवाज़ा १५. आकाश १६. मूर्ति बनाने वाला १७. देहलीज़ की ख़ाक झाड़ने वाला १८. मुजरा करने वाला ।

फिर सबा[1] लेकर पयामे ज़रनिगार आ जायगी,
एशिया के गुलसिताँ में फिर बहार आ जायगी,
बादिया[2] सद-रश्के-सहने-बोस्ताँ[3] हो जायगा,
नौजवाँ हिन्दोस्ताँ बिल्कुल जवाँ हो जायगा,
दबदबा अपना जहाँ को थरथरा देगा कभी,
तनतना अपना ज़माने को हिला देगा कभी।

१. बाग़ की हवा २. जंगल ३. सौ बाग़ों के सेहन को लजाने वाला।

अबुल कलाम आज़ाद

वह इक रूहे-चमन-अफरोज़[1] जाने-सौसनो-लाला[2],
वह बुलबुल जिसने सारा बाग़ नग़मों से हिला डाला,
चमन वालों को रहमत है पयामे-नौबहार[3] उसका,
तख़ैयुल-अर्शबोस[4] उसका तसव्वुर[5] लालाकार[6] उसका,
वह इक कोहे-वक़ारो-तमकनत[7] इक बत्ले-हुर्रियत[8],
वह साज़े-पैकरे-इन्साँ[9] में इक आवाज़ये-क़ुदरत[10],
तलाक़त[11] जिसकी ख़ामोशी है ग़फ़लत जिसकी बेदारी,
अयाँ जिसके तकल्लुम[12] से ख़िताबत[13] की फ़ुसूंकारी[14],
तकल्लुम जिसपै सदक़े है तरन्नुम[15] जिसपै क़ुरबाँ है,
सितारों और फूलों का तबस्सुम जिसपै क़ुरबाँ है,
नज़ाक़त जिसकी फ़ितरत है लताफ़त जिसकी फ़ितरत है,
मुक़द्दस हर नफ़स जिसका नसीमे-बाग़े-जन्नत[16] है,

---

१. चमन को चमकाने वाली आत्मा (बहार) २. सौसन और लाला (फूलों) की जान ३. नई बसन्त ऋतु का संदेसा ४. अर्श को चूमने वाला ख़याल ५. सोचना ६. फूल बनाने वाला ७. शान और शौकत का पहाड़ ८. आज़ादी का नेता ९. आदमी के तन का बाजा १०. क़ुदरत का डंका ११. बोलने की ताक़त १२. बोलना १३. बोलने का फ़न १४. जादूपन १५. मधुर बानी १६. स्वर्ग के बाग़ में सुबह सवेरे चलने वाली हवा, नसीम-सुबह सवेरे चलने वाली हवा।

वह सैयद[१] जिसने तामीरे-सियादत[२] की बिना डाली,
वह क़ायद[३] जिसने तौक़ीरे-क़यादत[४] की बिना[५] डाली,
मुफ़क्किर[६] जिसकी फ़िक्री क़ुव्वतें जाने-सियासत[७] हैं,
मुदब्बिर[८] जिसके महसूसात[९] ईमाने सियासत हैं,
ज़माने में वह क़ुर्बानी की इक तस्वीर है ज़िन्दा,
वह चर्ख़े-हुर्रियत[१०] का इक सितारा है दरख़्शिन्दा[११],
वह मशहूदे-हक़ीक़त[१२] और आज़ादी का शाहिद[१३] है,
मुफ़स्सिर[१४] है, मुक़र्रिर[१५] है, मुदब्बिर है मुजाहिद[१६] है,
वह इक ज़ाते-मुकद्दस[१७] जो मुजस्सम[१८] इल्मो-इरफ़ाँ[१९] है,
हरीमे—रूह[२०] में जिसके मुनव्वर शमए-ईमाँ[२१] है,
वह जिसका सीनये-अक़दस[२२] अमीने-राज़े-यज़दानी[२३],
वह इक मव्वाज़[२४] बहरे-बेकराने-इल्मे-क़ुरआनी[२५],
वह नायब है हक़ीक़ी इल्म के अफ़रादे-आली[२६] का,
वह असली जांनशीं है आज राज़ी[२७] ओ ग़िज़ाली[२८] का,

---

१. सरदार २. सरदारी की इमारत ३. नेता ४. लीडरी की इज्जत ५. नींव ६. सोचने वाला ७. सियासत की जान ८. तदबीर वाला ९. वह बातें जो महसूस की गई हों १०. आज़ादी का आकाश ११. चमकीला १२. सच्चाई का गवाही दिया जाने वाला, जिसे जनता ने सच्चा माना १३. गवाही देने वाला १४. बताने वाला, ख़ासकर क़ुरान का बताने वाला १५. तक़रीर करने वाला १६. कोशिश करने वाला, लड़ाई करने वाला १७. पवित्र आदमी, पूज्य १८. सर से पांव तक १९. ज्ञान २०. आत्मा का रंग महल २१. विश्वास का दिया २२. पवित्र छाती २३. परमेश्वर के भेद का अमानतदार २४. मौजें मारता हुआ २५ क़ुरान के ज्ञान का ऐसा समन्दर जिसका ओर छोर न हो २६. धर्मात्मा २७. , २८. इस्लामी फिलासफ़र।

सियासत और तारीख़ो अदब की एक दुनिया है,
अतारद[१] जिसके किल्के-गौहरीं[२] को बोसा देता है,
वह आज़ादे-हक़ीक़ी[३] जिसको नफ़रत है नुमायश[४] से,
वह रूहे-मानवी[५] जो दूर है दुनिया की काविश[६] से,
वह नब्बाज़े[७] हक़ीक़ी क़ौम के अमराज़े-कुहना[८] का,
वह असली राज़दाँ हालातो अहसासाते दुनिया का,
वह अर्ज़े–हिन्द में वाहिद[९] इमामे[१०] क़ौमे मुस्लिम है,
क़वी[११] हाथों में आज उसके ज़िमामे-क़ौमे-मुस्लिम[१२] है,

निगह-बाने-हुक़ूक़े-उम्मते-इस्लामिया[१३] है वह,
अमीरे-कारबाने-मिल्लते-इस्लामिया[१४] है वह।

---

१. एक सितारे का नाम २. मोती का क़लम ३. सच्चा आज़ाद ४. दिखावा ५. असली आत्मा ६. परेशानी ७. नब्बाज़-नब्ज़ देखनेवाला, सच्चा हकीम ८. पुरानी बीमारियाँ ९. अकेला १०. इमाम-लीडर ११. मज़बूत १२. मुसलमानों की बागडोर १३. मुस्लिम क़ौम के हक़ की पासबानी करने वाला १४. मुसलमानों के क़ाफ़िले का सरदार।

सैयद महमूद

अय निगहबाने-वतन[1] अय मर्दे-मैदाने-वतन[2],
तेरे दम से है बहारों पर गुलिस्ताने-वतन[3]
तूने साबित कर दिया ईमाने-मुस्लिम[4] का जलाल,
तेरा इस्तक़लाले-सीरत[5] ला-कलामो[6] लाज़वाल[7],
साहिबे अहसास है इक जिस्मे-हुर्रियत[8] है तू,
हम तही-मायाने-मिल्लत[9] की बड़ी दौलत है तू,
ख़ुफ़्ता-बख़्तों[10] के लिये सामाने-बेदारी[11] है तू,
ख़्वाबे सर सैयद का इक उनवाने-बेदारी है तू,
दिल तेरा हिन्दोस्ताँ के इश्क़ से लबरेज़ है,
रूह में इक आग है इस्लाम की और तेज़ है,
तुझ पै जानो दिल फ़िदा, हस्ती फ़िदा, मस्ती फ़िदा,
तुझ पै हम बेकस ग़ुलामों की यह कुल बस्ती फ़िदा,

---

१. वतन की देखभाल करनेवाला २. वतन के मैदान का मर्द ३. वतन का बाग़ ४. मुसलमानों का विश्वास ५. केरक्टर की मज़बूती ६. ला-कलाम–जिसमें कोई शक न हो ७. जो मिट न सके ८. आज़ादी का शरीर ९. क़ौम के गरीब १०. ख़ुफ़्ता-बख़्त-जिनके भाग्य सो रहे हैं ११. जागृति का सामान ।

आह तेरी अर्जमन्दी[१] को पहुँच सकता है कौन,
तेरी रूहानी बलन्दी को पहुँच सकता है कौन,
तेरा पैकर राहे आज़ादी में खाकिस्तर[२] हुआ,
फुकफुका कर माद्दा आईनये जौहर हुआ,
अन्दलीबाने-चमन[३] में तू है वह बुलबुल खमोश,
जिसके दिल में है अज़ल[४] से मौजज़न तूफ़ाने जोश,
बारहा रख रख दिया है जिसने सीना खार पर,
खूने-दिल से रंग दौड़ाया है बर्गोबार[५] पर,
हाँ मगर लब तक न आया इद्दआये[६] इश्क़े-गुल[७]
गो रही सर में जुनूँ-अफ़ज़ाँ[८] हवाये-इश्क़े-गुल[९],
इक्तिज़ाये[१०] सोज़े-बुलबुल नग़मा-सामानी[११] नहीं,
ज़िक्र जिसका लब तक आजाये वह क़ुर्बानी नहीं,

---

१. बड़ाई २. राख ३. बाग़ की बुलबुलें ४. अनादि ५. पत्ती और फल ६. इद्दआ—दावा ७. फूल का प्रेम ८. पागलपन (देश-प्रेम) को बढ़ाने वाली ९. फूल के प्रेम की लहर १०. इक्तिज़ा-ख्वाहिश करना ११. गीत की दौलत यानी बुलबुल की मुहब्बत के लिए गाकर शोर मचाना ज़रूरी नहीं।

जवाहरलाल

अय जवाहर, अय बहारे-गुलसिताने-आर्या[1],
है तेरे पैकर में क्या रूहे-दरोनाचार्या[2]
अय कि तू है गौहरे-जैबो-गरेबाने-वतन[3],
नूर से तेरे मुनव्वर है शबिस्ताने[4] वतन,
बाज़ुए-अर्जुन[5] की शक्ती भीम की ताक़त है तू,
अभिमन्यू के दिले-खुद्दार[6] की ग़ैरत[7] है तू,
सातकी की तरह तू है मर्दे-मैदाने-वफ़ा[8],
तूने रखली अभिमन्यू की तरह शाने-वफ़ा,[9]
सीनए-हिन्दी[10] में फिर तजदीदे[11] साज़ो-सोज़ है,
सोमदत क्या तेरे पैकर में हयात-अफ़रोज़[12],
जिस तरह सहदेव ने पुश्पक बजाया था कभी,
जिस तरह अर्जुन विग़ा में गड़गड़ाया था कभी,

---

१. आर्यों के बाग़ की बहार २ द्रोणाचार्य की आत्मा, ३. वतन के गले और जेब का मोती ४. शबिस्ताँ-बादशाहों के सोने की जगह, भारत का रंगमहल ५. अर्जुन के बाज़ू ६. ग़ैरतवाला दिल ७. आत्माभिमान ८. मुहब्बत और निबाह के मैदान का मर्द ९. प्रेम और निबाह की शान १०. हिन्दुस्तानी का सीना ११. तजदीद, नया होना १२. जीवन को चमकाने वाला ।

तू भी है हिन्दोस्ताँ में नग़माख़ाने-हुर्रियत,
ज़िन्दाबाद अय शाने-आज़ादी-ओ-जाने हुर्रियत[1],
बहरोबर लरज़े में हैं, क़ौनो-मकाँ लरज़े में हैं,
तेरे नग़मों से दिलों के आस्माँ लरज़े में हैं,
तेरे नग़मे गर्म करते हैं मुहब्बत का लहू,
रूप में इन्सान के गोपाल की बंसी है तू,
शाहकारे[2] सनअ़ते-बुतख़ानये-आज़र[3] है तू,
जज़्बए-ईसारो-क़ुर्बानी[4] का इक पैकर है तू,
तेरे हाथों में कोई दे दे जो अर्जुन की कमाँ,
ज़िन्दा हो जाये महाभारत की ख़ूनी दास्ताँ,
फिर मधोसूदन सा हादी[5] हो हिदायत के लिये,
फिर ज़माना हो कमर-बस्ता शहादत के लिये,
अय सरासर जोशे आज़ादी मुजस्सम इन्क़लाब,
ज़िन्दगी तेरी है इक संगीं बग़ावत का शबाब,
साँस लेता है तेरे पैकर में तूफ़ाँ का शबाब,
आँधियों की नौजवानी ज़लज़लों का पेचोताब,
बे-हक़ीक़त है तेरी दुनिया में ग़म का माजरा,
मौत है मौजे-तबस्सुम[6] ज़िन्दगी इक क़हक़हा,

---

१. ज़िन्दाबाद··· हुर्रियत—अय आज़ादी की जान और शान तेरा बोलबाला हो २. शाहकार-मास्टर पीस ३. सनअ़त-कला, आज़र-इस्राईलियों के पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम के बाप का नाम आज़र था जो बुत बनाने में मशहूर थे ४. बलिदान की भावना ५. रास्ता बताने वाला ६. मुस्कान की लहर ।

क़ैदो-बन्दे-ज़ाहिरी[१] है तेरी फ़ितरत तेरी ख़ू[२],
ख़ुद असीरी[३] जिसकी मजनूं है वो ज़िन्दानी[४] है तू,
आईना मेरे तसव्वुर में है मुस्तक़बिल[५] तेरा,
ले उड़ेगा तुझको आख़िर जज़्बए-कामिल[६] तेरा,
कैफ़े-मौसम[७] से फ़िज़ाए-गुलसिताँ मौजों पै है,
जज़्बए-आज़ादिये-हिन्दोस्ताँ मौजों पै है,
तेरी हस्ती इक नये अहसास की तमहीद है,
यास[८] के आलम में तू इक मरकज़े-उम्मीद[९] है,
जिस क़दर क़तरे हैं उन क़तरों को फिर दरिया करें,
आ कि मयख़ाने में फिर माहौले-नौ[१०] पैदा करें।

---

१. ज़ाहिरी बन्धन २. आदत ३. क़ैद ४. क़ैदी ५. आने वाला ज़माना ६. भरपूर कामना ७. मौसम के रस ८. निराशा ९. आशा का केन्द्र १०. नई दुनिया।

अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ

न क्यूँ रूबाह-ख़ानों[1] में हो पैहम शोरोशर[2] पैदा,
कि शेरिस्ताने-अफ़ग़ाँ[3] में हुआ, इक शेरे-नर पैदा,
बहिश्ते-इन्क़लाबे-नौ,[4] सरे-गंजे-शहीदाँ[5] है,
तबस्सुम ग़ाज़ियाने-रफ़्ता[6] के होंटो पै रक़्साँ है,

मअत्तर[7] बूये-नौ[8] से हो गया गुलख़ानये-सरहद[9],
नई मय है, नया साक़ी, नया मयख़ानये-सरहद,
हयातो-हुर्रियत[10] की रूह दौड़ी कोहसारों में,
वो आतशगर[11] लगा दी आग जिसने बर्फ़ज़ारों[12] में,

सरापाये-रज़ा[13] है वह मुजस्सम-पैकरे-ख़ूबी[14],
अदायें जिसकी सज्जादी[15] हैं तेवर जिसके अय्यूबी[16],

---

१. लोमड़ियों के घर २. चीख़ पुकार ३. अफ़ग़ानों का शेरिस्तान, शेरिस्तान–शेरों की जगह ४. नई क्रान्ति का स्वर्ग ५. शहीदों के क़ब्रस्तान के किनारे ६. गुज़रे हुए वीर ७ ख़ुशबूदार ८. नई ख़ुशबू ९. सरहद का बाग़ १०. ज़िन्दगी और आज़ादी ११. आग से खेलनेवाला १२. बर्फ़ की जगह १३. ख़ुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहने की तस्वीर १४. सर से पाँव तक नेकी १५. हज़रत सज्जाद की सी अदायें। हज़रत सज्जाद इमाम हुसैन के बेटे थे जिनकी तबीयत में बहुत सब्र और धीरज था। १६. हज़रत अयूब के से तेवर। यह एक पैग़म्बर थे जिनके शरीर में कीडे पड़ गये थे मगर इसपर भी उन्होंने ईश्वर से शिकायत न की। उनका सब्र मशहूर है।

हुसैन-इब्ने-अली[१] की शाहराहे-इश्क़[२] का राही,
है जिसके फ़क़्र[३] के ऐवान की लौंडी शहन्शाही,
असीरी जिसकी आज़ादी है, आज़ादी असीरी है,
अमीरी है फ़क़ीरी और फ़क़ीरी जिसकी मीरी[४] है,
जलालत अक्स है इक जिसके इजलाले-फ़रावाँ[५] का,
हुकूमत एक सफ़्फ़ी-आईना[६] है जिसके ऐवाँ का,
वो रूहे-शाने-आज़ादी[७] है और शायाने-आज़ादी[८],
है उसकी मुट्ठियों में नक़्शये-मैदाने-आज़ादी[९],
नदीमो[१०] पासबाने-सरहदे-हिन्दोस्ताँ[११] है वो,
ख़ुदा रक्खे मुदब्बिर पासबानो राज़दाँ है वो,
अदम[१२] में करवटें लेती है रूहे-इन्क़लाब अब भी,
यह आलम है तो आ सकता है ख़ैबर पर शबाब अब भी,

---

१. इमाम हुसैन—मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली के बेटे, जो कर्बला में शहीद हुये। २. मुहब्बत का बड़ा रास्ता ३. नेकी ४. सरदारी ५. बढ़ती हुई शान और ताक़त ६. दीवार पर टांगने वाला आईना ७. आज़ादी की शान की आत्मा ८. आज़ादी के क़ाबिल, ९. आज़ादी के मैदान का नक़्शा १०. नदीम—आवाज़ देनें वाला ११. हिन्दुस्तान की सरहद का रखवाला १२. नेस्ती, जहाँ कुछ न हो।

मुहम्मद अली

हजलये-क़ुद्स[1] बना गोशये-आराम[2] तेरा,
तेरे आग़ाज़ से बेहतर हुआ अन्जाम तेरा,
बन गई मशरिक़े-जावेद[3] तेरी सुबह-हयात[4],
तनतना[5] फैल गया हिन्द से ताशाम[6] तेरा,
ज़िन्दगी करने लगी रश्क तेरे मरने पर,
यूं हुआ अरसये-कौनैन[7] में कोहराम तेरा,
नाज़िशे-गबरो-मुसलमाँ[8] है तेरा मशरिबे-खास[9],
हरमो-दैर[10] में है मुस्तनद[11] इस्लाम तेरा,
मौत भी आये मिटाने तो कभी मिट न सके,
नक्श यूँ सफ़हये गेती[12] पै हुआ नाम तेरा,

---

१. हजला-दुल्हिन की सजी हुई मसहरी या जगह, हजलये-क़ुद्स—पाक जगह २. आराम करने का कोना ३. मशरिक़-पूरब, जावेद-अमर ४. ज़िन्दगी की सुबह ५. शान ६. शाम के मुल्क तक ७. दोनों जहाँ की वुसअत ८. मुसलमानों और आग को पूजने वालों के लिए फख्र का बाइस ९. खास उसूल १० मंदिर मस्जिद ११. एतवार के क़ाबिल १२. जमीन का पन्ना ।

कजरवी[१] भी तेरी आसूदये-मंज़िल[२] निकली,
कुछ ज़ियाँ[३] कर न सकी गर्दिशे-अय्याम[४] तेरा,
हम-नशीं[५] तायिरे[६] सदरा[७] की हुई रूहे-लतीफ़[८],
क़स्रे-किमरा[९] से सर-अफ़राज़[१०] रहा बाम तेरा,
जिस्मे-पाकत कि अज़आलूदगीये-खाक-गुज़श्त[११],
दफ़्न शुद ज़ेरे-ज़मीं वज़सरे अफ़लाक गुज़श्त[१२],

---

१. टेढ़ी चाल २. मंज़िल पर पहुँचने वाली ३. नुक़्सान ४. ज़माने का चक्र ५. साथी ६. तायिर-चिड़िया ७. सातवें आस्मान पर बेरी का एक दरख्त ८. कोमल आत्मा ९. किसरा का महल, किसरा-ईरान के बादशाहों की उपाधि (लक़ब) १०. ऊँचा ११. जिस्मे···गुज़श्त–तेरा पवित्र तन मिट्टी की गन्दगी से पाक था १२. दफ़्न·········गुज़श्त –ज़मीन में गाड़ा गया और आस्मानों से गुजर गया।

मेरे वतन की शफ़क़[1]

तुलूए-मेहरे-गुलिस्ताँ[2] मेरे-वतन की शफ़क़ से,
जहूरे[3] ख़ूने-शहीदाँ[4] मेरे वतन की शफ़क़ से,
मेरे वतन की शफ़क़ से नमूदे[5] लालओ-सौसन[6],
शुहूदे[7] सुम्बुलो[8] रेहाँ[9] मेरे वतन की शफ़क़ से,
मेरे वतन की शफ़क़ से जमाले-नूर[10] नुमायाँ,
चिराग़े-तूर[11] फ़रोज़ाँ मेरे वतन की शफ़क़ से,
है इनइकास[12] महो-अंजुमो-फ़लक[13] का ज़मीं पर,
इक आईना है बियाबाँ मेरे वतन की शफ़क़ से,
वो चाँद हो कि सितारे बहार हो कि गुलिस्ताँ,
हर एक शय है फ़रोज़ाँ मेरे वतन की शफ़क़ से,

---

१. शाम की लाली २. तुलू—निकला, मेहरे-गुलिस्ताँ—बाग़ का सूरज ३. जहूर-जाहिर होना ४. शहीदों का ख़ून ५. नमूद—दिखावा ६. लाला—अफ़ीम का फूल। सौसन—एक नीले रंग का फूल (शाम की लाली और उसके साथ की नीलिमा से उपमा है) ७. शुहूद—ज़ाहिर होना ८. सुम्बुल—बालछड़, ख़ुशबूदार घास ९. नाज़बू, एक क़िस्म का फूल १०. रोशनी का हुस्न ११. तूर का दीपक १२. साया १३. चाँद, तारे और आकाश।

फ़लक पै माहे-मुनव्वर[१] की रोशनी पै न जाओ,
ये शमा भी है फ़रोज़ाँ मेरे वतन की शफ़क़ से,
हज़ार मयकदा-दरबर[२] है कोहसारे-हिमाला[३],
है बामो-दर पै चिराग़ाँ[४] मेरे वतन की शफ़क़ से,

फ़ज़ा तमाम ज़माने की लाला-ज़ार[५] बनी है,
शफ़क़ के रंग से और नूर से बहार बनी है।

ये आरज़ू है शफ़क़ इक ज़मीन पर भी खिला दूँ।
वतन की ख़ाके-मुक़द्दस[६] पै अपना ख़ून बहा दूँ,
उठाऊँ सीनये-ज़ख़्मी[७] से तार-तार गरेबाँ,
मैं अपने दामने-ख़ूँ-रेज़[८] को फ़ज़ाँ में उड़ा दूँ,
जो मेरे सीनये-मजरूह[९] में अमानते-ग़म[१०] है,
कोई कहे तो वो ख़ूँ-बार आईना भी दिखा दूँ,
अगर उरूसे-वतन[११] की जबीं तिलक से हो ख़ाली,
तो दिल को चीर के दरियाये-रंगो-नूर[१२] बहा दूँ,
अगर शफ़क़ का तख़य्युल[१३] न इस पै भी हो मुकम्मल,
तो उठ के लश्करे-हस्ती[१४] में तेज़ आग लगा दूँ,

---

१. चमकता हुआ चाँद २. बग़ल में हज़ार शराबख़ाने दबाये ३. हिमालय पहाड़ ४. रोशनी ५. फूलों की जगह ६. पवित्र धरती ७. ज़ख़्मी छाती ८. ख़ून में डूबा हुआ आँचल ९. ज़ख़्मी सीना १०. बिपता की अमानत ११. वतन की दुल्हन १२. रोशनी और रंगों का दरिया १३. भाव १४. जीवन की फ़ौज।

शदीद आग से रोशन हों ख़ेमा-हाये-ग़ुलामी[१] ,
हर एक हल्क़ये-ज़ंजीर[२] को फ़तीला[३] बना दूँ,
उधर फ़लक पै शफ़क़ हो इधर ज़मीं पै शफ़क़ हो,
नुमूदे ख़ूँ से मेरे चेहरओ-जबीं[४] पै शफ़क़ हो।

१. ग़ुलामी के ख़ेमे २. ज़ंजीर की कड़ियाँ ३. बत्ती ४. मुखड़ा और माथा।

हैदर अली

अभी तक है श्रीरंगपटम की ख़ाक में गर्मी,
है बाक़ी क्या फ़ज़ा में मिजमरे[1] हैदर की चिनगारी,
वह चिनगारी जो थी ख़ालिद[2] के आतशज़ार[3] का हासिल,
वह चिनगारी जो थी तारिक़[4] के नूरोनार[5] का हासिल,
वह क़िन्दीले-हमीयत[6], वह सिराजे-बाबे-आज़ादी[7],
सिखाई जिसने बाबर को कभी आफ़ाक़-ईजादी[8],
अमानत वह उमर[9] की वह अता[10]—बाबे-इमामत[11] की,
ज़मानत वह विग़ा की वह सनद ज़ौक़े-शहादत[12] की,
सरे जमना मुग़ल के जाँ-नशीं[13] ने खो दिया जिसको,
लबे कावेरी इक आतिश-सिफ़त[14] ने पा लिया जिसको।

---

१. मिजमर—अंगीठी २. ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत मुहम्मद के एक साथी जिन्हों अरब और इराक़ के मुल्कों को फ़तह किया और किसी लड़ाई के मैदान में नहीं हा ३. आग की जगह ४. एक इस्लामी जनरल जिसने अफ्रीका के किनारे पर उतर कर अप किश्तयों को जला दिया कि उसके सिपाही वापस न जा सकें ५. रोशनी और आ ६. ग़ैरत का फ़ानूस ७. सिराज-चिराग़, बाबे-आज़ादी—आज़ादी का दरवाज़ा ८. दुनि पैदा करना, आफ़ाक़—सारी दुनिया ९. मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा १०. देन ११. सरदा का दरवाज़ा, हज़रत इमाम हुसैन का फ़ैज़ १२. जान देने का चस्का १३. जगह पर बैठ वाला १४. आग की सिफ़त रखनेवाला।

नवाये-मस्त[१] फूटी परदा-हाये साज़े-इमकाँ[२] से,
कोई जाकर यह कह दे रूहे अब्बासे क़ुली खाँ[३] से,
कि जिस आहंग को तूने असीरे-साज़[४] रक्खा था,
ज़मीं से ता-फ़लक़[५] है आज उस आहंग[६] का चर्चा,
वह नाफ़ा[७] जिस को गोशों में छुपाया था खुबासत[८] ने,
मअत्तर[९] हो गया सारा जहाँ उसके तअतुर[१०] से,
इधर देहली में शब को टिमटिमाई शमए-तैमूरी[११],
उधर देवनहली[१२] में जगमगाया महरे–बहलोली[१३]

कमाले-औजो-अज़मत[१४] देख कर कोनो-मकाँ[१५] काँपे,
ज़मीं लरज़ी सितारे झिलमिलाये अस्माँ काँपे।

वह सैलाबे-शुजाअत[१६] और वह तूफ़ाने-जवाँमर्दी,
वह जिससे लरज़ा-बरअन्दाम[१७] थी दुनियाये-अफ़रंगी[१८],
वह दाइये–वतन[१९] वह आशिक़े–आज़ारे–आजादी[२०],
वह मन्नादे-हमीयत[२१] वह अलम-बरदारे-आज़ादी,

---

१. मस्त आवाज २. दुनिया से मुराद है ३. अब्बास क़ुली ख़ाँ ने हैदरअली और उसके भाई शहबाज को बचपन में नक्क़ारों के अन्दर बन्द करके चमड़ा मढवा दिया था ४. बाजे में बन्द ५. आकाश तक ६. आवाज ७. कस्तूरी की थैली ८. नापाकी ९. खुशबू में बसा हुआ १०. खुशबू ११. तैमूर का दीपक, मुग़लों के आख़िरी बादशाह बहादुरशाह की तरफ़ इशारा है १२. श्रीरंगापटम में एक जगह १३. बहलोल का सूरज १४. बड़ाई और शान की इन्तिहा १५. जमीन और आस्मान १६. बहादुरी का तूफ़ान १७. कँपकपाहट १८. अंग्रेजों की दुनिया १९. वतन के लिए बुलाने वाला, दाई–बुलानेवाला २०. आजादी का दीवाना २१. ग़ैरत की आवाज़ देने वाला।

जवानी का मुरक़्क़ा[१] आईना रूहे-शुजाअत[२] का,
वह इक मययार[३] सरतापा[४] कमाले-अज़्मो-हिम्मत[५] का,
वह पैग़ामे-तग़य्युर[६] वह जहाँने-मर्ग[७] की आँधी,
वह इक अब्रेफ़ना[८] तारी[९] ओ सारी[१०], सारीओ जारी,
तसव्वुर उसका राशा—आफ़रींने—ख़ल्वते—बेली[११],
तख़य्युल उसका लरज़ा कोशे रूहे-अज़्मे-अफ़रंगी[१२],
वतन का सन्तरी था पासबाने-हिन्द[१३] था हैदर
नदीमे—हुर्रियत[१४] था राज़दाने-हिन्द[१५] था हैदर,
समन्दर की तरह पैहम-रवाँ था और दवां[१६] था वह,
यक़ीनन ज़ामिने—आज़ादिये—हिन्दोस्ताँ[१७] था वह,
क़सीदा पढ़ रही थी ज़िन्दगी में ज़िन्दगी जिसका,
वक़ा[१८] जिसके लिये बाज़ी[१९] फ़ना इक खेल थी जिसका,
निगहदारे-चनागीरी[२०] ओ कावेरी ओ माही[२१] था,
बराये—ग़ासिबाने-हिन्द[२२] इक क़हरे-इलाही[२३] था,

---

१. तस्वीर २. बहादुरी की आत्मा ३. दर्जा ४. सर से पाँव तक ५. हिम्मत और इरादे की इन्तिहा ६. क्रांति का सन्देसा ७. मौत की दुनिया ८. मौत की घटा ९. छाया हुआ १०. गुज़रनेवाला ११. कर्नल बेली की ख़ल्वत में कँपकपी पैदा करने वाला १२. तख़य्तुल···अफ़-रंगी-अंगरेज़ों के इरादों की आत्मा को थरथरा देने वाला १३. हिन्दुस्तान का रखवाला १४. आज़ादी की आवाज़ देने वाला १५. हिन्द के भेद जानने वाला १६. दौड़ता हुआ १७. हिन्दु-स्तान की आज़ादी की ज़मानत करने वाला १८. ज़िन्दगी १९. खेल २० चनागिरी का रख-वाली करने वाला, चनागिरी-दकन हिन्दुस्तान में एक जगह २१. दकन में एक जगह २२. हिन्दुस्तान को लूटने वालों के लिये २३. ख़ुदा का क़हर

अभी शाहिद है पोलीपूर का हर ज़र्रये–बाक़ी,
कि दस्तो–बाज़ुये–हैदर[१] में था ज़ोरे–यदुल्लाही[२],
हवाये-तुन्द[३] था तूफ़ाने–बर्क़ोबाद[४] था हैदर,
निशाने-क़हरे–यज़दाँ[५] सल्तनत–ईजाद[६] था हैदर ।

अगर यह सच है मौत आती नहीं तुझसे मुजाहिद[७]को,
अदम[८] की ज़िन्दगी भाती नहीं तुझ से मुजाहिद को,
तो उठ और उठके ज़िन्दा क़िस्सये-तीरो-तबर[९] कर दे,
दिले-तूती[१०] को बोसा देके शाही[११] का जिगर कर दे,
असीरी[१२] सर-नुगूँ[१३] थी और ग़ुलामी मुँह छुपाती थी,
तेरी ताक़त के आगे अस्करीयत[१४] काँप जाती थी,
तदब्बुर[१५] ने तेरे टुकड़े किया दामाने–ग़द्दारी[१६],
हिला डाला तेरे इक़बाल[१७] ने मैदाने–ग़द्दारी,
कभी शेरे–नइस्ताँ था[१८] कभी शाहीने-कोही[१९] था,
ज़मींनो–आस्माँ ज़ख्मी थे जिसके वह शिकारी था,
तेरे शानों में जुर्रत ने लगाये थे अजब शहपर,
कि मरकज़ से उड़ा और साँस ली मदरास के दर पर,

---

१. हैदर के बाज़ू और हाथ २. ख़ुदा के हाथ का ज़ोर ३. आँधी ४. बिजली और हवा का भूचाल ५. ख़ुदा के क़हर का निशान ६. राज क़ायम करने वाला ७. लड़ने वाला, कोशिश करने वाला ८. जहाँ कुछ न हो ९. तीर और तबर की कहानी १०. तूती का दिल ११. बाज़ १२. क़ैद १३. सर झुकाये हुए १४. फ़ौजीपन १५. अक़्लमन्दी १६. ग़द्दारी का आँचल १७. खुश क़िस्मती १८. बांसों के जंगल का शेर १९. पहाड़ी बाज़ ।

तेरी परवाज़[१] पर ग़द्दारो–ग़ासिब सब ही हैराँ थे,
बहुत सरदर-गरेबाँ[२] मुँह-परेशाँ[३] ख़स्ता-सामाँ[४] थे,
तालिल्लाह[५], क्या शहकारे–क़ुदरत[६] थे तेरे बाज़ू,
जो शोला था कमीदानी[७] तो बिजली नौजवाँ टीपू
वफ़ा के चर्ख़ पर दो बिजलियाँ थीं मुस्तरो-रक़्साँ[८],
कभी मुस्तर, कभी रक़्साँ, कभी उरियाँ, कभी पिनहाँ[९],
तेरा जबरूत[१०] क्या कतबा–निगारे–कामयाबी[११] था,
दिले-अग़यार[१२] पर अपनी जलालत कर गया कन्दा[१३],
तेरे मरने ने की इक मुहर क़िरतासे-ग़ुलामी[१४] पर,
कि तेरी ज़िन्दगी थी ज़र्ब[१५] अहसासे–ग़ुलामी पर,
तेरे उठते ही माहौले-दक़न[१६] पर छा गये ग़ासिब[१७],
दक़न पर छा गये, गंगो-जमन पर छा गये ग़ासिब,
न है वह साज़े–हिन्दी[१८] और न वह आहंगे-शामी[१९] है,
मताए–ज़िन्दगानी[२०] इक फ़क़त अपनी ग़ुलामी है,

इलाही पैकरे-मुर्दा[२१] में करदे ज़िन्दगी पैदा,
ज़रूरत है कि फिर हो आज इक हैदरअली पैदा।

---

१. उड़ान २. गरेबान में सर डाले ३. बाल बखेरे ४. फटे हाल ५. तहसीनी नारा, सराहना ६. क़ुदरत का बेमिसाल मास्टर पीस ७. हैदरअली का जनरल ८. मुस्तर-बेचैन, रक़्साँ नाचती हुई ९. छुपी हुई १०. दबदबा ११. कामयाबी का कतबा लिखने वाला, कतबा-स्मारक १२. ग़ैरों का दिल १३ लिखना १४. ग़ुलामी का काग़ज़ १५. चोट १६. दकन के आसपास और दकन पर १७. अंग्रेज़ १८. भारत का बाजा १९. शाम मुल्क की आवाज़ २०. जीवन की पूँजी। २१. बेजान शरीर।

टीपू सुलतान

दकन का ज़र्रा ज़र्रा दहर में अफ़लाक-पैदा[1] है,
श्री रंगापटम की ख़ाक हमदोशे–सुरैया[2] है,
शहीदाने वतन का मयकदा है, ख़ुमकदा[3] है यह,
जो फुँकती है जिगर के सोज़ से वह कीमिया है यह,

क़यामत तक बहेगा मातमी अन्दाज़ में हर सू,
यह कावेरी यह चश्मे-नौ-उरूसे-वक़्त[4] का आँसू,
शहीदे–कर्बला[5] की रूह में जो सोज़ था 'सागर',
उसी ने ख़ाके-टीपू[6] को बनाया कीमिया 'सागर',

निगह में रोशनी दिल में जुनूने–आशिक़ी[7] पैदा,
नज़र मजज़ूब[8] की जज़्बे–दो–आलम[9] कर गई पैदा,

---

१. आकाश पैदा करने वाला २. आकाश पर तारों का झुरमुट (तारों के झुरमुट की बराबरी करने वाली मिट्टी) ३. शराब के मटकों की जगह ४. समय की नई नवेली दुल्हिन की आँख का आँसू (कावेरी नदी से उपमा है) ५. हज़रत इमामहुसैन जो कर्बला में शहीद किये गये ६. टीपू सुल्तान की मिट्टी ७. प्रेम का पागलपन ८. जज़्ब होजाने वाला। इस्लामी सूफ़ीमत में दो तरह के फ़क़ीर होते हैं, एक मजज़ूब और एक सालिक। मजज़ूब को तनबदन की सुध नहीं रहती और कहा जाता है कि वह ईश्वर में बिलकुल खो जाता है मगर सालिक अपने होश में रहता है। टीपू सुल्तान को एक मजज़ूब फ़क़ीर ने दुआ दी थी ९. दोनों दुनियाओं की कशिश

वह सूरज जिसकी ज़ौ[१] से क़िस्मते–देवनहल्ली चमकी,
वह क़िस्मत जो अमीने-अज़मते-इन्सानियत[२] निकली,
वह इक सैलाबे–शौक़[३] इक हमलये-तूफ़ाने-ख़ुद्दारी[४]
वह तस्वीरे–जहादे–इश्क़[५] शहकारे–जवाँ–मर्दी[६],
तजम्मुल[७] जिसका दुनिया में नज़र–सोज़े–फ़रंगी[८] था,
बहादुर काँपते थे ज़िक्र से जिसके वह जंगी था,
अमीरे–ग़ाज़ियाँ[९] मीरे–शहीदाने-मुहब्बत[१०] था,
ग़ुरूरे–हुर्रियत[११] सद-नाज़िशे–सिर्रे–शहादत[१२] था,
वह तनहा इक शहीदे मुल्को–मिल्लत था ज़माने में,
कि जिसका ख़ून गहरे रंग भरता है फ़साने में,
वह नेज़ा जो गड़ा था संगज़ारे[१३] क़ल्बे-गेती[१४] में,
वह खंजर जज़्ब था जो सीनये–रंगीने–हस्ती[१५] में,
समन्दर आदमी के रूप में सरगोशे-मस्ती[१६] था,
कि तूफ़ाँ सूरते–आदम[१७] में शोर–अफ़ज़ाये–हस्ती[१८] था,
वह मुस्लिम जिसने शमए-दीन[१९] को ताबिन्दगी बख़्शी,
वह हिन्दी जिसने अहसासे-वतन को ज़िन्दगी बख़्शी,

---

१. रोशनी २. आदमियत की बड़ाई की अमानत रखने वाला ३. शौक़ का तूफ़ान ४. आत्माभिमान के तूफ़ान का हमला ५. प्रेम की लड़ाई की तस्वीर ६. जवाँमर्दी की बेमिसाल तस्वीर ७. सुन्दरता ८. अंग्रेज़ों की निगाहों को जलाने वाला ९. बहादुरों का सरदार १०. प्रेम के शहीदों का सरदार ११. आज़ादी का घमण्ड १२. शहादत के सौ भेदों का फ़ख़्र १३. संगज़ार-पत्थरों की जगह १४. धरती का दिल १५. जीवन की रंगीन छाती १६. मस्ती से कानाबाती करने वाला. १७. आदमी की सूरत १८. ज़िन्दगी का शोर बढ़ाने वाला १९. धर्म का दीपक ।

बुतो-महराबो–मिम्बर[१] सबके सब भरते हैं दम जिसका,
अभी तक देखते हैं रास्ता दैरो–हरम जिसका,

अगर अपने इरादों में वह ग़ाज़ी कामराँ[२] होता,
जहाँ ग़ासिब हैं उस मंज़िल पै अपना कारवाँ होता।

मुजाहिद अय मुजाहिद, अय मेरे सुल्ताने आज़ादी,
कलीदे–बाबे–अज़मत[३] वारिसे–एवाने–अज़ादी[४],
जलालत तेरी साबित रूहे–अक़वामे–कलीसा[५] पर,
हुकूमत तेरी क़ायम अंजुमो माहो सुरैया पर,

इशारों से तेरे पायाब[६] हो जाते थे दरिया भी,
यदे-क़ुदरत[७] में तेरे दीन भी था और दुनिया भी,
हज़ारों शेर तेरी रूह में बेदार रहते थे,
झपटने के लिए अग़यार पर तैयार रहते थे,

तेरा जलवा नशाते–आरज़ूये–शौक़े–बेली[८] था,
तेरा पाये–हसीनो-पाक मसजूदे–फरंगी[९] था,
बलन्द अज़ क़ैदे–रंगो–नस्ल दीनो नेकियो शर था[१०],
मुहब्बत का पयामी और अख़ूवत का पयम्बर था,

---

१. मूर्ति, महराब और सिंहासन २. खुश, कामयाब ३. बड़ाई के दरवाज़े की कुंजी ४. आज़ादी के राजमहल का मालिक ५. ईसाई क़ौमों की आत्मा ६. ख़ुश्क ७. क़ुदरत का हाथ, यहाँ ताक़त और अख़्त्यार के हाथ से मुराद है ८. कर्नल बेली की कामना को ख़ुशी ९. पाये··· फरंगी—तेरे पवित्र और सुन्दर चरणों पर अंग्रेज़ सिजदा करते थे; मुराद इज़्ज़त करने और डरने से है। १०. बलन्द··· था–तू रंग और नस्ल के बन्धन, धर्म, नेकी और बुराई सबसे ऊँचा था।

शराबे–इश्क़[१] का हाथों में उसके जाम था 'साग़र',
कि सुल्ताँ-साकि़ये–मयख़ानये–अक़्वाम[२] था 'साग़र'
जो उसका नग़मये-रंगीं[३] किसी ने सुन लिया होता,
तो अपने हाथ होते और साज़े-एशिया[४] होता।
सुरूरे-मर्ग[५] इक अदना सी मस्ती साग़रे-दिल[६] की,
हयाते-जाविदां[७] इक मौज तेरे जज़्बे-कामिल[८] की,
कहीं दुनिया हिला सकती है इनको सइये-बातिल[९] से
गड़े हैं सीनये-तारीख़[१०] में ख़ूनी-अलम[११] तेरे,
इन्हें क़ायम करेंगे हम कभी औजे-हिमाला[१२] पर,
तेरा इजलाल[१३] ज़िन्दा होके छा जायेगा दुनिया पर,
तेरी रूहे-मुक़द्दस[१४] रहबरे-अहरार[१५] है सुल्ताँ,
फ़ज़ा बेदार है आतश-फ़िशाँ[१६] तैयार है सुल्ताँ,
वतन में एक असरे-आतशीं[१७] फिर आने वाला है,
ज़माना आतशो ख़ूँ में बदल ही जाने वाला है,
दिलों में फिर जुनूने शौक़ की इक मौज पैदा है,
तेरा हर क़तरये-ख़ूँ[१८] इक समन्दर बनने वाला है,
इलाही जल्द दुनिया में ज़माने-इन्तिक़ाम[१९] आये,
जुनूं[२०] की राह में इक दिन मेरी वहशत[२१] भी काम आये।

---

१. प्रेम मदिरा २. क़ौमों के मयख़ाने का साक़ी ३. रंगीन गीत ४. एशिया का बाजा ५. मौत का नशा ६. मन का जाम ७. अमर जीवन ८. भरपूर कशिश ९. झूठी कोशिश १०. इतिहास का सीना ११. खून में डूबे हुए झंडे १२. हिमालय की चोटी १३. शान शौक़त १४. पवित्र आत्मा १५. आज़ादों को रास्ता बताने वाली १६. ज्वालामुखी १७. आग से भरा ज़माना १८. खून की बूंद १९. बदला लेने का ज़माना २०, २१. पागलपन।

कारवाने इन्क़लाब

यह कविता मेरी एक नई किताब का पहला हिस्सा है। इसकी बुनियाद ज़माने के उन ख़यालों पर रखी गई है जो संसार भर में नई सामाजिक रूह की पैदावार हैं। क्रान्ति और बेदारी ने समाज के जिन दबे हुये हल्क़ों में जागृति की लहर दौड़ाई है, इन सारे हल्क़ों को एक क़ाफ़िले की सूरत में दिखाया गया है और इन्हीं के मुँह से इनकी बिपता बयान की गई है। क़ाफ़िले का आम ख़ाका खींचकर सबसे पहले एक हरिजन औरत, सुन्दरी भंगियों की बिपता बयान करती है। यह हिस्सा यहीं तक है जो अपनी जगह एक पूरी कविता है। दूसरे हिस्सों में दूसरे केरेक्टर आयेंगे। कविता के आख़िर में मैंने अपना ख़याल ज़ाहिर किया है कि अगर इन दुखियों और ग़रीबों के लिए आने वाले ज़माने में अच्छाई और बेहतरी का कोई रास्ता न निकाला गया तो दुनिया और ज़िन्दगी का अम्न ख़तरे में पड़ जायगा; और हम उस आदर्श को भी पूरा न कर सकेंगे, जिसका पूरा करना इन्सानियत का पहला फ़र्ज़ है।

—'साग़र'

कारवाने-इन्क़लाब

(१)

मरहबा[१], है ग़ैज़[२] में रूहे बनी-नौए-बशर[३],
इन्क़लाब आया ज़माने का दरीचा खोलकर,
ज़लज़ला बनकर वह आया कारवाने इन्क़लाब,
जाग उठा ज़र्रे ज़र्रे में जहाने-इन्क़लाब[४],
मुफ़लिसों और बदनसीबों का यह बेकस कारवाँ,
फिर भी अपनी ताक़तों में यह फ़लक-रस[५] कारवाँ,
जिनके रुख़ हैं धूप की सख़्ती से कुम्हलाये हुये,
हों कमल जैसे कनारे-आब[६] मुरझाये हुये,
जिस्मे-उरियाँ पर हिजाबे-बेकसी[७] की धज्जियाँ,
सख़्तो-नाहमवार-चेहरों[८] पर मशक़्क़त के निशाँ,

---

१. वाह शाबाश, शुभागमन, खुशआमदीद २. क्रोध ३. इन्सान की नस्ल ४. क्रान्ति की दुनिया ५. आकाश पर पहुंचने वाला, ऊँची हिम्मत वाला ६. पानी के किनारे ७. बेकसी का पर्दा ८. गढ़े पडे हुये चेहरे ।

चीथड़ों का इक फटीचर गाउन सा पहने हुये,
ज़िन्दगी है फ़ाक़ा-मस्ती की अबा[१] पहने हुये,
मुँह-परेशाँ[२] ख़ाक़-आलूदा अरक़-रेज़ो[३] नहीफ़[४],
जिनके चेहरों की ग़िलाज़त[५] से निगाहें तक कसीफ़[६]
यह जबीं पर मोटी मोटी धारियाँ तेवर पै बल,
दिल में तूफ़ाने-बग़ावत[७] आँख में सोज़े-अमल[८],
पंजाकश[९] हाथों में भारी फावड़े एलाने-हाल[१०],
यह कुल्हाड़ी, यह वसूले, यह हथौड़े, यह कुदाल,
बोसा देती है जवानी सिजदा करता है शबाब,
मरहबा-सद्-मरहबा[११], अय कारवाने इन्क़लाब।

(२)

देव-पैकर[१२] उस बहादुर का भला क्या है जवाब,
बेलचा है जिसके हाथों में बअन्दाज़े-शबाब[१३]
नेज़ये–चश्मो–नज़र[१४] को बेगुमाँ[१५] ताने हुये,
भूख है क़ल्बे-इमारत[१६] पर सिना[१७] ताने हुये,
वह जवाने-पील-तन[१८] वह इन्क़लाबी सूरमा,
भीड़ से निकला वह डण्डे को घुमाता झूमता,

---

१. एक ख़ास लिबास जिसे कुर्ते और अचकन पर पहनते हैं २. बाल बखेरे ३. अरक़-रेज़-पसीना बरसाने वाला ४. कमज़ोर ५. गन्दगी ६. मैली ७. बग़ावत का तूफ़ान ८. अमल की जलन, काम करने की ख़्वाहिश ९. पंजा लड़ाने वाले १०. क्रान्ति का नोटिस ११. क्या कहने हैं, ख़ुश आमदीद १२. देव का सा तन रखनेवाला १३. जवानी के अन्दाज में १४. आँखों और निगाहों की बर्छियाँ १५. आज़ादाना १६. अमीरी का दिल १७. तलवार १८. हाथी जैसे बदन वाला

यह दराँती यह गँडासे, लाठियाँ, तेग़ो-तुफ़ंग[१],
मरहबा सद मरहबा, यह जंग, यह सामाने-जंग[२],
बद दुआयें बेकसी की आह और फ़ाक़ों का ज़हर,
अंतड़ियों की तिलमिलाहट हसरते-कुश्ता[३] का क़हर[४],
अस्रे-नौ[५] के अस्लहाते-जंग[६] का मुस्किद्-जवाब[७],
मरहबा सद् मरहबा, अय कारवाने इन्क़लाब।

(३)

वह अलमदारे-तग़ैयुर[८] झूमकर आगे बढ़ा,
नारये-या–इन्क़लाब[९] उसने वो मस्ती में कहा,
ज़र्ब से जिसकी ज़माने का कलेजा हिल गया,
देख कर परचम को ख़ूने-ज़िन्दगी गरमा गया,
ख़ुद व ख़ुद उठने लगे रूये-मशीयत[१०] से नक़ाब,
मरहबा सद् मरहबा, अय कारवाने इन्क़लाब ।

(४)

वह दिलेर आये तग़ैयुर[११] का रजज़[१२] गाते हुये,
सूरे-इस्राफ़ील[१३] को नारों से शर्माते हुए,

---

१. तलवार और बन्दूक़ २. लड़ाई का सामान ३. मरी हुई उम्मीद ४. बला ५. नया जमाना ६. लड़ाई के हथियार ७. चुप कर देने वाला जवाब ८. क्रान्ति का झण्डा उठाने वाला ९. इन्क़लाब का नारा १०. ख़ुदा की मर्ज़ी का चेहरा ११. इन्क़लाब १२. कविता की उन्नीस बहरों में से एक बहर का नाम, वीर रस की कविता १३. सूर—नरसिंहा, इस्राफ़ील—एक फ़रिश्ते का नाम है जो क़यामत के दिन नरसिंहा बजायगा। कहा जाता है कि इसके असर से ज़िन्दा मुर्दा और मुर्दा ज़िन्दा हो जायेंगे ।

हम तग़ैयुर का हैं इक ज़िन्दा नमूना दहर[1] में,
हम तजद्दुद[2] का हैं बामानी[3] ख़ुलासा[4] दहर में,
है इरादों का हमारी ज़ात सर-चश्मा[5] सुनो,
मरकज़े-हरसाज़[6] है जो, हम हैं वह नग़्मा सुनो,
सिक़्ल[7] का मरकज़ हैं हम, जमहूर[8] की मंज़िल हैं हम,
जिस्म है जनता तो जनता के दिमाग़ो-दिल हैं हम,
हम ख़यालो-ज़हन है जमहूरे-आलम[9] के सुनो,
मानीओ-तफ़सीर[10] हैं दस्तूरे-आलम[11] के सुनो,
बख़्शते हैं हम नवा[12] ख़स्ता-हल्क़[13] के वास्ते
बख़्शते हैं हम सदा ऐलाने-हक़[14] के वास्ते,
एक मजमूआ हैं कुल मख़लूक़[15] की ताक़त का हम,
रुख़ बदल देंगे निज़ामे-शअ़बये-क़ुदरत[16], का हम,
मोड़कर रख देंगे ख़ंजर हर किसी जल्लाद का,
तंग छल्ला हैं हमारे हाथ भी फौलाद का,
हम बड़े हैं, सख़्त हैं, हैरानकुन[17] हैं, मस्त[18] हैं,
हम अमर हैं कारकुन[19] हैं रूहे बूदो-हस्त[20] हैं,

---

१. दुनिया २. नया होना ३. बामानी-जिसमें मतलब हो ४. निचोड़ ५. सोत और मरकज़ ६. हर बाजे का मरकज़, यानी हम वह गीत हैं जिससे हर सितार में सांगीत की आत्मा काम करती है। ७. शक्ति, कशिश ८. जनता ९. संसार की जनता १०. मतलब और बयान करना ११. संसार के तरीके और कानून १२. आवाज़ १३. बैठा हुआ गला १४. सच्चाई का ऐलान १५. जोड़, जमा १६. जीव जन्तु १७. प्रकृति के महकमे का सिस्टम १८. भौचक्का करने वाले १९. काम करने वाले २०. होने और न होने की आत्मा।

हम निडर हैं, मर्द है मग़रूर हैं, ज़ी-शान[१] हैं,
हम शरर[२] हैं बर्क़[३] हैं, सैलाब[४] हैं, तूफ़ान[५] हैं
हम अटल हैं, दहर में अहरामे-मिश्री[६] की तरह,
मुस्तक़िल दुनिया में हैं क़ुदरत की शक्ती की तरह
हम हैं इस दुनियाये-आबो-गिल[७] में क़ुदरत का जवाब,
मरहबा सद मरहबा, अय कारवाने इन्क़लाब ।

(५)

देखना वह आई उनकी औरतें बा-हालेज़ार[८].
ज़िन्दगानी का जनाज़ा, नौजवानी का मज़ार,
जिनकी दोशीज़ा[९] तमन्नाओं को फ़ाक़ा[१०] खा गया,
भूक के शोलों से जिनका गुलसिताँ मुरझा गया,
जिनकी आँखें कासए-साइल[११] निगाहें दुखभरीं,
हर नज़र में हाथ फैलाये हुए हैं कमतरीं[१२],
जिनकी आँखें नूर से ख़ाली हैं और बैठी हुई,
मौत के ख़ूंख्वार शोलों से मगर दहकी हुई,
ख़ौफ़-आगीं[१३] सुर्ख़ लरज़ा-आफ़रीं[१४] वहशतज़दा[१५],
मौत के तारीक-ग़ारों की तरह दहशतज़दा[१६],

---

१. शान वाले २. चिनगारी ३. बिजली ४. तूफान ५. भूचाल ६. पिरामिड, मिश्र के पुराने बादशाहों की कब्रें जो दुनिया की सात अजीब चीज़ों में हैं और पुरानी व मज़बूत हैं ७. मिट्टी और पानी की दुनिया ८. फटेहालों ९. कुँवारी १०. भूक ११. भिखारी का प्याला १२. छोटापन, ग़रीब १३. ख़ौफ़ से भरी हुई १४. कपकपा देनेवाली १५. जिस पर पागलपन का असर हो १६. ख़ौफ़ की मारी हुई ।

जिनके बालों की लटें उलझी हुई चिकटी हुई,
जिस तरह बीमार नागिन दुख से हो सिमटी हुई,
जिनके रुख़ आलाम[1] की शिद्दत[2] से हैं सरसों के फूल,
और इन फूलों पै बेदादे-ज़माना[3] की है धूल,
जिनकी सूजी पिंडलियों में ख़ैर से ज़ेवर यह हैं,
ख़ूं-ज़दा छालों के घुंघरू आबलों की छागलें,
जिनके कूलों पर घड़ों और बोरियों के हैं निशाँ,
इन निशानों से भी सुनिये नाज़ुकी[4] की दास्ताँ,
मस्त हो सकते थे शायिर इनके हर अन्दाज़ से,
यह भी चल सकतीं थीं सौ-सौ लोच सौ-सौ नाज़ से,
आह लेकिन भूक ने इनकी नज़ाकत लूट ली,
क़ुदरते-फ़ैयाज़[5] ने दी थी जो दौलत लूट ली,
जिनकी कमरें बार से फ़ाक़े के हैं टूटी हुई,
बेगमों और रानियों के नाज़ की लूटी हुई,
जिनके सीनों पर है उरियानी की चादर तार-तार,
भूक में मलफ़ूफ़[6] जोबन प्यास में लिपटी बहार,
दर-बदर साइल[7] जवानी सर-बसर[8] मुफ़लिस शबाब,
मरहबा सद मरहबा, अय कारवाने इन्क़लाब।

(६)

देखिये वह छटता जाता है ग़ुबारे-कारवाँ[9],
क़ुर्बे-मंज़िल[10] से नुमायाँ[11] मिशअलों का है धुआँ,

---

१. मुसीबतें २. सख़्ती ३. ज़माने का ज़ुल्म ४. कोमलता ५. दानी क़ुदरत ६. लिपटा हुआ ७. भिखारी ८. इस सिरे से उस सिरे तक ९. कारवाँ की धूल १०. मंज़िल के पास ११. ज़ाहिर

अपनी अपनी शक्ल ख़ुद हर शख़्स समझाने लगा,
साफ़ मंज़र का हर इक पहलू नज़र आने लगा,
भीड़ में इक सिम्त[1] कंकर कूटने वाली भी है,
हाथ में डण्डा लिये बूढ़ी पिसनहारी भी है,
नागफ़न हैं मालिनों के पास फूलों के बजाय,
झाड़ हैं हाथों में गुलशन के रसूलों[2] के बजाय,
दीदनी[3] है आज तो कम उम्र मामा[4] का सुहाग,
अधजली चूल्हे की लकड़ी हाथ में और मुँह में झाग,
रस्सियाँ डोलों की हाथों में है और पनहारियाँ,
सारियों के चीथड़े हैं चीथड़ों की सारियाँ,
तेज़ खुरपे हैं उन्हीं घसियारनों के हाथ में,
शहर के बाँके रहा करते थे जिनकी घात में,
इस तबाही ख़स्तगी[5] और भूक में यह इनका हाल,
आँख से शोले बरसते हैं निगाहों से जलाल,
सुन्दरी के हाथ में देखो वह रड़के का अलम[6],
तेग़ को शरमा रहा है आज तो पंजे का ख़म,
"मरहबा अय दौरे-इशरत[7], मरहबा सद मरहबा,
बाबुओं और सा'ब लोगों से मेरा पीछा छुटा।"
[हाँय, यह कैसी सदा है, चुप रहो ठहरो रुको,
छुपके इस टीले के पीछे इसकी बातें भी सुनो,

---

१. तरफ़ २. भेजा हुआ, गुलशन के रसूल या पयम्बर, बाग़ के फूल से उपमा है, ३. देखने के क़ाबिल ४. नौकरनी ५. थकान ६. झण्डा ७. ख़ुशी का ज़माना।

महतरानी रानियों से वीरबाला हो गई,
ख़ाक जस्ते-शौक़[१] में उड़कर सितारा हो गई।]
"मरहबा अय दौरे इशरत, मरहबा सद मरहबा,
बाबुओं और सा'ब लोगों से मेरा पीछा छुटा,
लाओ मुझको भी शराबे-अर्ग़वाँ[२] का एक जाम,
अय रफ़ीक़ो[३] मैं थी सदियों और क़रनों[४] की ग़ुलाम,
दान की उम्मीद में शामे-सहर होती रहीं,
ईद के इनआम में उम्रें बसर होती रहीं,
यूँ तो में यकसर[५] नजासत[६] थी ग़िलाज़त का निशाँ,
मुझ से छू जाना क़यामत था क़यामत अल-अमाँ,
हाँ मगर दस्ते-हवस को शर्मो-ग़ैरत कुछ न थी,
मुझको सीने से लगाने में कराहत कुछ न थी,
मेरे भंगी ने नहीं लूटी जवानी की बहार,
ख़ान साहब का हदफ़[७] थी, सेठ साहब का शिकार,
आह वह उतरन के कपड़े, वह पुरानी सदरियाँ,
मैल से मामूर[८] वह चिथड़े, वह जूँओं के मकाँ,
शहर में हर रात वह दौरे-शराबे-अर्ग़वाँ,
सुबह को दोपाई पर अशराफ़ की वह झिड़कियाँ,

---

१. शौक़ की उड़ान यानी उभरने और चमकने के शौक़ में २. सुर्ख़ शराब, सुन्दरी दसियों तहज़ीबों की पीसी हुई है और जुगों की थकी हुई है। इस थकावट के असर से वह क़ुदरती तौर पर शराब माँगती है ३. रफ़ीक़-साथी ४. क़रन-सदी ५. बिलकुल ६. नापाकी ७. निशाना ८. भरे हुए।

वह डपट, वह डाँट, वह धुतकार और वह झिड़कियाँ,
खुश्क बासी रोटियों के साथ ताज़ा गालियाँ,
वह सड़े सालन, वह जूठी पत्तलें, वह दाल भात,
अनगिनत नस्लों ने जूठन खाके काटी है हयात,
फ़ातिहा की रोटियाँ भूले से भी मिलती न थीं,
मेरी परछाई जो पड जाती तो धुलती थी ज़मीं,
लेकिन अब तैयार हो जायें खुदा–याने–समाज,[१]
एक एक जल्लाद से बदला लिया जायेगा आज,
आज घूंघट है न, सूखी रोटियों का इन्तिज़ार,
गालियाँ देता नहीं अब तिफ़्लके-सरमायादार[२]
पेट से बँधतीं नहीं अब रोटियाँ सूखी हुई,
मरहबा है रूहे-इन्साँ[३] क़ैदे–इन्साँ[४] से बरी[५],
जगमगायेगा जहाँ में अब हमारा आफ़ताब,
मरहबा, सद मरहबा, अय कारवाने इन्क़लाब।

---

१. समाज के खुदा २. साहूकार का बेटा ३. मनुष्य की आत्मा ४. इन्सान की क़ैद ५. आज़ाद।

इन्क़लाब का फ़र्मान

उठो और उठके निज़ामे-जहाँ[1] बदल डालो,
यह आस्माँ, यह ज़मीं यह मकाँ बदल डालो,
यह बिजलियाँ हैं पुरानी, यह बिजलियां फूंको,
यह आशियाँ[2] है क़दीम[3], आशियाँ बदल डालो,
हज़ार साल के तारों का क्या करेंगे हम,
हज़ार साल की यह कहकशाँ[4] बदल डालो,
ख़से-कुहन[5] से यह सैलाबे-नौ[6] नहीं रुकता,
ज़माने-नूह[7] की सब कश्तियाँ बदल डालो,
निज़ामे-क़ाफ़िला[8] बदला तो क्या कमाल किया,
मिज़ाजे-राहबरे-कारवाँ[9] बदल डालो,
फ़लक पै हँसते हुए बादबाँ[10] हों और कश्ती,
फ़ज़ाँ में रोते हुए बादबाँ बदल डालो,

---

१. दुनिया का तरीक़ा, व्यवस्था २. घोंसला ३. पुराना ४. आकाशगंगा ५. पुरानी ख़स या घास ६. नया तूफ़ान ७. हज़रते नूह का ज़माना ८. क़ाफ़िले की तरतीब ९. कारवाँ के सरदार का मिज़ाज १०. पाल ।

अँगीठियाँ हों बदस्ते–शमीमो–नकहते–गुल[१],
कुछ इस तरह रविशे–गुलसिताँ[२] बदल डालो,
हयात कोई कहानी नहीं हक़ीक़त है,
इस एक लफ़्ज़ से कुल दास्ताँ बदल डालो,
पकड़ के शैब[३] की रग में भरो शबाब का ख़ून,
दिले-ज़ईफ़[४] से क़ल्बे–जवाँ[५] बदल डालो,

हर एक ज़र्रे से पैदा करो नई दुनिया,
नये जहाँ से पुराना जहाँ बदल डालो।

---

१. फूल की ख़ुशबू और सुबह की हवा के हाथों में २. गुलिस्ताँ की हालत ३. बुढ़ापा ४. कमज़ोर दिल ५. जवान दिल।

नई तहज़ीब

गले पै जहल[1] के खंजर चला के आई हूँ,
में ख़ूने-मिल्लते-सहरा[2] बहा के आई हूँ,
कोई क़दीम[3] नज़रबाज़[4] मुझको भाँप न ले,
नज़र बचा के निगाहें चुरा के आई हूँ,

हर इक किरन में मेरी ज़िन्दगी के शोले हैं,
चिराग़े-ख़ानये-दहक़ाँ[5] बुझा के आई हूँ,
फ़रेब है मेरी तख़लीक़[6] ज़िन्दगी धोका,
जो जागते थे उन्हें भी सुला के आई हूँ,

है मौजज़न[7] मेरी रग रग में ख़ूने-इन्सानी,
जबीने-ज़ुल्म[8] पै टीका लगा के आई हूँ,
पटेल असीर[9] मेरी ज़ुल्फ़े-ख़म-ब-ख़म[10] का हुआ,
फ़क़ीहे-शहर[11] को मजनूँ बना के आई हूँ,

---

१. न जानना २. जंगल की क़ौम का ख़ून ३. पुराना ४. तोड़ने वाला ५. देहातों के झोंपड़े का दिया ६. पैदायश ७. लहरें मारता हुआ ८. ज़ुल्म का माथा ९. क़ैदी १०. कई बल खाई हुई ज़ुल्फ़ ११. शहर का क़ाज़ी

टपक रहा है जो यह ख़ूँ कसीफ़[१] जबड़ों से,
मैं सीना-हाय-ग़रीबाँ[२] चबा के आई हूँ,
हज़ार बाग़ उजाड़े हैं लाख वीराने,
तब इक हयात का ख़ाका बना के आई हूँ,
निकल गई हूँ जिधर भी बसद-जलालो-कमाल[३],
उधर ही एक क़यामत उठा के आई हूँ,

मगर हुआ है गुज़र जब भी कूए-दहक़ाँ[४] में,
मैं आबे-शर्मो-हया[५] से नहा के आई हूँ।

---

१. मैले २. ग़रीबों के सीने ३. शान और कमाल के साथ ४. देहाती की गली ५. लज्जा का पानी।

भारत माता का फ़र्मान

उट्ठो मेरे बाहोशो[१] जवाँकार सपूतो,
जो नींद से मदहोश हैं उनको भी जगादो,
जो हिन्द का बाग़ी है वह इन्सान का बाग़ी,
संसार से इन्सान के बाग़ी को मिटा दो,

आज़ादी के रस्ते में जो हाइल[२] हो वह बातिल[३],
बातिल ही नहीं हक़[४] भी अगर हो तो मिटा दो,
बेरज़्म[५] नहीं बज़्म की रौनक़ का अब इमकाँ[६],
जो शमा न रोशन रहे तूफ़ाँ में बुझा दो,

बे फ़स्ल[७] न जल जाने में माहिर हो जो दीपक,
उस नंगे–तरन्नुम[८] को समन्दर में बहा दो,
हिलना दरो–दीवार का धोका है नज़र का,
बढ़ कर दरो–दीवार की बुनियाद हिला दो,

---

१. बाहोश-होश में रहने वाले २. बीच में आ जाने वाला ३. असत्य ४. सत्य ५. बिना लड़ाई ६. हो सकना ७. मौसम ८. सांगीत का कलंक।

आज़ादी की चिनगारी

तड़प रहा था फ़लक पर सितारये-सहरी[1],
असीरे-नूरे-सहर[2] बेक़रारे-आज़ादी[3]
निगाह शबनमे-आवारा[4] की गई उस पर,
गुलों पै बहने लगा आबशारे-आज़ादी[5],
उछल के मौज यह बोली सुकूने-साहिल[6] से,
है जहदे-शौक़[7] पै दारोमदारे आज़ादी ।
उफ़क़[8] के दाम को सूरज ने तोड़ कर फेंका,
हर इक शुआ़ हुई नूरबारे-आज़ादी[9] ।
ख़बर हुई जो गुलिस्ताँ में इस मुजाहिद[10] की,
खटक के टूट गया दिल में ख़ारे-आज़ादी[11]

---

१. सुबह का सितारा २. सुबह की रोशनी का क़ैदी ३. आज़ादी के लिये बेचैन ४. मारी मारी फिरने वाली ओस ५. आज़ादी का झरना ६. किनारे की ख़ामोशी ७. शौक़ का हाथ पैर मारना ८. आस्मान का किनारा ९. आज़ादी का नूर बरसाने वाली १०. जंगजू, कोशिश करने वाला ११. आज़ादी का कांटा ।

चटक के ग़ुंचों ने दामन शमीम[1] का खींचा,
ज़रा क़याम तो कर अय, शिकारे-आज़ादी।
पलट के ग़ुंचों से बोली शमीम अय प्यारो,
यही नमूद[2] है सिर्रे-बहार-आज़ादी[3]।
सबा[4] ने ली जो इक अंगड़ाई कैफ़े-हुस्न[5] के साथ,
चमन में आम हुआ कारोबारे आज़ादी।
चे वर्गोबार चे नज्मो क़मर चे लालओ गुल[6],
तमाम मंज़रे-फ़ितरत शरारे-आज़ादी[7]

१. फूलों की ख़ुशबू २. ज़ाहिर होना ३. आज़ादी की बहार का भेद ४. हवा ५. सुन्दरता का रस ६. चे······गुल— क्या फूल और फल, क्या तारे और चाँद और क्या गुलाब और अफीम का फूल ७. तमाम···आज़ादी—प्रकृति का हर सीन आज़ादी की चिनगारी है।

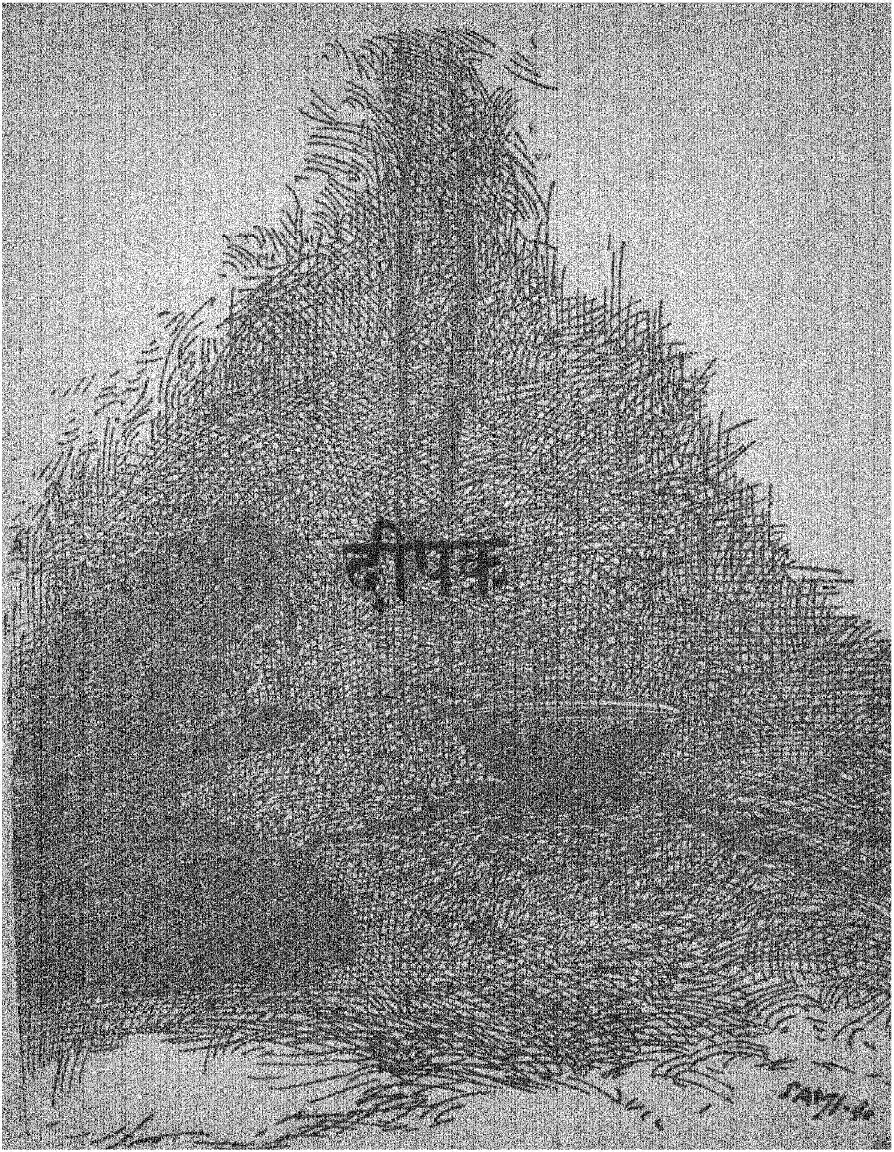
दीपक
SAMI-46

दूसरा हिस्सा

बुझा हुआ दीपक

जीवन की कुटियामें हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक,
आशा के मन्दिर में हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(१)

कजराये दीवट पै धरा हूँ, यों कुटिया में हाय,
जैसे कोयल सीस नवा कर अमवा पर सो जाय,
जैसे श्यामा गाते गाते कुहरे में खो जाय,
जैसे दीपक आग में अपनी ख़ाकिस्तर[१] हो जाय,
बिरह में जैसे आँख किसी क्वाँरी की पथरा जाय,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(२)

जैसे घटा में हो हलकी सी इक बिजली बेजान,
जैसे किसी साधू का मुर्दा और थका ईमान,
आशाओं का मदफ़न[२] अरमानों का क़ब्रिस्तान,
रात की अँधियारी में हूँ मैं मृत्यु की मुस्कान,
जैसे इक बेवा की चिता हो और वीराँ शमशान[३],
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

---

१. राख २. क़ब्र, समाधि ३. श्मशान।

(३)

इस अरमाँ में कोई मेरे आँचल को छू जाय,
हलकी सी मुस्कान से अपनी चन्दा को शरमाय,
जीवन की तारीक कुटी में तारे से चमकाय,
जलता हूँ मैं, कब से अपनी गोदी को फैलाय,
क़िस्मत की अंधियारी हरदम काजल सा बरसाय,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(४)

फुँकता हूँ संसार में कब से मैं कर्मों का मारा,
जल जल कर कोयला सा हुआ है, मेरा जीवन सारा,
ज्योति के आकाश पै हूँ मैं इक धुंधला सा तारा,
मेरी जलती छाती बाबा अग्नी का गहवारा[1],
लब पै नरक है, हाथों में है शोले का इकतारा,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(५)

काश, अमरज्योती का आँचल मुझपर साया डाले,
मेरे जीवन की छाया हों बाल वो घूंघरयाले,
और मधुर फूँकों से बुझायें अल्हड़ सोने वाले,
मेरे अँधेरे से पैदा हों चन्दरमा के हाले,
अँधियारी और नूर के दाता सुन ले मेरे नाले,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

---

१. पालना।

(६)

चमकें हैं और डूबें हैं यह सूरज चाँद सितारे,
जीने और मरने के चक्कर में हैं सब बेचारे,
साँझ-सकारे सो जाते हैं, ये नींदों के मारे,
मेरे अमर आकाश पै हरदम दहकें हैं अंगारे,
वह अंगारे जिनकी चमक का तुम हासिल हो प्यारे,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(७)

आतम, हिरदय, जीवन, मृत्यु, सतयुग, कलजुग, माया,
हर रस्ते पर मैंने अपने नूर का जाल बिछाया,
चारों ओर चमक कर अपनी किरनों को दौड़ाया,
जितना ढूँढ़ा उतना खोया, खोकर खाक न पाया,
बीत गये जुग लेकिन 'साग़र' मुझ तक कोई न आया,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(८)

आखिर बिल्कुल बुझ जाने की हो ली जब तैयारी,
आकर मेरे कान में बोली इक शब यों अँधियारी,
जग में जिसको कोई न पूछे, वह क़िस्मत की मारी,
मन मन्दिर में मुझे बिठा लो अय ज्योती के रसिया,
बुझे हुये से दीपक तुम, मैं थकी हुई अँधियारी,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

(६)

अँधियारी की बातें सुनकर मन बोला उठ जाग,
यही तेरी मंज़िल है दीपक, यही हैं तेरे भाग[1],
भड़क उठी छाती में बिरह की दबी हुई सी आग,
आशा के मन्दिर में गूँजा इक तूफ़ानी राग,
आँखों में जलते आँसू थे होटों पर थी आहें,
डाल दी अँधियारी के गले में रोकर मैंने बाहें,
बुझा हुआ सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ सा दीपक।

---

१. भाग्य, क़िस्मत।

इकतारा

धीरे धीरे छेड़ मुग़न्नी[1], धीरे धीरे छेड़ ।

(१)

झन से न धरती पर आ टूटे झिलमिल करता तारा,
ऊषा के माथे की बिंदिया पूषन का गहवारा,
पड़ा कमल पर सपना देखे जोबन–रस–मतवारा,
मदन-बान की कलियों में है ख़ुशबू की इक धारा,
देख तेरी तानों की धमक से खेल न बिगड़े सारा ।
धीरे धीरे छेड़ मुग़न्नी धीरे धीरे छेड़ ।

(२)

मैं जोगिन बेचारी ठहरी, मन मारों का मारा,
मन मारों का मारा है तो सारा जग दुखियारा,
नैया मेरी टूटी फूटी कोसों दूर किनारा,
आशा का इक तारा है, इक तारे की क्या सारा ?
देख तेरी तानों की धमक से खेल न बिगड़े सारा ।
धीरे-धीरे छेड़ मुग़न्नी धीरे धीरे छेड़ ।

---

१. गानें वाला ।

माला

टूट गई वह माला सजनी—टूट गई वह माला।

(१)

फूल सितारे आँसू जिसके दाने थे, वह माला,
जिसके दानें दाने में पैमाने थे, वह माला,
जिसके पैमानों में सौ मयखाने थे, वह माला,
टूट गई वह माला सजनी,—टूट गई वह माला।

(२)

बिखर गये वह मोती जिससे नादिम[1] थे सैयारे,
हुस्नो-मुहब्बत, जीवन-मृत्यु डोलें मारे मारे,
टूटते ही इक प्रेम की डोरी रिश्ते टूटे सारे,
टूट गई वह माला सजनी,—टूट गई वह माला।

---

१. शर्मिन्दा

भिखारी की सदा

(१)

बात न पूछे बाबा कोई दर दर दी आवाज़,
क्यों बजता है अब भी पापी यह जीवन का साज़,
तूफ़ाँ सर पर, रात अंधेरी, हर दम इक मँझधार,
प्याला मेरा नैया है और क़िस्मत खेवनहार,
बात न पूछे बाबा कोई दर दर दी आवाज़ ।

(२)

यह गढ़ तारों के हमसाया, यह ऊँचे अस्थान,
याँ माँगे पर भी मिलता है कब भिक्षू को दान,
जिसको देखो दाता है, और सब दाता हैं चोर,
इस नगरी में सब को पाया पक्का लाल-कठोर,
बात न पूछे बाबा कोई दर दर दी आवाज़ ।

(३)

चाँद सितारे लानत भेजें सूरज दे धुतकार,
बैठे बैठे ध्यान में मुझको धक्के दे संसार,

माया बिन जीवन है, जग में जीवन का अपमान,
माया ही जंजाल है, बाबा माया ही निर्वान,
बात न पूछे बाबा कोई दर दर दी आवाज़ ।

(४)

भीख, भिखारी, दान और दाता सबको पर्दे जान,
प्रेम भिखारी कब रखते हैं भिक्षा पर ईमान,
आस यह है वह छम छम करती कोठों दौड़ी आय,
ऊपर से इक आँसू टपके और प्याला भर जाय,
बात न पूछे बाबा कोई दर दर दी आवाज़ ।

दर्पन टूट चुका

टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(१)

सुबह सवेरे दर्पन टूटा,
दर्पन टूटा और जग छूटा,
साँझ ने मारा, रात ने लूटा,
सब कुछ खोटा, सब कुछ झूटा,
साँचा मेरा टूटा दर्पन—
टूटे में दुनिया लहराये।

टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(२)

कौन अब देखे, कौन दिखाये,
टूटे को अब कौन उठाये,
किसकी मूरत इसमें आये,
किसकी सूरत इसको भाये,
साजन मेरे मन का दर्पन—
टूट के भी जौहर दिखलाये

टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(३)

किसको दिखाऊँ मन के पारे,
अश्क़ों में डूबे हैं सारे,
दुखिया जीवन के यह सहारे,
टूटे मोती बिखरे तारे,
तुम जो देखो मेरे साजन--
टूटा दर्पन फिर जुड़ जाये।
टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(४)

दिखला कर अल्हड़पन तोड़ा,
हाथ में लेकर दर्पन तोड़ा,
आतम तोड़ी, तन मन तोड़ा,
मेरा जोबन जीवन तोड़ा,
तोड़ा, और जो मेरे साजन
टूटा कुछ टोटा दे जाये।
टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(५)

टूटे दर्पन घर में आओ,
दर्पन के यह टूक उठाओ,
हँस हँस कर बिजली सी गिराओ,
और टुकड़ों में आग लगाओ,

बात तो जब है, अय मन मोहन—
दर्पन राख अभी हो जाये।
टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(६)

प्रेम भी धोका, प्रीत भी धोका,
राग भी धोका, गीत भी धोका,
हार भी धोका, जीत भी धोका,
दुनिया की हर रीत भी धोका,
झूटा फागुन, झूटा सावन,
टूट में सब झूटा कहलाये।
टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

(७)

मन दर्पन बिन टूटे 'साग़र',
था अन्धा और चीकट पत्थर,
ग़म ने मारा मन पर कंकर,
बह निकले जौहर के सागर,
सागर है और टूटा दर्पन,—
बूंद न गिरने पाये।
टूट चुका अय साजन, दर्पन टूट चुका।

बाग़ी संसार

इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(१)

चन्दरमा से ज्योति बरस कर पर्वत पर आ सोय,
पर्वत से सौ झरने फूटे, पर्वत बैठा रोय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(२)

झरने बढ़ कर दरिया बाजें, दरिया सागर होय,
सागर बादल बनकर उमडे फिर करनी पर रोय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(३)

पात झड़ें टहनी से, टहनी नंगी होकर रोय,
टहनी खुद पीपल को छोड़े, इक दिन ऐसा होय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(४)

छाती चीर कली की ख़ुशबू दुनियाँ पर छा जाय,
फूल से रंगत बाग़ी होकर तितली बन उड़ जाय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(५)

तन इक दिन जोबन को छोड़े, आतम तन दे त्याग,
मुरली इक दिन राग को फूँके और मुरली को राग,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

(६)

जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस नगरी की रीत यही है, जो पाये सो खोय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसार में प्रीतम, कौन किसी का होय ?

आत्मा का मन्दिर

मन्दिर के पट खोल पुजारी, पट मन्दिर के खोल।

(१)

प्रेम नगर से आई मैं दासी, पट मन्दिर के खोल,
हीरे मोती लाई मैं दासी, पट मन्दिर के खोल,
वो मोती हैं, तेज से जिनके चन्दरमा छुप जाय,
वह हीरे हैं, जोत से जिनकी सूरज भी शर्माय,
नैनन का काँटा है इनको, इस काँटे में तोल,—
पट मन्दिर के खोल।

(२)

सुबह सवेरे छेड़ा किसने बंसी का यह राग ?
आँख खुली ऐसे में मेरी यह भी मेरे भाग,
कोयल, मोर, पपीहा, श्यामा सब सोवें नर नारी,
गहरे सपने में डूबी है सपने की मतवारी,
सारा जग मुर्दा है पुजारी, हीरे मोती रोल,
पट मन्दिर के खोल।

(३)

दूर कहीं इक झरना गावे, सपने के से राग,
लुटने को है दिन के हाथों तारों का सोहाग,
सखियां अपने हट में लेटीं करें दिलों की खोज,
जमना धुंधला दर्पन है और पनघट सूनी गोद,
पनघट पर हर कोई चुप है—गिर्री, गगरी, डोल—
पट मन्दिर के खोल।

(४)

दो नैनन में सौ आँसू हैं दीवानी की भेंट,
नैन मेरे माटी हैं केवल भेंट है यह अनमेट,
उस मन्दिर के खोल ज़रा पट जिसमें हैं गिरधारी,
वह गिरधारी, जिन पर सारी दुनिया है बलिहारी,
कब से मैं चीखूं बेचारी, सुन तो मेरे बोल—
पट मन्दिर के खोल।

(५)

जीवन मेरा रूप बदल कर बन जाये इक हार,
उनके गले का हार पुजारी, मेरा मन सिंगार,
मुझको गले यों पड़ते देखें, देवें वह मन हार,
गुंध जावें इक हार में दोनों निराकार साकार,
तुझको क्यों है आर पुजारी, कुछ तो मुख से बोल,—
पट मन्दिर के खोल।

(६)

जीवन क्या है, एक रसीला और अमर संगीत,
प्रेम नगर में नहीं पुजारी मर जानें की रीत,
झांझ की लय पर धरती नाचे और झूमे आकास,
ताल पै मेरे घुंघरू की तिरलोक में होवे रास,
मेरे मद के आगे पुजारी, दुनिया का क्या मोल—
पट मन्दिर के खोल।

(७)

मैं पगली अब जाऊँ किधर को, फूटे मुंह से बोल,
मन्दिर के पट खोल पुजारी, पट मन्दिर के खोल,
जोबन और जोबन की मस्ती सब कुछ भेंट चढ़ाऊँ,
जग ढूंढे हर जुग में मुझको, मैं उस में खो जाऊँ,
पागल, कामी, चञ्चल, पापी मत हो डाँवाडोल—
पट मन्दिर के खोल।

प्रेम-प्रकाश

मेरे मन से प्रेम जो फूटा तुम मुझसे क्यों रूठे ?

(१)

चन्दरमा आकाश से फूटा, धरती से गुल-बूटे,
ताक झाँक की धुन में सूरज चमका, तारे टूटे,
रात मिलन के कारन दिनसे साँझ की नगरी छूटे,
प्रेम की इक चिनगारी प्रीतम, रंग रंग से फूटे,
तुम मुझसे क्यों रूठे प्रीतम, तुम मुझ से क्यों रूठे ?
मेरे मन से प्रेम जो फूटा, तुम मुझ से क्यों रूठे ?

(२)

परबत की छाती से नद्दी फूटी शोर मचाती,
मौजों का सारंग बजाती मीठे नग़में गाती,
मीठे मीठे नग़में गाती, मोती ख़ूब लुटाती,
जिसने देखे उसने पाये, जिसने पाये लूटे,
तुम मुझसे क्यों रूठे प्रीतम, तुम मुझ से क्यों रूठे?
मेरे मन से प्रेम जो फूटा तुम मुझसे क्यों रूठे ?

(३)

सीपी की गोदी में मोती घुट घुट कर रह जाय,
चमक दमक से उसकी मोती काँपे और थर्राय,
बरखा की इक बूँद का बोसा मोती को गरमाय,
मोती सीपी के पट खोले और घबरा कर फूटे,
तुम मुझ से क्यों रूठे प्रीतम, तुम मुझसे क्यों रूठ ?
मेरे मन से प्रेम जो फूटा, तुम मुझसे क्यों रूठे ?

(४)

टहनी में सौ कलियाँ फूटीं, कलियों में सौ रंग,
रंगों से इक खुशबू बरसी और खुशबू से उमंग,
कमल कमल भौंरों ने छेड़ा ऋतूराज का चंग,
शबनम के सौ प्याले इक चुम्मे की धुन में टूटे,
तुम मुझसे क्यों रूठे प्रीतम, तुम मुझसे क्यों रूठे ?
मेरे मन से प्रेम जो फूटा, तुम मुझसे क्यों रूठे ?

बसो दिल में हमारे

बसो हर आन तुम दिल में हमारे।

(१)

कहीं चाँद और कहीं तुम हो सितारे, निराले हैं तुम्हारे रूप सारे,
हमारी जिन्दगी के हो सहारे, बसो हर आन तुम दिल में हमारे।
बसो हर आन तुम दिल में हमारे।

(२)

न जाओ रूठ कर जमना किनारे, न सूरज में करो छुप कर इशारे,
यहीं पूजा तुम्हारी होगी प्यारे, शिवाला है यही क़ाबिल तुम्हारे।
बसो हर आन तुम दिलमें हमारे।

(३)

यह सुन्दर छवि यह तेवर प्यारे प्यारे, हमारी जान हैं दर्शन तुम्हारे,
न ढूंढो प्रीत को तुम द्वारे द्वारे, इसी में प्रेम के बहते हैं धारे।
बसो हर आन तुम दिल में हमारे।

धनक

किरनों के चुम्मों से बदरी बनी रंग की क्यारी,
बदरी की चिलमन से झाँकी रंगों की मतवारी,
जोबन पर है रंगराज की रंगीं राजकुमारी,
चुन्दरी अपनी उड़ा रही है बरखा ऋतु की कुँआरी,
इन्द्र देवता छोड़ रहे हैं रह रह कर पिचकारी,
या करके अस्नान लक्ष्मी सुखा रही है सारी।

बिलख-बिलख मर जाय

सुन्दर नैना मद भरे, भौंरा रस को आय,
काली ज़ुल्फ़ें मोहनी, जैसे बदरी छाय।
दूभर हो जीना उसे, जो तुमसे नेह लगाय,
सिसक-सिसक कर जानदे, बिलख-बिलख मर जाय।
क्यों वह अपने दास को, दरशन देने आय,
क्यों वह अपने हुस्न का, रूप अनूप दिखाय ?
अय प्रेमी, क्यों आस में, अपने नैन थकाय,
उसकी तो ख़ुद चाह है, बिलख बिलख मर जाय।

जवानी बीती जाय

कब तक राह दिखाओगी तुम—
आखिर कब तक आओगी तुम ?
यह मौसम, यह सर्द हवायें—
आउगी या तरसाओगी तुम ?
सावन भादों रो रो काटे—
कब तक यूँ तड़पाओगी तुम ?
झूठे वादों के झूलों में—
मुझे झुलाये जाओगी तुम ?
बरसों गुज़रे और जुग बीते—
कब तक यूँ बहलाओगी तुम ?
अपने तबस्सुम के फूलों की—
माला कब पहनाओगी तुम ?

मैं चीखूँ और मोर पुकारे—
दुखिया कोयल शोर मचाये,
बीती जाय, पियारी बीती जाय—
जवानी बीती जाय ।

ग़म की फ़ितरत शाद न होगी—
नई ख़ुशी ईजाद न होगी,
दुःख की माया लाफ़ानी है—
मिट कर भी बर्बाद न होगी,
मैं क्या, तू भी अपने ग़म से,—
मर कर भी आज़ाद न होगी।
मेरे तेरे प्रेम की दुनिया—
नज़रे—बर्क़ोबाद न होगी।
मन की बस्ती, वह बस्ती है—
उजड़ी तो आबाद न होगी।
जान पै बनती है, बन जायें—
हम से तो फ़रियाद न होगी।
देखें तेरी बज़्म में कब तक—
दीवानों की याद न होगी?

आँसू आँखों में लहरायें—
सागर दिलका छलका जाये,
बीती जाय, जवानी बीती जाय—
पियारी बीती जाय।

मैं दीवाना तू दीवानी—
दोनों पगलेपन के बानी,
वह पगलापन जिसकी प्यारी—
दुनिया ने कुछ क़द्र न जानी।

इक दिन ख़त के बदले आजा—
कब तक यह पैग़ाम रसानी ?
आ दिल को फ़िरदौस बना दे—
बन जा दर्द-महल की रानी।
दुनिया अफ़सानों की बसायें—
मैं भी क़िस्सा, तू भी कहानी।
वक़्त किसी का यार नहीं है—
कर लें दुनिया में मनमानी।
आह, कहाँ मिलते हैं बिछड़ कर,
बादओ, साग़र इश्क़ो जवानी ?

दिल की कली जब मुरझा जाये—
कोई भौंरा पास न आये।
बीती जाय जवानी, बीती जाय—
पियारी बीती जाय।

आ, वह नग़मा मिलकर गायें,
अर्श पै जायें जिसकी सदायें
साज़ वह छेड़ें जिसकी लय पर—
सूरज नाचे, तारे गायें;
चाँद के नूरानी हाले में—
बोसों के सूरज चमकायें।
प्रेम का जामे—रंगीं पीकर—
मज़हब से ऊँचे हो जायें।

अर्श की चोटी जिसका कलस हो—
ऐसा इक आश्रम बनायें।
बरसों दुनिया ने ठुकराया—
आ हम दुनिया को ठुकरायें।
'साग़र' का पैग़ाम भी सुन ले—
फिर नहीं आयेंगी यह सदायें।
नग़मे सारे बिखरे जायें—
साज़े-हस्ती टूटा जाये।
बीती जाय जवानी, बीती जाय—
पियारी बीती जाय।

तुम वह नहीं हो

(१)

था रब्त[1] मेरे सोज़े-निहाँ[2] से,
था प्रेम मेरी हर दास्ताँ से,
मुझ पर फ़िदा थे दिल और जाँ से,
लाते थे तारे हफ़्त-आस्माँ[3] से,
चुन-चुन के कलियाँ हर गुलसिताँ से,
खोये हुए को पाऊँ कहाँ से,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

(२)

आँखें थीं मेरी जामे-मुहब्बत,
मेरा तबस्सुम[4] दामे—मुहब्बत[5],
सुबहे मुहब्बत, शामे मुहब्बत,
अर्शे—तमन्ना[6] बामे—मुहब्बत[7],

---

१. लगाव २. छुपी हुई जलन ३. सात आसमान ४. मुस्कान ५. प्रेम का जाल ६. आशा की ऊँचाई ७. प्रेम अटारी।

अब नातवाँ[1] है गामे—मुहब्बत[2],
अब तुम न लेना नामे मुहब्बत,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

(३)

अहदे-मुहब्बत[3] जिसने किया था,
नामे–वफ़ा[4] पर जो मिट गया था,
मेरी अदाओं पर जो फ़ना था,
मैं जिसकी देवी, जो देवता था,
जो मेरा बन्दा होकर ख़ुदा था,
सपना था, साया, धोका था, क्या था,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

(४)

सावन की वह ऋतु,
घड़ियाँ वह चंचल,
लबरेज़ झीलें, घनघोर बादल,
दुखिया पपीहा बेचैन कोयल,
साये घटा के, सुनसान जंगल,
वह हमसे तुमसे जंगल में मंगल,

---

१. कमजोर २. प्रेम के क़दम ३. प्रेम की प्रतिज्ञा ४. प्रेम और निबाह का नाम ।

दामन तुम्हारा और मेरा आँचल,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

(५)

अब वह नहीं हो तुम मेरे प्यारे,
में जी रही थी जिसके सहारे,
जिसने हमेशा गेसू संवारे,
आकाश में थी, तुम थे सितारे,
चाँद और सूरज सब थे हमारे,
सब बुझ गये वह रोशन शरारे,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

(६)

जिसकी अदायें काफ़िर-अदा[१] थीं,
जिसकी निगाहें कैफ़-आशना[२] थीं,
जिसकी सदायें नग़मा-रुबा[३] थीं,
जिसकी नवायें साज़े-फ़ज़ा[४] थीं,
जिसकी वफ़ायें मीठी जफ़ा थीं.
जिसकी जफ़ायें जाने-वफ़ा[५] थीं,
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

---

१. प्यारी अदा २. रसीली ३. गीत को चुराने वाली, गाती हुई ४. वायुमण्डल का बाजा ५. प्रेम और निबाह की जान ।

(७)

रोशन वो शामें, ज़रीं[१] वह रातें,
और चाँदनी में घण्टों वह बातें,
वह बेतबाज़ी, वह तुमको मातें,
उल्फ़त की चालें, क़िस्मत की घातें,
मख़लूत–क़ालिब[२] मरबूत–ज़ातें[३],
सब फूँक डालीं वह कायनातें[४],
तुम वह नहीं हो—अब वह नहीं हो,
अय मेरे प्यारे !

१. सुनहरी २. मिले हुए शरीर ३. मिली हुई ज़ातें ४. दुनियायें।

आओ।

(सावन में बिरह की एक रात)

आओ मेरी जान, आ भी जाओ सावन की घटा में छुप के आओ।
यह सर्द हवा, यह मस्त बारिश आओ वरना हमें बुलाओ।
आलम[1] जिससे लरज़[2] गया था हां फिर उसी तरह मुस्कराओ।
काशानये-ग़म[3] में है अंधेरा दरिया अनवार[4] के बहाओ।
गोशे गोशे में नूर भर दो ज़र्रे ज़र्रे को जगमगाओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

काली काली घटायें, तोबा दस्ते-रंगीं[5] इधर बढ़ाओ।
ठंडी ठंडी हवायें, तोबा कुछ तुम पिओ कुछ मुझे पिलाओ।
बादल जो बचे खुचे हुए हैं आओ और साथ उन्हें भी लाओ।
रिम झिम सावन बरस रहा है छम छम करती चली भी आओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

---

१. संसार २. लरज़ना–कांपना ३. दुख की कुटिया ४. ज्योति ५. रंगीन हाथ।

छेड़ी है फ़ज़ा ने रागनी सी तुम भी अपना सितार उठाओ।
फ़ितरत सौ गीत गा रही है आओ तुम भी मल्हार गाओ।
पज़-मुर्दा[१] है फ़ितरते–तरन्नुम[२] फिर धुन में हमारी गुनगुनाओ।
वह नज़्म जो हमने कल कही थी बूँदों के सितार पर सुनाओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

तारीक[३] है रूह, दिल है प्यासा देखो मुझे और मुस्कराओ।
दिल के ख़िरमन[४] पै मुस्करा कर बे–आग की बिजलियाँ गिराओ।
हल्की सी लतीफ़[५] साँस लेकर गहरी फ़िक्रों में डूब जाओ।
फिर दोनों जहाँ से मुझको खो दो आँसू आँखों से कुछ गिराओ।
राहे-अर्शे-वफ़ा[६] किधर है नमनाक[७] निगाह से बताओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

फिर काबये-इश्क़[८] करदो तामीर[९] मन्दिर फिर प्रेम का बनाओ।
फिर सिजदे[१०] हों बार बार और हम फिर तुम रह रह के रूठ जाओ।
फिर अपने क़ुदूमे-नाज़नीं[११] से घबरा के हमारा सर उठाओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

क़िस्मत सोती है आशिक़ी की इस ख़ुफ्ता-नसीब[१२] को उठाओ।
फिर छेड़ दो अपना कोई क़िस्सा रातें बातों में फिर जगाओ।
दूरी ने किया है नक़्स पैदा कुल को फिर जुज़्व[१३] में मिलाओ।
आख़िर कब तक हिजाबे-ज़ाहिर[१४] बाक़ी पर्दे भी सब उठाओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

---

१. मुर्झाया हुआ २. संगीत की नेचर ३. अंधेरा ४. खलिहान ५. कोमल ६. प्रेम और निबाह का सबसे ऊँचा रास्ता ७. भीगी हुई, आसुओं से भरी हुई ८. प्रेम तीर्थ ९. बनाओ १०. बन्दना ११. कोमल चरण १२. सोये हुये भाग्य वाला १३. हिस्सा १४. ज़ाहिरी पर्दा।

हर दम क्यों याद आ रही हो — बेहतर है यही कि भूल जाओ।
यह शर्मो-हिजाब[१] अल्ला अल्ला — हमसे भी न तुम नज़र मिलाओ।
इक राज़े-बिनाये-हरदो-आलम[२] — जो छुप न सके मगर छुपाओ।
ऐजाज़े-तसव्वुरात[३] है यह — आकर भी हमें नज़र न आओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

सावन की अंधेरी रात और तुम — आई हो तो आके अब न जाओ।
इस वक्त का तो यह है तक़ाज़ा — हम सो रहें और तुम जगाओ।
हल्की हल्की यह मस्त बुंदियाँ — कौसर[४] की फुवार में नहाओ।
नागिन सी घटाओं में यह बिजली — लिल्लाह[५], संभल के मुस्कराओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

झींगर क्यों साज़ छेड़ते हैं — इस साज़ का राज़ तो बताओ।
बिजली क्यों मुज़्तरिब[६] है पैहम[७] — उसकी बेचैनियाँ मिटाओ।
बादल क्यों घिर के रो रहे हैं — उनकी हालत पै रहम खाओ।
चम्पा दुलहन बनी हुई है — आओ इसको गले लगाओ।
हस्ती[८] कुल इन्तज़ार[९] में है — मक़सूदे-हयात[१०] बन के आओ।
सारी दुनिया बुला रही है — लेकिन तुम मेरे पास आओ।
आओ मेरी जान, आ भी जाओ !

---

१. लज्जा और पर्दा २. "आलमे-सिफली" यानी ये दुनिया और "आलमे आला" यानी परलोक। कवि कहता है कि इन दोनों दुनियाओं की असली नींव का भेद बताओ, प्रेम से मुराद है। ३. ध्यान आने का करिश्मा ४. स्वर्ग की नहर ५. ईश्वर के लिये। ६. चंचल ७. लगातार ८. जीवन ९. प्रतीक्षा १०. ज़िन्दगी का मक़सद।

मिलन की शाम

(शारदा सिन्हा और सैयदा के नाम)

(१)

अय मेरे आक़ा[1], अय मेरे दाता,
दु:ख से कलेजा फट ही चुका था,
तूने यकायक पर्दा उठाया,
पर्दा उठाया जल्वा दिखाया,
जल्वा दिखाया और मुस्कराया,
और मुस्करा कर मुझ में समाया,
कैसा अँधेरा कैसा उजाला ?

अय मेरे आक़ा, अय मेरे दाता,
क्या शुक्र हो इस लुत्फ़ो-करम[2] का।

---

१. प्रभु २. महरबानी।

(२)

ठण्डी हवायें गहरा धुंधलका,
सुनसान जंगल, वीरान सहरा,
मस्ती में पत्तों का दफ़ बजाना,
शाखों का रह रह कर झूम जाना,
इस शोरो—शर में चुपके से तेरा,
चम्पा की खुशबू की तरह आना।

अय मेरे आक़ा, अय मेरे दाता।
क्या शुक्र हो इस लुत्फ़ो-करम का।

(३)

अय मेरे आक़ा, अय मेरी दुनिया,
तू और मेरी छोटी सी कुटिया,
छोटी सी कुटिया और यह अन्धेरा,
अय मेरे दाता ठोकर न खाना,
कैसा अनोखा है यह तमाशा,
मैं खस हूँ और तू शोला ही शोला।

अय मेरे आक़ा, अय मेरे दाता !
क्या शुक्र हो इस लुत्फ़ो-करम का।

(४)

अपनी कुटी से जाने न दूँगी,
और जो गये तो आने न दूँगी,

जाने न दूँगी, आने न दूंगी,
खोने न दूँगी, पाने न दूँगी,
दर पे किसी को आने न दूँगी,
तुमको भी दाता जाने न दूँगी।

अय मेरे आक़ा, अय मेरे दाता।
क्या शुक्र हो इस लुत्फ़ो-करम का।

बीती हुई घड़ियाँ

वह इश्क़ो-जवानी के उजुवकार-नज़ारे[१] अल्लाह, कहाँ हैं वो गये वक़्त हमारे,
वह एक शकस्ता[२] सा मकाँ गाँव के बाहर वह पाक ज़मीं और मुक़द्दस[३] वह सितारे,
इकलौबते-त्रेबाक[४] का वह बाम[५] पर आना वह नींद की आग़ोश[६] में सोये हुए तारे,
वह नर्गिसे[७] पुरबादा का बर्बादकुन-अन्दाज़[८] जैसे हो कमल सुबह को तालाब किनारे,
वह दूरिये-अजसाम[९] वह अरवाह[१०] की क़ुर्बत अंगुश्ते-हिनाई[११] से मुसल्सल[१२] वह इशारे,
वह उसका तबस्सुम[१३] व तबस्सुम का तवातुर[१४] वह मस्त निगाहों में मुहब्बत के शरारे[१५],
ख़ामोश वह इक गुफ़्तगूये शौक़[१६] मुसल्सल वह उसकी निगाहों का यह कहना, मेरे प्यारे,

अल्लाह, कहाँ हैं वह गये वक़्त हमारे,
वह इश्क़ो-जवानी के उजुबकार नज़ारे ।

वह सुबह-सवेरे तेरा इक गीत सा गाना ख़्वाबीदा[१७] मुझे देख के ताली भी बजाना,
आवाज़ वो चक्की की वो सैलाबे-तरन्नुम[१८] सारस की पुकार और वह कोयल का तराना,

---

१. अनोखा नज़ारा २. टूटा हुआ ३. पवित्र ४. चंचल सुन्दरी ५. अटारी ६. गोद ७. नर्गिस-एक तरह का फूल जिसकी उपमा आँख से दी जाती है, नशीली आंख ८. मिटा देने वाली अदायें ९. जिस्मों की दूरी १०. आत्माओं का मिलाप ११. मेंहदी लगी हुई उँगली १२. लगातार १३. मुस्कान १४. जारी रहना १५. चिनगारियाँ १६. प्रेम की बातें १७. सोया हुआ १८. संगीत का तूफ़ान ।

छुप छुप के तेरी आह वह गुलबाज़िये-पैहम[१] वह जान के चादर में मेरा मुँह को छुपाना,
क्योंकर हो यक़ीं[२] दिल को कि ऐसा भी हुआ था वह रूठ के जाना, वह तेरा अश्क़[३] बहाना,
हर तरह, हर इक तौर, हर इक ढंग से ज़ालिम वो मेरा न उठना वो तेरा मुझको उठाना,
पनघट पै मुलाक़ात वह रस्ते में इशारे सखियों से कुएँ पर तेरा पूजा का बहाना,
वो सुबह के दामन पै तेरा सिजदये-उल्फ़त[४] मन्दिर में मोहब्बत के महकते हुए आना,

अल्लाह, कहाँ हैं वह गये वक़्त हमारे,
वो इश्क़ो-जवानी के उजुबकार नज़ारे।

बर्सात में वह अब्रे-सियाह[५] फ़ाम के साये वह शाम को आना तेरा गंगा के किनारे,
कंगन वह सुनहरी, वह तेरा दस्ते-मुनव्वर[६] और भीगी हुई घास पै मेंडों के वो तकिये,
वह दूर टटीरी की सदा कैफ़ियत-अंगेज़[७] वह हल्के सुरों में तेरे अहसास के नग़मे,
वह दिल में मेरे आह के तूफ़ान का उठना वह दर्द के नग़मे वह कभी यास[८] के नौहे[९],
वह हमसे बहुत दूर किसानों की सदायें वह हमसे बहुत पास सरे-चर्ख़[१०] सितारे,
बुन्दों का वह बालां की घटाओं में चमकना बिजली का वो गिरना मेरे बाज़ू के सहारे,
सीने पै मेरे वो तेरा बाजा सा वजाना आमूदगीये-हुस्नो-मोहब्बत[११] के वह लमहे,

अल्लाह, कहाँ हैं वह गये वक़्त हमारे,
वह इश्क़ो-जवानी के उजुबकार नज़ारे।

---

१. लगातार फूल फेंकना २. विश्वास ३. आँसू ४. प्रेम की पूजा ५. काली घटा ६. जगमगाता हाथ, गोरा ७. मुग्ध करने वाली, रस में डूबी हुई ८. निराशा ९. शोक के गीत १०. आकाश के किनारे ११. प्रेम और सुन्दरता का सुख (शान्ति)।

मैं क्या चाहता हूँ ?

मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? निगाहे-वफ़ा-आशना[1] चाहता हूँ,
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।
नई कायनातें[2],
समन्दर की रातें,
दिल-आवेज़[3] बातें,
मुहब्बत की घातें,
यकायक कहीं गुम हुआ चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? निगाहे-वफ़ा आशना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? जवानी को मैं बेचना चाहता हूँ।
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।
अछूती फ़ज़ा हो,
सुनहरी घटा हो,
नशीली हवा हो,
रंगीली सदा हो,

---

१. प्रेम की नज़र २. संसार ३. प्यारी बातें।

हर आवाज़ पर झूमना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? जवानी को मैं बेचना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? हवा की तरह तैरना चाहता हूँ।
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।
न बरबादियाँ हों,
न जल्लादियाँ हों,
नई वादियाँ हों,
और आज़ादियाँ हों,
मैं जंजीरे-पा[1] तोड़ना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? हवा की तरह तैरना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? नई और अछूती फ़ज़ा चाहता हूँ।
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।
चमकते सितारे,
महकते शरारे,
ब हर कू बहारे[2],
ब हरसू निगारे[3],
नये अपने अरज़ो–समाँ[4] चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? नई और अछूती फ़ज़ा चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ? मैं इक मरकजे-इन्तिहा[5] चाहता हूँ।
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।

---

१. पांव की जंजीर २. हर तरफ़ बहार ३. हर तरफ़ प्रेमिकायें ४. धरती और आकाश ५.आख़िरी मरकज़ ।

यह अहसासे-मस्ती,
यह मस्ती, यह हस्ती,
यह सहबा-परस्ती[१],
बुलन्दीओ पस्ती[२],
मैं इन सब से आगे बढ़ा चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? मैं इक मरकज़े इन्तिहा चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ ? मैं क्या चाहता हूँ ? हर इक चीज़ को भूलना चाहता हूँ।
कि मैं अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।
जहाँ है मिराक़ी[३],
उठ अय मेरे साक़ी,
पिलादे इराक़ी[४],
कि है होश बाक़ी,
तेरे जाम में डूबना चाहता हूँ।
मैं क्या चाहता हूँ? मैं क्या चाहता हूँ? हर इक चीज़ को भूलना चाहता हूँ।
कि मै अपने ग़म की दवा चाहता हूँ।

---

१. शराब का पूजना (पीना) २ उँचाई निचाई ३. सनकी ४. इराक़ देश की मदिरा।

वही कहो तो फिर ज़रा

वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े हसीन हो,
हसीन हो, लतीफ़[1] हो, जमील[2] हो, मतीन[3] हो।

(१)

निगाहे-सब्र-आज़मा[4] से, दिल को देखभाल कर,
सम्हल के और कासनी, दुलाई को सम्हाल कर,
नज़र मिला के और मेरे, गले में हाथ डाल कर,
कलेजा रख तो दो ज़रा, उसी तरह निकाल कर,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े हसीन हो।

(२)

कमल के फूल को नज़र, जमा के खूब देख लो,
इक आह भर के और, थरथरा के खूब देख लो,
मुझे दिखाओ, देख कर, दिखा के खूब देख लो,
वही कहो अदा से मुस्करा के खूब देख लो,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े हसीन हो।

---

१. कोमल २. सुन्दर ३. संजीदा ४. धीरज को आज़माने वाली निगाह।

(३)

बनाये जाओ प्रीत को, बनाये जाओ प्रीत को,
बना बना के और भी, मिटाये जाओ प्रीत को,
सताये जाओ प्रीत को, जलाए जाओ प्रीत को,
ख़ुदी की तुन्दो–तेज़ मय, पिलाये जाओ प्रीत को,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े हसीन हो।

(४)

वह आस्माँ, वह बिजलियाँ, वह बिजलियाँ वह बदलियाँ,
वह बदलियों के साये में, ख़िरामे-जामे-अर्ग़वाँ[1],
वह जामे-अर्ग़वाँ और उसमें अक्से-माहे-गुलसिताँ[2],
वह माहे गुलसिताँ सुरूरो-रक़्स[3] में यहाँ वहाँ,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े हसीन हो।

(५)

मसर्रतों की रूह हो, मुहब्बतों की जान हो,
उमीद की ज़मीन, हसरतों का आसमान हो,
जमाल[4] और शबाब[5] का, बलन्द इक निशान हो,
ख़ुदाये–आशिक़ी[6] की तुम चढ़ी हुई कमान हो,
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े जवान हो।

---

१. सुर्ख़ शराब के प्याले का दौर २. बाग़ के चाँद का साया ३. ख़ुशी और नाच ४. सुन्दरता ५. जवानी ६. कामदेव।

(६)

वह सुर्ख़ फूल पत्तियों की, गोद में खिला हुआ,
गुज़र गया था जिसको, सारा बाग़ देखता हुआ,
किसी को वह नज़र पड़ा, न तुम थीं उससे आशना,
मगर मेरी निगाह ने, उसे भी तोड़ ही लिया,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े बसीर[१] हो,

(७)

वह खेत चाँदनी का और समाँ वह पिछली रात का,
नक़ाब[२] तार तार था, दुशीज़ये-हयात[३] का,
शबाब छन रहा था जब उरूसे–कायनात[४] का,
मेरे वजूद[५] पर तुम्हें गुमाँ था अपनी ज़ात का,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम महे–मुनीर[६] हो, ।

(८)

वह रात की ख़मोशियों में दिल पै एक धाक सी,
वह बादलों की चादरे-परीदा[७] चाक-चाक[८] सी,
वह इक सदाये-आबशार[९], दूर ख़ौफ़नाक सी,
वह चोटियों पै नूर सा, वह वादियों में ख़ाक सी,
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े अजीब हो।

---

१. देखनेवाला, अक़्लमन्द २. मुंह पर डालने का कपड़ा ३. जीवन की कुंआरी ४. दुल्हिन-दुनिया ५. हस्ती ६. चमकता हुआ चांद ७. उड़ती हुई चादर ८. फटी हुई ९. झरने की आवाज़।

(९)

वह साये से कहीं तुम्हारा, डर के चीख़ मारना,
हरीफ़े-वाहिमा[१] को बढ़ के, वो मेरा पुकारना,
वह फिर तुम्हारा कुछ समझ के ख़िफ़्फ़तें[२] उतारना,
वह मेरे बाल बोसा–हाये गर्म से संवारना,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े दिलेर[३] हो,

(१०)

दिलेर कह के काम का बना रही हो तुम मुझे,
हसीन कह के देवता बना रही हो तुम मुझे,
मैं सो रहा था आज तक, जगा रही हो तुम मुझे,
जिहादे–ज़िन्दगी[४] की मय पिला रही हो तुम मुझे,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े दिलेर हो।

(११)

वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम अगर दिलेर हो,
तो उठ्ठो अपने साथ नौजवान एक फ़ौज लो,
तमाम देस उठ खड़ा हो इस स्वभाव से उठो,
वतन की राह में बहाओ अपने गर्म ख़ून को,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े दिलेर हो।

---

१. हरीफ़ मुख़ालिफ़ वाहिमा-वहम की शक्ति जो छोटी से छोटी चीज़ को मालूम कर ले, पर यहाँ सिर्फ वहम और धोके से मुराद है २. शर्मिन्दगी ३. बहादुर, वीर ४. जीवन का संघर्ष।

(१२)

हँसी हँसी में क्यों वतन का, ज़िक्र तुमने कर दिया,
मेरी रगों में गर्म, गर्म ख़ून दौड़ने लगा,
मेरी बहादुरी मे एक, जज़्बये-जवाँ[1] बढ़ा,
जल उठा फिर बुझा हुआ, चिराग़ मेरी रूह का,
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े दिलेर हो।

(१३)

ज़मी से आसमान तक, इक आग सी लगाऊँगा,
सिपाहे-दुश्मना[2] को काह[3], की तरह जलाऊँगा,
फ़ज़ा में परचमों की ख़ूब धज्जियाँ उड़ाऊँगा,
वतन को ग़ासिबों के हाथ से मैं छीन लाऊँगा,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बड़े दिलेर हो।

(१४)

फ़ज़ा तमाम मेरे नूरे-ख़ूँ[4] से जगमगायगी,
न आया मैं तो मेरी लाश तो ज़रूर आयगी,
तुम्हारे सामने इन्हीं लबों से मुस्करायगी,
यही कहोगी बार बार, और तुम्हें रुलायगी,
वही कहो तो फिर ज़रा, कि तुम बडे दिलेर हो।

(१५)

हुई जो मुझको फ़तह फिर तो सरफ़राज़ आऊँगा

---

१. नौजवान भावना २. दुश्मनों की फ़ौज ३. तिनका ४. ख़ून की रोशनी, रंग।

मैं अपनी नुसरतों के गीत मस्त हो के गाऊँगा,
रबाबे–शौक़[१] झूम कर सुरूर में बजाऊँगा,
बतौरे–इन्तक़ामे-इश्क़[२] तुमको मैं बनाऊँगा।
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े हसीन हो।
हसीन हो, लतीफ़ हो, जमील हो, मतीन हो।

---

१. शौक़ का सितार २. प्रेम के बदले में।

मेरा पयाम ले जा

(१)

अय नामाबर[१] कबूतर, जिब्रील-पर[२] कबूतर,
रंगीं-नज़र कबूतर, उनक़ा-सयर[३] कबूतर,
मेरा हुमाये-ख़ल्वत[४], अय नग़माबार[५] तू है,
कुटिया में मेरी ग़म की शब-ज़िन्दा-दार[६] तू है,
अय मुर्ग़े-सुबहो-आरा[७],
अब ज़ब्ते आरज़ू का दिल को नहीं है यारा[८],
दुखिया हूँ नातवाँ हूँ,
मजबूर ख़स्ता-जाँ[९] हूँ,
महरूमो बेनिशाँ हूँ,
ना आशनाये-ग़म[१०] हूँ और मुब्तिलाये-ग़म[११] हूँ

---

१. संदेश ले जाने वाला २. जिब्रील जैसे परों वाला, जिब्रील एक फ़रिश्ता जो पैग़म्बरों के पास ख़ुदा का संदेश लाता था ३. उनक़ा जैसी आदतों वाला, उनक़ा-एक फ़र्ज़ी चिड़िया ४. तनहाई का हुमा, हुमा एक चिड़िया का नाम है, जिसके बारे में मशहूर है कि जिस पर उसका छाया पड़ जाय वह बादशाह हो जाय ५. गीत बरसाने वाला, गाने वाला ६. रात को जागने वाला ७. सुबह को सजाने वाली चिड़िया ८. हौसला ९. कमजोर १०. दुख को न जानने वाली ११. दुःख में जकडी हुई ।

जज़्बात-मुन्तशर[१] हैं,
मजबूर सी पड़ी हूँ हालात मुन्तशर हैं,
तू बाम-आशना[२] है,
इल्हाम-आशना[३] है,
इक नामये-तमन्ना[४] हंगामये-तमन्ना[५],
बालाये-बाम[६] ले जा,
मेरा पयाम ले जा।

(२)

आख़िर ख़ामोश कब तक यूँ सब्र-कोश[७] कब तक,
नाला-फ़रोश[८] कब तक बे-सब्रो-होश[९] कब तक,
दिल के तपिशकदे[१०] में शोले भड़क रहे हैं,
पहलू में आरज़ू के नश्तर खटक रहे हैं,
नाकामे-आरज़ू हूँ,
सर-गश्तये-तमन्ना[११] बदनामे-आरज़ू हूँ,
वह शहरयारे-नख़वत[१२],
वह गुलेज़ार-नख़वत,
आईनादारे-नख़वत[१३],

---

१. कामनायें बिखरी हुई हैं २. अटारी को जानने वाला ३. आकाशवानी को जानने वाला ४. कामना का पत्र ५. कामनाओं की भीड़ ६. अटारी पर ७. सब्र करने वाला ८. आहें बेचने वाला, मुराद आहें करने वाले से है ९. बिना धीरज और होश के १०. मन की भट्टी ११. आशा का मारा हुआ, आरज़ू का परेशान १२. घमण्ड का बादशाह १३. घमण्ड को दिखाने वाला।

आमादये–तग़ाफ़ुल[१] शहज़ादये–तग़ाफ़ुल[२],
जिसमें नहीं मुरव्वत,
जो सब्र–आज़माँ है जिसको है मुझसे नफरत,
जो मुझसे बेख़बर है,
जो आफ़ते-नज़र[३] है,
मेरा पयामे-फ़ुरक़त[४] मेरा सलामे फ़ुरक़त,

आज उसके नाम ले जा
मेरा पयाम ले जा।

(३)

यह मेरी नौजवानी, उस पर यह सरगरानी,
मायूसे–शादमानी[५], है ज़िन्दगी ये फ़ानी[६],
हर लहज़ा इक तसव्वुर[७] है हमकनार[८] मुझसे,
रूठी हुई पड़ी है दल की बहार मुझसे,
वह ख़्वाब में कल आकर,
बरबाद कर गया है अपनी झलक दिखाकर,
जो सिजदागाहे-दिल[९] है,
नूरे–निगाहे–दिल[१०] है,
आज़ार-ख़्वाहे-दिल[११] है,

---

१. भूल जाने को तैयार २. भूल का राजकुमार ३. निगाह के लिये आफ़त, बहुत सुन्दर ४. विरह का संदेस ५. खुशी से निराश ६. मिटने वाला जीवन ७. ध्यान ८. पहलू में ९. दिल के सिजदा करने की जगह १० दिल की निगाह के लिये रोशनी ११. दिल के लिये तकलीफ़ चाहने वाला।

मेरी मुसीबतों की, मेरी अजीयतों की,
परवा नहीं है जिसको,
इक बार देखकर फिर, देखा नहीं है जिसको,
उसको मेरी खबर दे,
मेरा यह काम कर दे,
मिल जाय तो मकाँ तक, तू उसके आस्ताँ तक,
अय खुश खिराम ले जा,
मेरा पयाम ले जा।

(४)

ले जा मेरा तकल्लुम[१] दुख से भरा तबस्सुम,
जज़्बात का तलातुम[२], दिनरात का तवाहुम[३],
ले जा मेरी जबीं से अक्से-खते-शिकस्ता[४],
गेसूये अम्बरीं के खमहाये गर्द-बस्ता[५],
पर खोल कर छुपाले,
पैकर[६] को अपने प्यारे तस्वीरे-ग़म[७] बना ले,
रंगे-सकूँ[८] भी ले जा,
सोज़े-दुरूँ[९] भी ले जा,
जोशे-जुनूँ[१०] भी ले जा,

---

१. बातचीत २. तूफ़ान ३. वहम ४. ले······शिकस्ताँ—मेरे माथे से मिटी हुई लकीरों का अक्स ले जा, ५. गेरूये···बस्ता—और मेरे मिट्टी से अटे हुये अम्बरी बालों के लच्छे ले जा ६. शरीर ७. दुःख की तस्वीर ८. शान्ति का रंग ९. छुपी हुई जलन १०. पागलपन का जोश।

हर वक़्त की उदासी यह मेरी बदहवासी,
हसरत भरी निगाहें,
नज़रों में जज़्ब करले भर ले लबों में आहें,
दुनिया का दिल हिला दे,
पैग़ामे ग़म सुना दे,
मेरी ख़ामोशियों की और ज़ब्त-कोशियों[१] की
तर्ज़े-कलाम[२] ले जा,
मेरा पयाम ले जा।

(५)

तू मेरा राज़दाँ है ग़मख्वारो-मेहरबाँ[३] है,
सैयाहे-आसमाँ[४] है तैयारये-रवाँ[५] है,
उखड़ा हुआ लबों का मेरे यह रंग ले जा,
होटों का रंग ले जा, दिल की उमंग ले जा,
आमादा तू अगर हो,
दूं मैं तुझे दुआयें, गर मेरा नामावर हो,
कुछ तो मिले सहारा,
फ़ुरक़त नहीं गवारा,
सुनले मेरी ख़ुदारा,
ले जा यह महज़रे-ग़म[६] बेकार दफ़्तरे-ग़म

---

१. ज़ब्त करना २. बातचीत करने का तरीक़ा ३. महरबान और दोस्त ४. आस्मान की सैर करने वाला ५. हवाई जहाज ६. दुःख की दरख्वास्त।

लिखती हूँ मैं लहू से,
मकतूबे-हसरत-आगीं[1] लबरेज़ आरज़ू से,
यह ख़त, यह शौक़नामा[2],
यह इज़्तराबे–ख़ामाँ[3],
जिसमें भरी हुई है, तहरीर की हुई है,
रूदादे-शाम[4] ले जा,
मेरा पयाम ले जा।

---

१. निराशा से भरा हुआ ख़त २. प्रेम पत्र ३. क़लम की बेचैनी ४. (बिरह की) शाम की कहानी

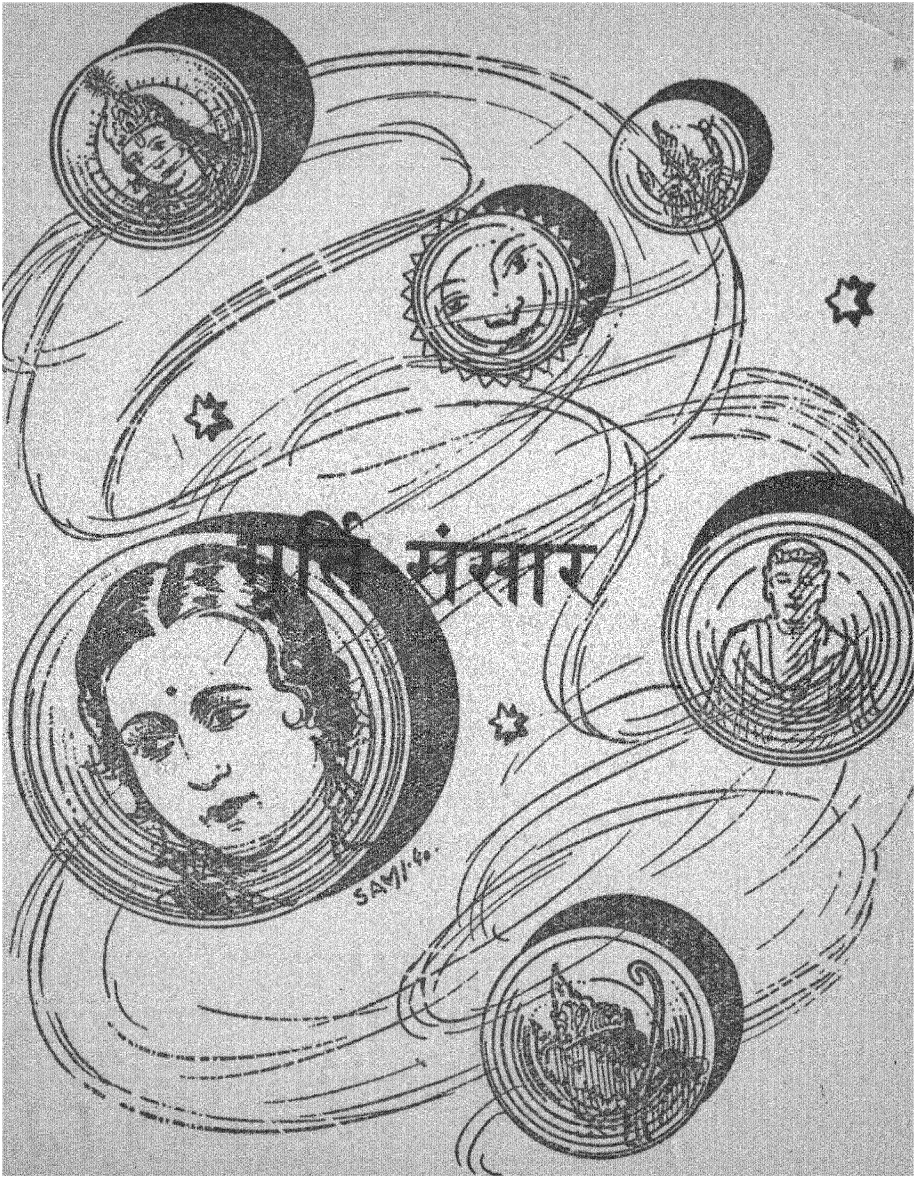
मूर्ति संसार
SAMI.40.

तीसरा हिस्सा

सूरज

लैलिये-शब[1] शर्माई हुई थी,
जुल्फ़ मगर लहराई हुई थी,
तारीकी सी छाई हुई थी,
तारों को नींद आई हुई थी,
चाके-सहर[2] इक सीनये-शक़[3] था,
फीके चाँद का चेहरा फ़क़ था।

महव थीं ख्वाबे-नाज़[4] में कलियाँ,
थी खामोश फ़ज़ाये-बुस्तां[5],
चश्मों की आँखें थीं लरज़ाँ,[6],
दुनिया थी ज़ुल्मात—बदामा[7],
करती थी जब रात इशारा,
हँस देता था सुबह का तारा,

---

१. रात की लैला २. सुबह का गला ३. फटा हुआ सीना ४. सुन्दर सपना ५. बाग़ की फ़ज़ा ६. काँपती हुई ७. अन्धियारी से मुराद है।

ज़र्रों में इक ख़ामोशी थी,
सब्ज़े में ग़फ़लत-कोशी[1] थी,
तारीशाने–बेहोशी[2] थी,
रूपोशी[3] ही रूपोशी थी,
पोशीदा दुनिया थी ऐसे,
बुर्क़े में दुल्हन हो जैसे।

सुबह के कुछ आसार ऐसे थे,
चाँद के जल्वे माँद पड़े थे,
बासी फूलों के गहने थे,
सोने वाले ऐंड रहे थे,
दुनिया नींद की थी मतवाली,
पत्ता—पत्ता डाली—डाली।

आखिर खत्म हुआ यह आलम,
शान से निकला नैयरे-आज़म[4],
रोशनतर[5] इक नूरे-मुजस्सम[6],
हाथों में किरनों का परचम,
जर्रों को चमकाता निकला,
भैरों राग सुनाता निकला।

खाक को दर्पन करने वाला,
कोह को मादन करने वाला,

---

१. सब्ज़ा सोया हुआ था २. बेहोशी की शान छाई हुई थी ३. छुपाना ४. सबसे बड़ा सितारा, सूरज ५. जगमगाता हुआ ६. सर से पाँव तक नूर।

ख़ार को गुलशन करने वाला,
चाँद को रोशन करने वाला,
दम भर में दुनिया चमका दी,
नूर की इक चादर फैला दी।

पहले धरती माता जागी,
फिर राजा, फिर परजा जागी,
कोयल उट्ठी मैना जागी,
मस्त आँखों में निंदिया जागी,
मस्जिद ने दरवाज़े खोले,
मन्दिर जाग उट्ठा, बुत बोले।

कमसिन भोले भाले उट्ठे,
नींदों के मतवाले उट्ठे,
तन कर सोने वाले उट्ठे,
मुँह पर आँचल डाले उट्ठे,
सखियाँ जल-सन्मान को उट्ठीं,
जमना के असनान को उट्ठीं।

हर दर जागा, हर घर जागा,
नज़रें जागीं, मन्ज़र जागा,
मयकश, शीशा, दरबर जागा,
साक़ी जागा, साग़र जागा,
चश्मे-जादूग़ा जाग उट्ठी,
वह जागे दुनिया जाग उट्ठी

पुजारिन

अय मंदिर का राज़ पुजारिन, अय फ़ितरत का साज़ पुजारिन,
प्रेम नगर की रहने वाली, हर की बतियां कहने वाली,
सीधी सादी भोली-भाली, बात निराली, गात निराली,
गर्दन में तुलसी की माला, दिल में इक ख़ामोश शिवाला,
होटों पर पैमाने रक़्सां[1], आँखों में मयख़ाने रक़्साँ,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

भीनी-भीनी बू सारी में, सारी मद में तू सारी में,
आँखों में जमना की मौजें, बालों में गंगा की लहरें,
नूर तेरे रुख़सारे-हसीं पर, रंगीं टीका पाक जबीं पर,
जैसे फ़लक[2] पर सुबह का तारा, रोशन रोशन प्यारा प्यारा,
शर्मीली मासूम[3] निगाहें, गोरी गोरी नाज़ुक बाहें,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

---

१. नाचते हुये २. आस्मान ३. भोली।

फूलों की इक हाथ में थाली, मोहन, मदमाती, मतवाली,
नीची नज़रें तिरछी चितवन, मस्त पुजारिन हर की जोगन,
चाल है मस्ताना मतवाली, और कमर फूलों की डाली,
दिल तेरा नेकी की मंज़िल, लाखों बुतख़ानों का हासिल,
हस्ती[1] तुझमें झूम रही है, मस्ती आँखें चूम रही है,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।
नूर के तड़के घाट पै आकर, गंगा का सम्मान बढ़ा कर,
फिर लेकर खुशबूएँ सारी, चन्दन जल और दूब सुपारी,
सुबह के जल्वों को तड़पा कर, नज़्ज़ारे से आँख बचा कर,
अय मन्दिर में आने वाली, प्रेम के फूल चढ़ाने वाली,
हस्ती भी है गुलशन तुझसे, सूरज भी है रोशन तुझसे,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।
लौट चली तू करके पूजा, देख लिया ईश्वर का जल्वा,
ठहर ठहर अय प्रेम पुजारिन, मैं भी करलूं तेरे दर्शन,
देख इधर घूंघट निहुरा कर, अपने पुजारी पर किरपा कर,
सब की पूजा ज़ोहदो-ताअ़त[2], मेरी पूजा तेरी उल्फ़त,
हर का घर है तेरा पैकर, तू खुद है इक सुन्दर मन्दिर,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

---

१. जीवन २. पवित्रता और बन्दना।

आँख में मेरी है इक आँसू, जैसे हो नद्दी में जुगनू,
माला में कर इसको शामिल, यह मोती है तेरे क़ाबिल,
ध्यान से अपने प्रान बचा कर, पाओं से तेरे आँख मिला कर,
प्रेम का अपने नीर बहा दूं सब कुछ तुझ पर भेंट चढ़ा दूं,
पापी दिल मेरा सुख पाये, मेरी पूजा क्यों रह जाये,

अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

आ तेरी सूरत को पूजूं, मैं ज़िन्दा मूरत को पूजूं,
तू देवी, मैं तेरा पुजारी, नाम तेरा हर सांस से जारी,
लाग की आग में तन को भूना, फिर मन्दिर है दिल का सूना,
मन में तेरा रूप बसा लूँ, तुझको मन का चैन बना लूँ,
छुप जा मेरे दिल के अन्दर, हो जाये आबाद यह मन्दर,

अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

तुझको दिल के गीत सुनाऊँ, फिर चरणों में सीस नवाऊँ,
त्रिलोक और आकाश झुकादूं, धरती की शक्ती लचका दूं,
तारे चाँद और भूरे बादल, बाग़ नदी दरिया और जंगल,
परबत रूख और मस्जिद मन्दिर, साक़ी पैमाना और साग़र,
दुनिया हो तेरे क़दमों पर, क़दमों के नीचे मेरा सर,

अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

एक पुजारिन, एक पुजारी, प्रीत की रीतें कर दें जारी,
देस में प्रीत और प्यार को भरदें, प्रेम से कुल संसार को भरदें,
लोभ और लाभ के बुत को तोड़ें, पाप और क्रोध का नाम न छोड़ें,
प्रेम का रस दौड़े रग रग में, हो इक प्रेम की पूजा जग में,
दोनों इस धुन में मर जायें, तीरथ एक अजीब बनायें,
अय देवी का रूप पुजारिन,
तेरा रूप अनूप पुजारिन।

औरत

औरत इक फूल है जहाँ में।
ख़ुशबू में गुलाब से भी बढ़ कर, मस्ती में शराब से भी बढ़कर,
उसकी आँखें हया की किश्ती,
नज़रें उसकी हसीन मन्दिर,
उसकी बातें हरी की बंसी,
उसके होटों पै खेलता है, हल्का-हल्का सा इक तबस्सुम,
कच्ची कलियों का बन्द बरबत[1],
आवाज़े-शगुफ़्त[2] का तरन्नुम,
नकहत[3] से, नसीम[4] से भी नाज़ुक, मासूम शमीम[5] से भी नाज़ुक,
औरत इक फूल है जहाँ में,
ख़ुशबू है इसकी जिस्मो-जाँ में,

(२)

औरत इक हूर की नज़र है,
नीची नीची झुकी झुकी सी मस्तो-मख़मूर[6] सी रसीली,

---

१. बाजा २. कली के चटख़ने की आवाज़ ३. फूलों की ख़ुशबू ४. सुबह चलने वाली हवा ५. फूल की ख़ुशबू ६. नशीली।

सब को तस्कीन देने वाली,
मासूम हैं उसकी सब अदायें,
लेकिन दिल छीन लेने वाली,
उसकी हस्ती दिलों की बस्ती, उससे आबाद घर की महफ़िल,
उसकी तसख़ीर[१] बादशाही,
उसकी तफ़सीर[२] सब से मुश्किल,
फ़ितरत का हसीन इक मोअम्मा[३] क़ुदरत का लतीफ़तर-अतीया[४],
औरत इक हूर की नजर है,
या इक जन्नत जमीन पर है,

(३)

औरत रंगीन इक कमल है,
सुन्दर, कोमल, हसीन, प्यारा, हल्के बादल में जैसे तारा,
अहसास की एक शमए-रोशन[५],
उसका पैकर[६] वफ़ा की दुनिया,
उसकी हस्ती ख़ुशी का गुल्शन,
उसकी पलकों की लर्ज़िशों[७] में, काले भौंरों की थरथराहट,
हैं आँख में मामता के आँसू,
लब पर रंगीन मुस्कराहट,
कैफ़े-उल्फ़त[८] से मस्त पैकर ख़ुश्बूए वफ़ा से दिल मअत्तर,
औरत रंगीन इक कमल है,
इश्क़े-जावेद[९] का महल है,

---

१. विजय २. बयान करना ३. पहेली ४. बहुत कोमल देन ५. जगमगाता दीपक ६. शरीर ७. थरथराहटें ८. प्रेम का नशा ९. अमर प्रेम ।

देवी

(१)

अय असरे[1] बेदार की देवी, अय हुस्नो-ईसार[2] की देवी,
आँखें तेरी फूल कंवल के, पल्कें हैं मदमाते भौंरे,
नज़रों में हीजाने—तरन्नुम[3], होटों पर तूफ़ाने—तबस्सुम[4],
जैसे इक ख़ामोश-ग़ज़लख़्वाँ[5], तितली जैसे फूल पै रक़्साँ[6],
नूर है तेरे रुख़्सारों पर, धूप है गोया गुल्ज़ारों पर,
रुख पै काकुल रेशम वाले, काले काले कुंडली डाले,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(२)

आँख बज़ाहिर है बे-बादा[7], जैसे हो इक सागर सादा,
लेकिन अय मयख़ानये[8] जारी, तुझसे है इक कैफ़ सा जारी[9],

---

१. जगता हुआ ज़माना २. सुन्दरता और क़ुर्बानी ३. संगीत का जोश ४. मुस्करा[ह]
का तूफ़ान ५. प्रेम के ख़ामोश गीत गाने वाला ६. नाचती हुई ७. मदिरा से ख़ा[ली]
८. हमेशा खुला रहने वाला मयख़ाना ९. छाया हुआ।

शमए-मोहब्बत[१], हुस्न की मिशअ़ल[२], क़द तेरा इक बर्क़-मुशक्कल[३],
चाँद तेरी चौखट का ज़र्रा, सूरज सायल[४] तेरे दर का,
माथे से हैं तारे पैदा, तारे पैदा चाँद हवैदा,
तू सर-ता-पा नूर है गोया, दुनिया की इक हूर है गोया,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(३)

गीत को बातें शर्माती हैं, साँसें खुशबू बरसाती हैं,
प्रेम का झूला गोरी बाहें मुड़-मुड़ जायें, झुक-झुक जायें,
हुस्न के बन की चंचल आहू[५], सर से पा तक मुतलक जादू,
होटों को अपने चमका दे, हल्की सी बिजली लहरा दे,
हंसते हंसते बेखुद हो जा, और तबस्सुम में खुद खो जा,
नशे में सरशार[६] है दुनिया, फुकने को तय्यार है दुनिया,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(४)

आह यह तेरा नाज़ुक पैकर, शबनम की गोद और गुलेतर[७],
यह तन यह खद्दर की सारी, उफ़ रे तेरी सादाकारी[८],
दिल को पैहम लाग वतन की, रूह में रोशन आग वतन की,
रद्दे-गुलामी[९] करने वाली, अपने वतन पर मरने वाली,

---

१. प्रेम दीपक २. मशाल ३. मूर्तिमान बिजली ४. भिखारी ५. मृग ६. मुग्ध ७. ताजा फूल ८. सादगी ९. गुलामी मिटाना।

रानी है, शहज़ादी है तू, तस्वीरे—आज़ादी है तू,
दिल में इक तूफ़ाने-अमल है, होटों पर फ़र्माने-अमल[1] है,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(५)

सांस में तेरे क़ौमी नग़मा, हाथ में आज़ादी का झंडा,
सर में सौदाये—क़ुर्बानी[2], दिल से आँखों तक है पानी,
ग़ैज़[3] में जब थर्राती है तू, जोश में जब आ जाती है तू,
मग़रिब[4] का दिल थर्राता है, मशरिक़[5] को जोश आजाता है,
तूने असली काम किया है, अपने वतन का नाम किया है,
सोता भी होशियार है अबतो, औरत भी बेदार है अब तो,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(६)

दिल मेरा सुन्सान पड़ा था, मन-मन्दिर वीरान पड़ा था,
रूहकी प्यासी क्वाँरी चुप थी, दुखियारी बेचारी चुप थी,
तूने ली जज़्बात में चुटकी, मेरे महसूसात में चुटकी,
लज़्ज़त से लबरेज़ है सीना, अब जीना है मेरा जीना,
आँख में आँसू लब पर आहें, दिल वहशी हैरान निगाहें,
मीठा मीठा दर्द सा होना, तकियों में सिर देकर सोना,

---

१. काम करने का फ़र्मान २. क़ुर्बानी की धुन ३. गुस्सा ४. पश्चिम, योरप ५. पूर्व, एशिया

अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

(७)

पहले तू नज़रों में समाई, फिर चुपके से दिल में आई,
रूह-महल में पहुँची दिल से, इस महफ़िल से उस महफ़िल से,
हँसती आई, गाती आई, प्रेम का साज़ बजाती आई,
दौड़ी रगरग में ख़ूँ बनकर, जादू बन कर अफ़सूँ[१] बन कर,
रूह में तू है, दिल में तू है, अब तो हर महफ़िल में तू है,
कब है अलग दरिया से क़तरा, मैं ख़ुद हूँ तेरा ही जलवा,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

आ तेरे क़दमों को चूमूं, चूमूं और मस्ती में झूमूं,
आँखों से एक नहर बहादूँ, हीरों का इक खेत उगादूँ,
तू करदे गर चन्द इशारे, तोड़ के लाऊँ चर्ख़ से तारे,
उनसे ज़रीं[२] ताज बनाऊँ, ख़ुश होकर तुझको पहनाऊँ,
ताज से इक शोला पैदा हो, फूँक दे जो मेरी हस्ती को,
ख़ाक पर फिर तू नज़रें डाले, जोत जगत की फिर बन जाये,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

---

१. जादू २. सुनहरा

(८)

जिस्म नया हो जान नयी हो, दुनिया की हर शान नयी हो,
ज़िन्दानी मशरब[१] हो मेरा, दारो-रसन[२] मज़हब हो मेरा,
हुब्बे-वतन में जान भी दे दूं, जान ही क्या ईमान भी दे दूं,
सीने में पैवस्त[३] हो बर्छी, लब में तबस्सुम, दिलमें गोली,
खून से सारा पैकर तर हो, तेरा ज़ानू मेरा सर हो,
दिल से तू सीने को मिलाये, मरते दम इक जाम पिलाये,
अय असरे-बेदार की देवी,
अय हुस्नो-ईसार की देवी।

---

१. धर्म २. जेल में रहना ३. खुप जाना

हिन्दू देवी

(१)

सुबह को जमना किनारे मौज[१] सी पैदा हुई मौज की गोदी से हिन्दू स्त्री पैदा हुई,
हाथ में सारी का आँचल, ज़ुल्फ़ लहराई हुई, लब पै हलका सा तबस्सुम[२] आँख शर्माई हुई,
कृष्ण की बंसी में फिर इक लहर सी पैदा हुई, लहर ने इक गीत गाया, गीत की पूजा हुई,
मौज की गोदी से हिन्दू स्त्री पैदा हुई,
शान्ती पैदा हुई,
मोहनी पैदा हुई,
सुबह को जमना किनारे मौज सी पैदा हुई ।

(२)

सुर्ख़ टीका पाक माथे पर नज़र जादू भरी, रूप में नर-मोहनी, मुनि-मोहनी, सुर-मोहनी,
रूह में शमये-मुहब्बत[३] की मुक़द्दस-रोशनी[४] दिलमें ग़मकी आग ख़ुद कुदरतकी दहकाई हुई,
मुस्तक़िल इक नग़मये-रंगीं[५] मुजस्सम-रागनी[६] प्रेम और रूहानियत की ग़ैरफ़ानी[७] बाँसुरी,
मौज की गोदी से हिन्दू स्त्री पैदा हुई,

---

१. लहर २. मुस्कान ३. प्रेम का दीपक ४. निर्मल ज्योति ५. रंगीन गीत ६. सशरीर रागिनी ७. अमर ।

महजबीं[१] पैदा हुई,
नाज़नी[२] पैदा हुई,
सुबह को जमना किनारे मौज सी पैदा हुई ।
गूंज उठा ज़मज़मों[३] से नग्मा-ज़ारे ज़िन्दगी[४], मुस्कराई नौ-उरूसे-कामगारे–ज़िन्दगी[५],
इक नयी ख़ुशबू से महका लालाज़ारे-ज़िन्दगी[६], गोशे गोशे में हुआ जश्ने-बहारे-ज़िंदगी[७],
हो गये पुरनूर[८] सब नक़्शो-निगारे-ज़िन्दगी[९], ज़र्रा ज़र्रा बन गया आईनादारे-ज़िन्दगी[१०],
मौज की गोदी से हिन्दू स्त्री पैदा हुई,
ज़िन्दगी पैदा हुई,
कामिनी पैदा हुई,
सुबह को जमना किनारे मौज सी पैदा हुई,
मौज की गोदी से हिन्दू स्त्री पैदा हुई ।

---

१. चाँद जैसे माथे वाली २. कामिनी ३. ज़मज़मा–दूर से आने वाली आवाज़ ४. जीवन संगीत की जगह ५. ज़िन्दगी की नई दुल्हन ६. ज़िन्दगी का बाग़ ७. जीवन की बहार का जश्न ८. जगमगाहट से भरा हुआ ९. ज़िन्दगी के नक़्शो-निगार १०. जीवन को दिखाने वाला ।

भिकारन

ओ कमसिन कमसाल भिकारन,
ओ अफ़सुरदा-हाल[1] भिकारन,
मैले मैले गालों वाली,
उलझे उलझे बालों वाली,
ओ दीवानी क़िस्मत वाली,
ओ शाहानी सूरत वाली,
सर में गर्द और ख़ाक बदन पर,
मैला मैला कुरता तन पर,
किसका ज़ेवर किसका गहना,
ओ सादा फ़ितरत[2], क्या कहना !

आह भिकारन,वाह भिकारन !
देख इधर लिल्लाह, भिकारन !!

यह तेरी नूरानी सूरत,
यह मुखड़े पर गर्दे-हसरत[3],

---

१. बुरे हाल १. सादी तबियत ३. निराशा की ख़ाक।

यह मौसम यह मस्त जवानी,
उस पर इशवों[1] की उरयानी,
पर्दे की पाबन्द नहीं तू,
बेपर्दा हरचन्द नहीं तू,
ग़ालिब है वीरानी तुझ पर,
तारी है हैरानी तुझ पर,
बरबादी तेरा पर्दा है,
दर-पर्दा[2] किसने देखा है,

आह भिकारन, वाह भिकारन !
देख इधर, लिल्लाह भिकारन !!

बाल नहीं मुहताजे-शाना[3]
आँखें सुरमे से बेगाना,
मेंहदी से है पाक हथेली,
जब चाहा अंगड़ाई ले ली,
लूट रही है दिल की बस्ती,
हाथ में कासा, आँख में मस्ती,
इश्क़ की मज़हर, ग़म की जोगन,
हुस्न की मालिक और भिकारन,
खुद इशरत[4] और तिश्नए-इशरत[5],
खुद दौलत और खस्तए-दौलत[6],

---

१. इशवा–नाज़ २. पर्दे में ३. कंघी की मुहताज ४. ऐश-आराम ५. ऐश आराम की प्यासी ६. जिस पर माया न हो ।

आह भिकारन, वाह भिकारन !
आह न भर, लिल्लाह भिकारन !!

ज़ुल्फ़ वबाले–दोश[1] नहीं है,
सीने का भी होश नहीं है,
सो गई जब नींद आँख में आई,
उठ बैठी लेकर अंगड़ाई,
जो कुछ मिल जाय खा लेना,
चुपके चुपके कुछ गा लेना,
उफ़ रे, तेरी शाने-तवक्कुल[2]
ये सिन ये सामाने तवक्कुल,
अजज़े–मुकम्मल[3] बातें तेरी,
दोशीज़ा[4] हैं रातें तेरी,

आह भिकारन, वाह भिकारन !
आह न भर लिल्लाह, भिकारन !!

देख के दिल भर आया मेरा,
आ मैं भर दूं कासा तेरा,
माँग ले जो कुछ माँगा जाये,
लूट ले, जितना लूटा जाये,
दिल ले ले, ईमान भी ले ले,
जी चाहे तो जान भी ले ले,
मैं भी तेरा दिल भी तेरा,
सामाने महफ़िल, भी तेरा,

---

१. कंधे का वबाल २. ख़ुदा पर भरोसा करने की शान ३. पूरी आजिज़ी ४. कुँवारी ।

'साग़र' तेरा, साक़ी तेरा,
तू मेरी और बाक़ी तेरा,
आह भिकारन, वाह भिकारन !
माँग मुझे, लिल्लाह भिकारन !!
आ मैं तेरे बाल संवारूँ,
नज़्ज़ारों से गाल संवारूँ,
रूह बना कर तन में रक्खूं,
आँखों की चिलमन में रक्खूं,
बन जा बज़्मे-दिल की रानी,
इस दुनिया में कर सुल्तानी,
मैं तेरा जोगी बन जाऊँ,
दर पर साइल बन कर आऊँ,
तुझसे माँगूं भीक सुकूं[1] की,
हो जाये तकमील[2] जुनूं की,
आह भिकारन, वाह भिकारन !
माँग मुझे, लिल्लाह भिकारन !!

१. शांति २. पूरा हो जाना ।

मुतरिबा[1]

मस्त ज़मज़मा-नवाज़[2] गाये जा, बजाये जा,
ओ हसीन मुतरिबा ! कोई गत सुनाये जा ।
दामने—बहार[3] पर,
मौजे—जूयेबार[4] पर,
शाखे—ग़ुँचाबार[5] पर,
फ़र्शे—लालाज़ार[6] पर,
ख़ाकेज़र—निगार[7] पर,
तुरबते—हज़ार[8] पर,
ओ हसीन मुतरिबा ! कोई गत सुनाये जा,
मस्त ज़मज़मा—नवाज़ गाये जा, बजाये जा ।
है नज़र में नूर भी,
आँख में सुरूर भी,

---

१. गानेवाली २. गायिका ३. बसन्त ऋतु का दामन ४. जूयबार की लहर, जूयबार वह जगह जहाँ बहुत सी नहरें बह रही हों ५. कलियाँ बरसाने वाली टहनी, ६. बाग़ की ज़मीन ७. जिस मिट्टी पर सोने का काम हो रहा हो ८. बुलबुल की क़ब्र

कैफ़ का वफ़ूर[१] भी,
हुस्न का ज़हूर भी,
पास भी है, दूर भी,
आदमी भी हूर भी,
मस्त ज़मज़मा–नवाज़, गाये जा बजाये जा,
ओ हसीन मुतरिबा ! कोई गत सुनाये जा,
महव[२] है खयाल भी,
वज्द[३] में हैं हाल भी
सब्ज़ा भी निहाल[४] भी,
नक़्स[५] भी कमाल[६] भी,
मस्त हैं, ज़बाल[७] भी,
नौजवाँ ग़िज़ाल[८] भी,
ओ हसीन मुतरिबा ! कोई गत सुनाये जा,
मस्त ज़मज़मा–नवाज़ गाये जा, बजाये जा।
पैकरे—अजायबात[९],
शोलए—तजल्लियात[१०],
रुख़ में है यमे, हयात[११],
ज़ुल्फ में चमन की रात,
नग़मरेज़[१२] तेरी गात[१३],
खींच लेंगी कायनात,

---

१. ज्यादती २. खोया हुआ ३. बेहोशी ४. छोटा पौदा ५. कमी ६. इन्तिहा ७. जबल-पहाड़ ८. हिरन ९. अनोखी चीज़ों का शरीर १०. रोशनियों की लपट ११. जीवन का समुद्र, यम-समन्दर १२. गीत बरसाने वाली १३. शरीर।

मस्त ज़मज़मा–नवाज़, कोई गत सुनाये जा,
ओ हसीन मुतरिबा ! गाये, जा बजाये जा,
हुस्न ज़मज़मा–तराज़[1],
दिल-गुदाज़[2] दिल-नवाज़[3]
आँख तर्जुमाने—राज़[4],
और नज़र पयामे-नाज़[5],
आह ये क़दे—दराज़,[6],
हश्र–ख़ेज़ो[7] हश्र–साज़,
ओ हसीन मुतरिबा ! गाये जा बजाये जा,
मस्त ज़मज़मा–नवाज़ कोई गत सुनाये जा।
ये नशिस्ते—नाज़नीं[8],
ये अदाए–दिल–नशीं[9] ,
ये निगाहे—शरमगीं[10],
क़ामत[11] और बेहतरीं,
सुर्ख़ और मरमरीं[12],
गेसू और अम्बरीं
मस्त ज़मज़मा—नवाज़ कोई गत सुनाये जा,
ओ हसीन मुतरिबा ! गाये जा बजाये जा।

---

१. गीत पैदा करने वाली ख़ूबसूरती २. मन को लुभाने वाली ३. मनहर ४. भेद बताने वाली ५. नाज़ का संदेसा ६. लम्बा क़द ७. क़यामत उठाने वाली हश्र-क़यामत ८. बैठने का नाज़नीं अन्दाज़ ९. प्यारी अदा १०. लजाई हुई नज़र ११. क़द १२. संगमरमर जैसा सफ़ेद चेहरा

ओ दुशीज़ा साहिरा[1],
उँगलियां न रोकना,
वरना आलमे—बक़ा[2],
दौर[3] भूल जायगा,
ओ हसीन मुतरिबा,
ज़िन्दगी बढ़ाये जा,
ओ हसीन मुतरिबा ! कोई गत सुनाये जा,
मस्त ज़मज़मा–नवाज़, गाये जा बजाये जा ।

१. कुमारी जादूगरनी २. जीवन संसार ३. चक्कर

पनघट की रानी

आई वह पनघट की देवी, वह पनघट की रानी,
दुनिया है मतवाली जिसकी और फ़ितरत दीवानी,
माथे पर सेंदूरी टीका, रंगीनो नूरानी,
सूरज है आकाश में जिसकी ज़ौ[1] से पानी-पानी,
छम छम उसके बिछुये बोलें, हरदम छलके पानी,
आई वह पनघट की देवी, वह पनघट की रानी।

कानों में बेले के झुमके आँखें रस के कटोरे,
गोरे रुख़ पै तिल हैं या हैं फागुन के दो भौंरे,
कोमल कोमल उसकी कलाई जैसे कमल के डंठल,
नूरे-सहर[2] मस्ती में उठाये जिसका भीगा आँचल,
फ़ितरत के मयख़ाने की वह चलती फिरती बोतल,
आई वह पनघट की देवी, वह पनघट की रानी।

रग रग जिसकी है इक बाजा और नस नस ज़ंजीर,
कृष्ण मुरारी की बंसी है या अर्जुन का तीर,

---

१. ज्योति २. उषा की ज्योति।

सर से पा तक शोख़ी की वह इक रंगी तस्वीर,
पनघट व्याकुल जिसकी ख़ातिर चंचल जमना नीर,
जिसका रस्ता टुक टुक देखे सूरज सा रहगीर,
आई वह पनघट की देवी, वह पनघट की रानी।

सर पर इक पीतल का गागर, ज़ोहरा को शरमाय,
पाबोसी के शौक़ में जिससे पानी छलका जाय,
प्रेम का सागर बूंदें बन कर झूमा उमडा आय,
सर से बरसे और सीने के दर्पन को चमकाय,
उस दर्पन को जिससे जवानी झाँके और शरमाय,
आई वह पनघट की देवी, वह पनघट की रानी।

मुसाफ़िरा

नज़र को है आदते-तमाशा[1], जहाँ हो जैसा हो जिस तरह हो,
कोई यह हुस्ने-अज़ल से कहदे, कि जल्वा-आरा[2] हो जिस तरह हो,
मगर न इस तरह तीर फेंके, कि चोट खाते ही बैठ जाऊँ,
मैं चाहता हूँ शराबे-जल्वा[3], मुझे गवारा हो जिस तरह हो।
यह हुस्न और यह निखार तोबा,
यह उम्र और यह बहार तोबा।
ख़ुदाई बन्दा बनी हुई है,
अरे मेरे किर्दगार[4] तोबा।
यह सन्दलीं हुस्न की सबाहत[5],
यह होंट और यह इज़ार[6] तोबा।
इलाही तू बुतकदे में इकदिन, खराबे सिजदा हो जिस तरह हो।
यह मलगजी सी सुपेद सारी,
और उसपै यह असवदी[7] किनारी।

---

१. देखने की आदत २. प्रगट होना ३. दर्शन की शराब ४. खुदा ५. गोरापन ६. कपोल ७. काली

नज़र में हल्का सा इक तमव्वुज[१],
लबों पै हल्की सी सुर्ख़ धारी।
यह देखना बार बार छुप कर,
यह नीची नज़रों की शर्म-सारी[२]।
यह तेरी सरशारो-मस्त[३] आँखें,
यह तेरे दाँतों की आबदारी।
है आसमाँ को यह बेक़रारी, कि तू सुरैया[४] हो जिस तरह हो।
तिरा मुझे राहमें सताना,
नज़र का उठ-उठ के बैठ जाना।
उतर के रस्ते में छुप के मेरा,
वह दूर से तुझ को देख आना।
वह रात को चाँद का निकलना,
वह तेरी आँखों का मुस्कराना।
मैं तुझसे इक रब्त[५] चाहता हूँ,
कि हो मुकम्मल न यह फ़साना।
तू साथ हो और ख़त्म बरसों, सफ़र न मेरा हो जिस तरह हो।
लबों की जुम्बिश[६] बता रही है,
कि तू भजन गुनगुना रही है।
चिराग़ आशा का बुझ चुका है,
जो हर से यूँ लौ लगा रही है।

---

१. मौज मारना २. लज्जा ३. मुग्ध और मस्त ४. आकाश पर तारों का झुरमुट
५. सम्बन्ध ६. हिलना

है हर ही हर तेरी हर सदा में,
तू खुद ही हर में समा रही है।
जो हर की जोगन नहीं जवानी,
तो क्यों तू हरद्वार जा रही है ?
तेरी जवानी के बुतकदे में, तेरी ही पूजा हो जिस तरह हो।

मालिन

जलवे तेरे अनोखे, ग़मज़े तेरे निराले,
चितवन है सीधी-सादी, तेवर हैं भोले भाले,
कुहनी तक आस्तीनें, आँचल कमर पै डाले,
रुख़सार गोरे गोरे, ये बाल काले काले,
ओ फूल चुनने वाली !

इक हाथ टोकरी पर, इक हाथ है कमर पर,
ढलका हुआ दुपट्टा, ताज़े-ग़रूर[1] सर पर,
है इक नज़र कदम पर, और इक कदम नज़र पर,
क्यों ये ख़िराम[2] तेरा, पामाल कर न डाले,
ओ फूल चुनने वाली !

नर्गिस भी तक रही है, चश्मे-हया[3] से तुझ को,
कलियाँ भी देखती हैं, हुस्ने-अदा[4] से तुझको,
लबरेज़ पा के काफ़िर, जोशे-वफ़ा से तुझको,
भर कर मये-नमू[5] से, लाते हैं फूल प्याले,
ओ फूल चुनने वाली !

---

१. घमण्ड का ताज २. मटक कर चलना ३. लजीली आँख ४. अदा की खूबसूरती से ५. फूलने फलने की ख्वाहिश ।

तू फूल चुन रही है, और फूल झड़ रहे हैं,
बल तेरी तेउरियों में, रह रह के पड रहे हैं,
क्या तेरी टोकरी में, तारे से जड़ रहे हैं,
हसरत से बाग़ वाले, फिरते हैं दिल संभाले,
ओ फूल चुनने वाली !

फूलों में मैंने अपना, दिल भी मिला दिया है,
फूलों में मिल मिला कर, वो फूल बन गया है,
आयेगा काम तेरे, ये तेरे काम का है,
ओ फूल चुनने वाली, ये फूल भी उठा ले,
ओ फूल चुनने वाली !

दिल के मुआवज़े[1] में वो शय[2] मुझे अता कर,
जो तूने टोकरी में, रक्खी है मुस्करा कर,
रक्खूंगा उसको अपने, पहलू में दिल बना कर,
मैं उसको दिल बना लूं, तू फूल इसे बना ले,
ओ फूल चुनने वाली !

ख़ारे-अलम[3] से क्या क्या, रंजूर है मिरा दिल,
लेकिन जो देख ले तू, मसरूर है मिरा दिल,
ज़ौक़े-शगुफ़्तगी[4] से, मामूर[5] है मिरा दिल,
क्या फूल के एवज़[6] में, मंजूर है मिरा दिल ?
ओ फूल चुनने वाली !

---

१. बदला २. चीज़ ३. दुःख का कांटा ४. खिलने का चसका ५. भरा हुआ ६. बदला ।

अय नकहते-ख़िरामा[१], यूँ जिन्दगी बसर हो,
क़दमों पै तेरे दिल हो, ठोकर में तेरी सर हो,
तुझ पर मेरी निगाहें, मुझ पर तेरी नज़र हो,
इक आँख तेरे रुख़ पर, इक आँख फूल पर हो,
ओ फूल चुनने वाली !

मुझसे मिले तेरा दिल, दिल से लगाऊँ तुझको,
अपनी मसर्रतों[२] का, आलम दिखाऊँ तुझको,
उम्मीद के चमन का, हासिल बनाऊँ तुझको,
ओ फूल चुनने वाली ! मैं चुन के लाऊँ तुझको,
ओ फूल चुनने वाली !

---

१. नाज़ से चलने वाली फूलों की ख़ुशबू २. ख़ुशियाँ ।

उजड़े हुए इबादतख़ाने में

ये पुर-जलाल[1] वादी, दरिया का ये किनारा,
ये उनफ़वाने-सब्ज़ा[2], साहिब दिलाँ—ख़ुदारा[3],
सहने-हरम[4] के रुख़ पर, पत्थर गड़े हुए हैं,
मीनार टूटे फूटे, अब तक खड़े हुए हैं,
आसार से अयां हैं, शाने—कमाल[5] अब तक,
मिट्टी में कौंदती है, बर्क़े जलाल[6] अबतक,
टूटे हुए मुसल्ले, एलाने—पाकबाज़ी[7],
हैं मअ्तकिफ़[8] अभी तक, गोया यहीं नमाज़ी,
ज़र्रों पै कुछ मिटे से, सज्दों के हैं निशां भी,
झोंको में है हवा के, गूँजी हुई अज़ाँ भी,
धुंधली सी चाँदनी में, महराबो दर शकस्ता,
दो ताइरे-हिजाज़ी[9], बैठे हैं पर—शकस्ता[10],

---

१. शौकत से भरी हुई २. हरियाली की आती जवानी ३. ऐ दिलवालो, ख़ुदा के लिये हमारी मदद करो ४. मस्जिद का सहन ५. इंतिहा की शान ६. शान शौकत की बिजली ७. पवित्रता का एलान ८. गोशानशीन ९. हिजाज मुल्क की दो चिड़िया १० पर टूटे हुये ।

अक्से-शकस्ता[1] मौजे—दरिया[2] की आबरू है,
फिर कारवाने—इबरत[3] आमादये वुज़ू[4] है,
आती हैं ग़ुस्ल करके, दरिया से जब हवायें,
वादी में गूँजती हैं, तकबीर की सदायें,

है कीमियाए-ताअ़त[5], मिट्टी जो कोई छानें,
तस्बीह के मिलेंगे अब भी हज़ार दाने ।

तुम अपना सर झुकाये, क्यों इस जगह खड़ी हो,
क्यों बाल हैं परेशां, किस फ़िक्र में पड़ी हो,
तेवर तुम्हारे काफ़िर, इशवा[6] फ़ुसूँ—असर[7] है,
क्या तुम मुसाफ़िरा हो, अज़्मे सफ़र[8] किधर हैं ?
वहशत-कदे[9] में आख़िर, क्यों तुमने ली पनाहें,
गुलशन में क्या नहीं थीं, रंगी फरोदगाहें[10],
क्यूँ मस्त है निगाहे—ग़ारत-असर[11] तुम्हारी,
बरबाद करने वाली ख़ुद, है नज़र तुम्हारी
रूहानियत का जज़्बा, ताबाँ-सा[12], मुंजली[13] सा,
हर साँस से तुम्हारे पैदा है इक कलीसा,
हैं इक तरफ़ निगाहें, और आह भर रही हो,
ज़र्राते मुन्तशर को, क्या जमा कर रही हो ?

---

१. टूटा हुआ साया २. दरिया की लहर ३. इबरत का कारवाँ, इबरत—ख़ौफ़ ४. वुज़ू करने के लिये । ५. बन्दगी की कीमिया ६. नाज़ ७. मन्त्र का असर रखने वाला ८. सफ़र का इरादा ९. जंगल १०. रहने की जगह ११. लुटेरी नज़र १२. रोशन १३. रोशन ।

घबराई सी है चितवन, शर्माई सी नज़र है,
माथे पै है पसीना, चश्मे सियाह् तर है,
ये फ़िक्र, ये तरद्दुद, चेहरे से क्यों अयां है,
इस गौर के मैं सदक़े, आख़िर नज़र कहां है,
बर्बादियों का शायद, एहसास कर रही हो ?
शाने—निसाइयत का[1], यूं पास कर रही हो ?
लेकिन ये हिस[2] कहां थी, जब तुमने दिल दुखाया,
खाना—खराबे-ग़म[3] को, सौ सौ तरह सताया,
बरबाद दिल को करके होती थीं शादमा[4] तुम,
जज़्बाते—बेकसी[5] से आगाह्[6] थीं कहां तुम ?
क्या क्या न रह गुज़र में, फ़ितने उठाये तुमने,
पामाले—राह्—दिल[7] के, खाके उड़ाये तुमने,
जब क्यों हुआ न सदमा, दिल पर अगर असर था,
यह भी ख़ुदा का घर है, वो भी ख़ुदा का घर था।

---

१. औरतपन की शान २. मालूम करना ३. बेठिकाने दिल को ४. खुश ५. लाचारी की भावना ६. जानने वाली ७. रास्ते का पिसा हुआ दिल

बालपन

अय माज़िये मादूम[1] मिरे माज़िये–मादूम,
मादूम मगर अय, मेरे गह्वारये–मासूम[2],
आ हाल कि एवान में इक आन को दमले,
डर है कि तेरी याद भी हो जाय न मौहूम[3],
क्या याद नहीं तुझको वो अव्वाबे–फ़साना[4],
जब लफ़्ज़े-तमन्ना[5] में न मानी थे न मफ़हूम[6],
मजबूर सा मजबूर, न आज़ाद न क़ैदी,
आज़ाद सा आज़ाद, न मजबूर न मज़लूम[7],
हर लफ़्ज़ में इक गीत, तो हर गीत में इक गत,
बे क़ैद वो अशआर न मंसूर[8] न मंज़ूम[9],
छूते हुये जब मुझको लरज़ती थी जवानी,
क्या याद है तुझको वो मेरा आलमे-मासूम[10],

---

१. मिटा और बीता हुआ ज़माना २. भोला पालना ३. मिटा हुआ ४. कहानी के हिस्से ५. आशा का शब्द ६. मतलब ७. जिस पर ज़ुल्म किया गया हो ८. बिरागी ९. रागी

वो आलमे–मासूम,[१] वो फ़िरदौस का सपना,
सरशार[२] न, बेकैफ़[३], न मसरूर[४] न मग़मूम[५],
वो रुख़ पै मेरे काकुले–ज़र्रीनो–परेशाँ[६],
वो लब पै मेरे मौजये-रंगीनिये–मासूम[७],
वो चश्मे–सियामस्त[८], वो जावद शराबी[९],
आँखों में वो डोरे वो मेरी मस्तिये–मरक़ूम[१०],
वो अब्रूये-ख़मदार[११] कमाँ ताने हुये से,
वो गेसुये-पुरपेच[१२] यों हीं बिखरे हुये से,

सरशार वो बामोदरो–गुलज़ारो–बियाबाँ[१३],
गुलचाक–गरेबाँ[१४] चमन–आग़ोश–बदामा[१५],
वो रँग जिसे देख के कुंदन भी लजाये,
वो नूर कि झुक जाय सरे–मह्रेदरख्शा,[१६],
महका हुआ वो पैकरे–रंगीनो–मअत्तर[१७]
दहका हुआ वो क़ामते[१८]–गुलज़ार बदामा[१९],
वह चम्पई रुख़ उस पै पसीने की वे बूँदें,
वो सुफ़ए शफ़्फ़ाफ़ [२०] पै हीरे से नुमायाँ,

---

१. भोला रूप २. नशे में चूर ३. नीरस ४. खुश ५. दुखी ६. बिखरे हुए सुनहरी बाल ७. भोली रंगीनी की लहर ८. मस्त काली आँख ९. अमर पीने वाला १०. लिखी हुई मस्ती आँख के सुर्ख़ डोरों से उपमा है ११. बल खाई हुई भवें १२. बल खाये हुए लट १३. अटारी, दरवाजा, बाग और जंगल १४. फूल गला फाडे हुये १५. बाग़ गोद खोले हुये १६. चमकते हुये सूरज का सर १७. खुशबूदार रंगीन शरीर १८. क़द १९. दामन में गुलजार लिये हुये २०. साफ़ ।

शबनम के वो क़तरात[१], वो पारे के से टुकड़े,
पत्तों पै कमल के कभी क़ायम[२] कभी लरज़ाँ[३],
होटों में वो बरसात की बिजली का ख़जाना,
आँखों में शबे-माह[४] का वो मौसमे-खन्दा[५],
हर वक्त वो होटों में तबस्सुम ही तबस्सुम,
जैसे हो समनज़ार[६] में जुगनू से चराँगाँ[७],
रह रह के तबस्सुम में तरन्नुम ही तरन्नुम,
हालू[८] हो चनारों में कोई जैसे ग़ज़लख़ाँ[९],
गाती हुई वो मद भरी आँखों की सियाही,
श्यामा हो अटारी पै कोई जैसे ग़ज़लख़ाँ,
बूटा सा वो क़द, आह वो एक शमए-फरोज़ाँ[१०],
पर्तो से दरो बाम पै होता था चराग़ाँ,
हँसती हुई बिजली, वो चमकती हुई बिजली,
गुलशन में दिवाली कभी सहरा में चराग़ाँ,
आवाज़ वो आवाज़ कि हर साज़ से आज़ाद,
ख़ुद नग़मओ, ख़ुद बरबतो, ख़ुद साज़े ग़ज़लख़ाँ[११],
मासूम वो वारफ्तगीये-हुस्न[१२] का आलम,
दामन का न कुछ होश न अहसासे गरेबाँ,

१. बूँदें २. ठहरा हुआ ३. काँपता हुआ ४. चाँदनी रात ५. हँसती हुई ऋतु ६. चमेली की क्यारियाँ ७. रोशनी ८. काश्मीर का एक गाने वाला कीड़ा जो चिनार के पेड़ों में हर वक्त गाता रहता है ९. गज़ल गाने वाले १०. रोशन दीपक ११. ख़ुद ग़ज़लख़ाँ—आप ही गीत, आपही सितार और आप ही ग़ज़ल गाने वाले का बाजा १२. सुन्दरता का अल्हड़पन

अल्लाहरे मेरी फ़ितरते-मजनूँ[१] का वो बचपन,
काँटे कभी दामन में, तो काँटों में गरेबाँ,
वो चाल के दौरे–मयो–साग़र[२] भी ख़जिल[३] था,
वो हाल कि बद मस्त[४] था मयखानये-इमकाँ[५],
इक सिलसिलए-लग़्ज़िशे–मस्तानये–पैहम[६],
हर गाम[७] पै जुम्बिश में ख़ुमिस्ताँ[८] का ख़ुमिस्ताँ,
क्यों कर हो तसव्वुर मुझे नाज़ुक-कमरी[९] का,
झोंका था तख़ैयुल[१०] में नसीमे-सहरी[११] का।
वो सोमना[१२] और सोमने की मस्त–फ़ज़ायें,
वो खेत वो मैदान वो घनघोर घटाय,
वो बाग़ में अंग्रेज की अफ़वाज[१३] के डेरे,
बन्दूक़ लिये झील के हर सिम्त वो फेरे,
वो पेटियाँ वो वर्दियाँ वो परचमे–जंगी[१४],
उलझी हुई हर शाख से आवाजे फ़रंगी[१५],

---

१. पागल नेचर २. शराब के प्याले का दौर ३. लज्जित ४. चूरचूर ५. इमक़ान का मयख़ाना दुनिया से मुराद है ६. लगातार मस्ताना तौर पर गिरने का एक सिलसिला ७.क़दम ८. शराब खाना ९. पतली कमर होना १०. ख़याल ११. सुबह-सवेरे चलने वाली हवा १२. ग्राण्ड ट्रंक रोड पर जिला अलीगढ़ का एक छोटा सा गाँव, जहाँ कटरा नामी हिस्से में कवि का बालपन गुजरा। जंगे अज़ीम के ज़माने में अंग्रेज़ी फ़ौज हिंदुस्तान में बहुत कम रह गई थी। फ़ौजी ताक़त के प्रोपेगैण्डे के तौर पर अंग्रेज़ी सरकार हिन्दुस्तानियों पर रौब जमाने के लिये इस बची खुची फ़ौज को सारे हिन्दुस्तान में घुमा रही थी। कटरे के एक बाग़ और बड़े मैदान में फ़ौजों का पड़ाव होता था। फ़ौज को देख कर जो भाव कवि के दिल में पैदा हुआ उसे इस बन्द में जाहिर किया गया है। १३. फ़ौजें १४. लड़ाई का झंडा १५ अंग्रेज की आवाज़ ।

वह बिदके हुये बैल वो सहमा हुआ दहक़ाँ[१],
और साये में कीकर के वो एक तिफ्ले परेशाँ[२],
वो ख़ौफ़ज़दा[३] खेत में मासूम दुलारी,
आँखों में लरज़ती हुई काजल की वो धारी,
वो शाहरहे-आम पै ठिठके हुए आमी[४],
चेहरों पै वो तारीकिये-ईक़ाने-ग़ुलामी[५],
वो झील पै बन्दूक के चलने का धमाका,
वो चर्ख़ से मुर्ग़ाबिये-मजरूह्[६] का गिरना,
वो शोर उठा गाँव पै आई वो तबाही,
वो आये सिपाही अरे वो आये सिपाही,

इस शोर पैं घर से मेरा घबरा के निकलना,
गोदी से बुआजी के वो बल खा के निकलना,
वह क़ल्बे-असाकिर[७] में मेरा जान के जाना,
ख़ालो-ख़ते-आफ़ात[८] को पहचान के जाना,
अल्लाहरे मेरे जज़्बये आज़ाद[९] की तिफ्ली,
चीनी के खिलौने नज़र आते थे फ़रंगी,
बेबाक था किस दरजा मेरा ज़ौक़े-तमाशा[१०],
जंगल था मुझे आईनये-शौक़े तमाशा[११],

---

१. देहाती २. घबराया हुआ बच्चा ३. डर की मारी ४. बे पढ़े लोग ५. ग़ुलामी के विश्वास का अन्धेरा ६. जख़्मी मुर्ग़ाबी ७. लश्कर के बीचो बीच ८. बिपताओं के नखशख ९. आज़ाद भावना १०. देखने का शौक ११. देखने के शौक का आईना ।

वो सोमना, वो सोमने की मस्त फ़ज़ायें,
वो खेत वो मैदान, वो सरशार घटायें,
वो मोर की चीख़ और वो घनघोर घटायें,
वो माबदे-फ़ितरत[१] के पुजारी की सदायें,
झाड़ी में वो श्यामा के तरन्नुम का तलातुम[२],
रक़्क़ासये-फितरत[३] के वो घुंघरू की सदायें,
कोयल की वो कूक और पपीहे की वो पीहू,
इक जाने हज़ीं[४] उस पै बलाओं पै बलायें,
वह झोंपड़ों से फूंस के चक्की का तरन्नुम,
झीलों के किनारे वो टटीरी की नवायें,

बैलों के गले और वो बजती हुई घण्टी,
कांधों पै वो हल और वो किसानों की सदायें,
ठहरे हुए पानी में वो चिड़ियों का नहाना,
छाये हुये कुहरे में वो ठिठरी हुई गायें,
वो मसकनें-चम्पा[५], वो मेरा मामने तिफ्ली[६],
ढलती थीं जहाँ हुस्नो मुहब्बत की अदायें,
वो घेर में जुम्मा[७] के कभी आँख मिचौली,
चम्पा[८] के मकाँ पर वो कभी प्रेम-सभायें,

---

१. प्रकृति का मन्दिर २. संगीत का तूफान ३. प्रकृति की नाचने वाली (श्यामा) ४. दुखिया आत्मा ५. चम्पा का घर ६. बालपन के पनाह लेने की जगह ७. कवि के साथ पढ़ने वाला गांव का एक लड़का ८.एक कमसिन देहाती बच्ची जो कवि के पडोस में रहती थी।

वो चारों तरफ़ कुवाँरियों का मजमये–रंगीं[१],
दोशीज़ा–जवानी[२] कभी दायें कभी बायें,
चम्पा का तक़ाज़ा[३] कि उजाला है अभी तो,
कुछ फूल सिरस के चलो हम बीन के लायें,
चोटी पै सिरस के जो यह तारे से हैं रोशन,
यह फूल भी मिल जाँय तो इक हार बनायें,
वो हार जो दुनियाँ में न गूँधा हो किसी ने,
वो हार जो गुंध जाये तो फिर तुम पै चढ़ायें,
साये में सिरस के वो मुझे भींच के कहना,
इस वक़्त गले मिलके कोई गीत ही गायें,

बालों की लटें चूम के वो झूमना उसका,
और झूम के लेना वो मेरे सर की बलायें,
फिर शाम के पर्दे से वो तारों की गुज़ारिश,
'गर हमको इजाज़त हो तो हम भी चले आयें,'
फिर चाँद से रह रह के शुआओं की सिफ़ारिश,
'इस नस्ल को हम नूर की दुनियाँ में बसायें,
इस उम्र के इन्साँ को करें दायमो कायम[४],
इस उम्र के आदम को ख़ुदा अपना बनायें,
वे चाँद वो गुलबार सिरस और वो सितारे,
वो रेत में मासूम मुहब्बत के तरारे।

---

१. रंगीन भीड़ २. कुंआरी जवानी ३. ज़िद ४. हमेशा रहनेवाला।

बहार की सुबह

उठा सितार मुतरिबा कि सुबह-नौ बहार[1] है,
बहार दर[2] बहार है, निगार[3] दर कनार[4] है,
शजर[5] शजर है गुलचकाँ[6],
कली कली है बोस्ताँ[7],
गलीगली है जरफ़िशाँ[8],
कदम कदम है गुलसिताँ,
रविश[9] रविश निगार है, चमन चमन बहार है,
फ़ुसूँ-बदोश[10] हर रविश पै मोर की पुकार है,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौ बहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।
५ .... वरक़[11] हरीमेगुल[12],
नफ़स-नफ़स–शमीमे–गुल[13],

---

१. बसन्त ऋतु की सुबह २. में ३. प्रेमिका ४. पहलू ५. पेड़ ६. फूल बरसाने वाला ७. बाग़ ८. सोना छड़काने वाली, जर फूल के जीरे को भी कहते हैं। ९. बाग़ की पटरी, रौंस १०. कंधे पर जादू लिये हुए ११. पत्ती पत्ती १२. फूल का रंग महल—हर सांस फूल की खुशबू १३. फूल का ढंढोरा पीटनें वाला।

शमीम हैं नदीमे—गुल,
तयूर[१] हैं कलीमे—गुल[२],
यह साअ़ते–सुबूह[३] है दमे–नवाज़े–रूह[४] है,
अज़ाने—काबये—चमन[५], तरानये हज़ार[६] है,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौ बहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।
उफ़ुक़-बिसाते—तूर[७] है,
तुलूये—रंगो—नूर[८] है,
ग़म आज दिल से दूर है,
हुकूमते—सुरूर[९] है,
लतीफ़ों नर्म और हसीं, हसीनो मस्तो नाज़नी
दमक रही है शीशागूँ[१०] उरूसे-सुबह[११] की जबीं[१२],
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौ बहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।
कनारे—आबशार[१३] है,
हवाये—जूएबार[१४] है,
फ़ज़ाये—को हसार[१५] है,
बहिश्ते—लालाज़ार[१६] है,

---

१. परिंदे २. फूल की बातें करने वाला ३. सुबह की शराब पीने का वक़्त ४. आत्मा की प्रार्थना का वक्त ५. बाग के काबे की अज़ान ६. बुलबुल का तराना ७. उफ़ुक आसमान का किनारा बिसाते तूर-तूर का फ़र्श ८. ज्योति और रंग फूट रहा है ९. खुशी की हुकूमत १०. शीशे के रंग की ११. सुबह की दुल्हिन १२. माथा १३. झरने का किनारा १४. नहरों की हवा १५. पहाडों की फज़ा १६. बाग़ का स्वर्ग

निगार दर कनार है, बहार ही बहार है,
न कह कि जश्ने-ज़िन्दगी[1], फरेबे-एतबार[2] है,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौबहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।

इधर हैं गुल, उधर हैं गुल,
बहार—बामोदर[3] हैं गुल,
निशाते-हर-नज़र[4] हैं गुल,
जमील नग़मा-गर[5] हैं गुल,

बहिश्त बन गया जहाँ, ज़मीं से ताब आस्माँ[6]
ख़िज़ाँ[7] का ज़िक्र आज क्या बयाँ न कर यह दास्ताँ,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौबहार है,
बहारे दर बहार है, निगार दर कनार है।

यह तायराने—खुशनवा[8],
सवारे—-मरकबे—हवा[9],
हसीन और दिलरुबा,
मुग़न्नियाने——सहरज़ा[10],

अकड़ता और झूमता, चमन में मोर आ गया,
कि आसमाने बाग़ से सितारा टूट कर गिरा,

---

१. जीवन का जनून; २. एतबार का धोखा; ३. अटारी व दरवाज़े की शोभा; ४. हर नज़र की खुशी; ५. सुन्दर गवैया; ६. धरती से आकाश तक; ७. पतझड़; ८. अच्छी आवाज़ वाले परिन्दें; ९. हवा के घोडे पर सवार; १०. सुबह पैदा करनेवाले गवैये।

उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौबहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।

वह मालन आई झूमती,
इज़ारे—गुल[१] को चूमती,
वो मोहनी वो कामनी,
दुपट्टा सर पै जामनी,

लबों में कृष्ण-बंसरी मुजस्सम[२] एक बेखुदी,
नसीम बन के बाग़ में चली बहार रागनी,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौबहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।

अकीक़े—माहताब[३] दे,
रक़ीक़—आफताब[४] दे,
गुलाब में शराब दे,
शराब में गुलाब दे,

शराब दे, शराब दे, शबाब दे, शबाब दे,
फ़सुर्दा—कायनात[५] को नवैदे—इन्क़लाब[६] दे,
उठा सितार मुतरिबा कि सुबह नौबहार है,
बहार दर बहार है, निगार दर कनार है।

---

१. फूल का कपोल २. सर से पांव तक ३. चन्द्रमा की शराब, अक़ीक़ एक सुर्ख़ पत्थर को भी कहते हैं ४. घुला हुआ सूरज ५. बुझी हुई दुनिया, दुखी दुनिया ६ क्रान्ति की खुश खबरी।

दो मुसाफिर

मिरे तसव्वुर[1] में हँस रहे हैं, मिरे तखय्युल[2] में चल रहे हैं।
कभी इधर से निकल रहे हैं, कभी उधर से निकल रहे हैं ॥
झुकी हुई नशे से हैं आँखें, तमाम लग्ज़िश[3] बने हैं लेकिन।
यह कोशिशे नातमाम[4] देखो, कि हर क़दम पर सम्भल रहे हैं ॥
क़दम-क़दम पर वो इक तबस्सुम,[5] कभी तबस्सुम कभी तरन्नुम[6]।
वो रुहे-बर्क़ों-सहाब[7] बनकर, हमारे हमराह चल रहे हैं ॥
जमीने—गुलशन[8] अमीन है, मिरे अहदे रंगीने-आशकी[9] की।
जो अश्के—ख़ूनी[10] कभी गिरे थे, वो फूल बनकर निकल रहे हैं ॥
लचक-लचक कर, ठहर-ठहर कर, कभी बिगड़कर, कभी सँवरकर।
वो मेरे हमराह चल रहे हैं, मगर मुसीबत से चल रहे हैं ॥
गरज़ यह है मेरी रुहो दिल[11] को, बयक-अदा[12] पायमाल करदें।
बहाना यह है कि बाजुओं का सहारा ले कर सम्भल रहे हैं ॥

---

१. ख़याल २. ख़याल ३. ठोकर ४. अधूरी कोशिश ५. मुस्कान ६. संगीत ७. बादल और बिजली की आत्मा ८. बाग़ की धरती ९. प्रेम का रंगीन जमाना १०. ख़ून के आँसू ११. आत्मा व मन, १२. एक अदा में।

ताउने-हुस्नो-आशकी[१] है, ज़मीं से ता अर्श[२] बेखुदी है।
मुझे सम्भाले हुए ब-दिक्क़त,[३] वो हर क़दम पर सम्भल रहे हैं॥
चमन-चमन की हयात[४] हैं वो, मुहीत[५] हर कायनात[६] हैं वो।
कभी गुलों पै मचल रहे हैं, कभी सितारों पै चल रहे हैं॥
मदद-मदद जब्ते-इश्क[७] इक चीख, मेरे मुंह से निकल न जाय।
वो हाथ में हाथ मेरे डाले, बड़ी मसर्रत से चल रहे हैं॥
जबाँ में लुकनत, नजर में मस्ती, हरइक कदमपर गुमाने लग्जिश[८]।
मगर दिखाने को उनके 'सागर', तरह-तरह से संभल रहे हैं॥

---

१. प्रेम व सुन्दरता का मिलाप २. आसमान तक ३. मुश्किल से ४. जीवन ५. घेरे हुए ६. हर दुनिया ७. प्रेम का धीरज ८. ठोकर खाने का खयाल।

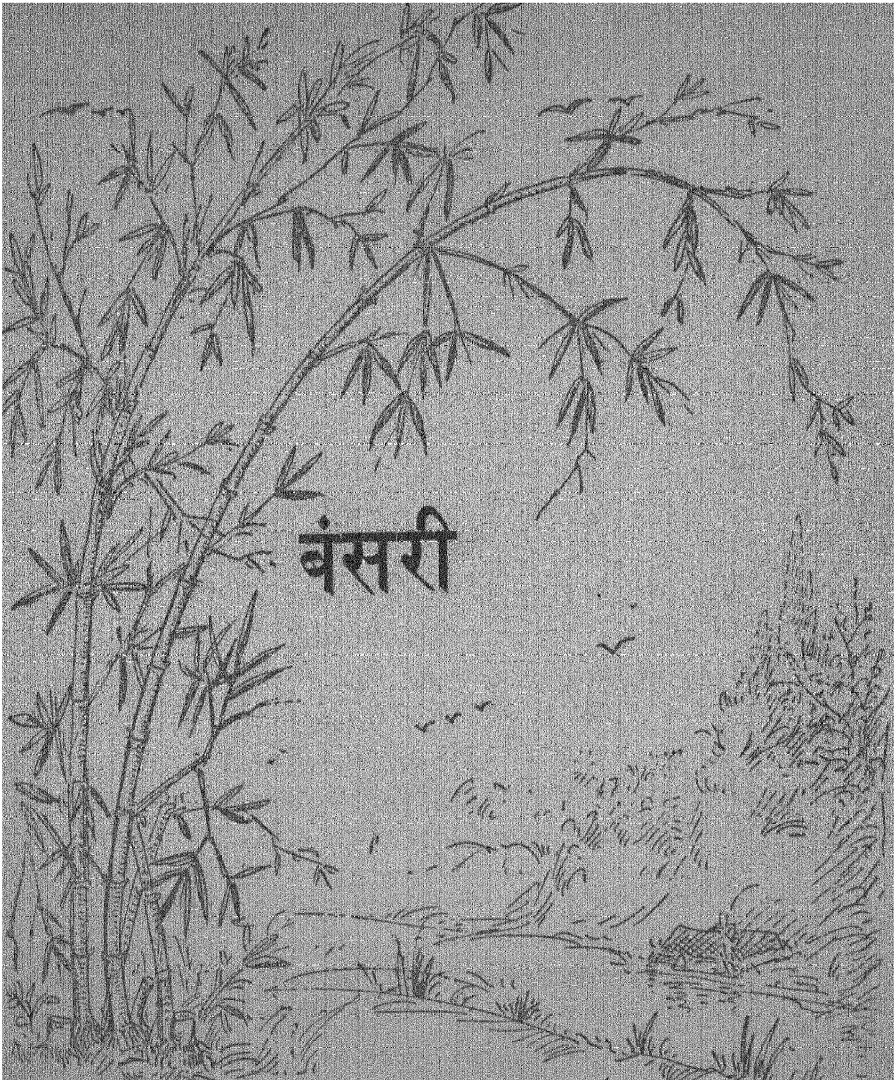
बंसरी
SAMI·40

चौथा हिस्सा

ग़ज़लें

[१]

सुना मुग़न्नी[१] मुझे वो नग्मा कि झूम जाये शबाब[२] तेरा,
अगर ज़रा भी किया तकल्लुफ़ तो छीन लूंगा रबाब[३] तेरा।
ग़ुरुर कर नग्मारेज़ियों[४] पर, मगर मुग़न्नी यक़ीन फ़रमा,
वहीं बना है ये साज़े-दिल[५] भी, जहाँ बना है रबाब तेरा।
सबीह[६] कलियों में मैंने सूंघी, तेरे तबस्सुम की बूये-नाज़ुक[७],
अमीक़[८] चश्मों[९] से मैंने देखा, उबल रहा है शबाब तेरा।
बुलन्द हर बन्दोबस्त से थी हुदूद[१०] में तेरी ख़्वाबगह[११] की,
वो इक निगाहे-ख़याल[१२] मेरी जो लूट लाई हिजाब[१३] तेरा।
न मेरी आँखें सुकूं-तमाशा[१४] न तेरे जलवे क़रार-फ़रमाँ,[१५]
हैं एक सी कशमकश[१६] में दोनों, निगाह मेरी शबाब तेरा।

---

१. गानें वाला, २. जवानी, एक बाजे को भी कहते हैं, ३. बाजा ४. नग्मारेज़ी-गीत बरसाना गाना ५. दिल का बाजा ६. सुन्दर और गोरी ७. कोमल खुशबू ८. गहरा ९. सोते १० हदें ११. सोने की जगह १२. ख़याल की निगाह १३. पर्दा १४. शान्ति देखनें वाली १५. चैन करने वाली १६. उलझन।

लबों से मसकर[१] के तूने साक़ी, किया था लबरेज़ जो अज़ल में,
नज़र में अब तक छलक रहा है वो एक जामे शराब तेरा।
हिसाब की फ़ुरसतें किसे हैं, मगर ये दुनिया का फ़ैसला है,
वफ़ा जो हो बेहिसाब मेरी, सितम जो हो बेहिसाब तेरा।
ये तेरी रौशन निगाहियाँ हैं, कि रात बिजली बनी हुई है,
लतीफ़ पर्दों में सोने वाले, चमक रहा है शबाब तेरा।
पहाड़ तमकीन[२] के खड़े हैं, हया[३] के चश्मे छलक रहे हैं,
अजीब दिलचस्प मंजरों से गुज़र रहा है शबाब तेरा।
कुछ इस मतानत से झूम कर चल, कि टूट जाये निज़ामे-गुलशन,[४]
शगुफ़्तगी[५] बन के फूट निकले, कली-कली से शबाब तेरा।
ये तेरी 'साग़र' सियाह मस्ती यह हुस्न केशी ये मय परस्ती,
कहीं न दुनिया तबाह कर दे मज़ाक़े[६] ख़ाना-ख़राब तेरा।

[२]

ये मफ़िहल में किसने मधुर गीत गाया,
सँभालो सँभालो मुझे वज्द आया।
सियाख़ानये-ग़म[७] में ये कौन आया,
ज़मीं मुस्कराई फ़लक जगमगाया।

वड़ी भूल की हुस्न से दिल लगाया,
दिवाने, यह है एक सपने की माया।

---

१. मस करना—छूना २. क़द्र और इज़्ज़त, शान ३. लज्जा ४. बाग़ का इन्तज़ाम ५. खिलना ६. चस्का ७. दुःख की अन्धेरी कुटिया।

मुझे दे के दावत उन्हें भी बुलाया,
इलाही चमन पर घटाओं का साया।

मोहब्बत में हम पर ये क्या वक़्त आया,
नज़र भी परायी है दिल भी पराया।
मोहब्बत में सूदो-ज़ियाँ[1] की न पूछो,
बहुत हमने खोया बहुत हमने पाया।

अदायें तेरी कोई समझा न समझे,
हँसा कर रुलाया, रुलाकर हँसाया।
न मैं हूँ न वो हैं न दीन और दुनिया,
जुनूने-मोहब्बत[2] कहाँ खींच लाया।

ग़ज़ल मेरी 'साग़र' वो नग़मा है जिसको,
जवानी ने लिक्खा मोहब्बत ने गाया।

[३]

ज़ीनते-दस्ते-हसीं[3] रौनक़े-महफ़िल[4] होता, तुमने जिस फूल को तोड़ा वो मेरा दिल होता
कसरते-कशमकशे-शौक़[5] ने रोका मुझको, वरना अबतक मैं कभी का सरे-मंज़िल[6] होता
न तुम उठकर मेरी आग़ोश[7] से रुसवा होते, न मुरत्तब[8] ये फ़साना सरे महफ़िल होता,
नाख़ुदा[9] की रविशे-फ़िक्र[10] ने मारा वरना, ग़र्क़ होता मैं जहाँ पर वहीं साहिल होता।

खुल गये बज्म पर असरारे मोहब्बत[11] 'साग़र',
और क्या महवियते दीद[12] से हासिल होता।

---

१. नुक़सान और फ़ायदा २. प्रेम का पागलपन ३. सुन्दर हाथ की ज़ीनत ४. महफ़िल की रौनक ५. शौक़ की उलझन की ज्यादती ६. मंज़िल पर ७. पहलू ८. तरतीब देना ९. माँझी १०. सोचने का ढब ११. प्रेम के भेद १२. देखने की महवीयत।

[४]

क्यों गिरफ़्तार मुझे अय मेरे सय्याद किया, और भी फ़ितरते—आज़ाद[१] को आज़ाद किया।
ये तेरी बज्म का अन्दाज़, ये नज़रों का फ़रेब[२], हर ग़म-अन्दोज़[३] ये समझा कि मुझे शाद[४] किया।
दिल की बरबादी का ग़म क्यों हो हक़ीक़त ये है, ग़म ने आबाद किया, ग़म ही ने बरबाद किया।
में कि था रूहे-क़फ़स[५] जाने क़फ़स[६] शाने-क़फ़स[७], किस कमी पर मुझे सैयाद नें आज़ाद किया।
गुंचे ने नकहतो-शबनम ने, शमीमो गुल नें, सारे गुलशन ने तुझे वक़्ते-सहर[८] याद किया।
मेरी परवाज़े-बहारी[९] जो चमन में देखीं, बाग़बाँ चीख़ उठा क्यों उसे आज़ाद किया।

क़ैदे-हस्ती[१०] भी है फ़ितरत की ग़ुलामी "साग़र",
काश ये हुक्म सुनू जा तुझे आज़ाद किया।

[५]

पता मंज़िल का अब के ढूँढना है आस्माँ हो कर,
में फिर अँगड़ाई लेता हूँ ग़ुबारे-कारवाँ[११] हो कर।
अभी से तंग-दिल है क्यों ज़माना बदगुमाँ हो कर,
मुझे तो फैलना है ज़िन्दगी की दास्ताँ हो कर।
मुझे उठना है इस आतिश-कदे से सर-गराँ हो कर,
हवादिस[१२] ने बुझाया भी तो फैलूँगा धुआँ हो कर।
ग़मे-इमरोज़[१३] पर क्यों नज़र कर दूँ इशरते-फरदा[१४],
बहारों का मिटा दूँ कैफ़ मग़मूमे-ख़िज़ाँ[१५] हो कर।

---

१. आज़ाद नेचर २. धोका ३. दुःख उठाने वाला ४. ख़ुश ५. पिंजरे की आत्मा ६. जेलख़ाने की जान ७. जेलखाने की शान ८. सुबह के वक्त ९. बहार में डुबी हुई उड़ान १०. जीवन की क़ैद ११. कारवाँ की धूल १२. ज़माने की मुसीबतें १३. आज की चिन्ता १४. कल की ख़ुशी १५. पतझड़ का दुःख मानने वाला।

मज़ा मिलता था मुझ को जिन्दगी में दर्दे-उलफ़त का,
रहे थे कुछ दिनों वो शामिले-रग-हाय-जाँ[1] हो कर।
इसी शीराज़-ये बरहम[2] से फिर तामीरे-नौ[3] होगी।
यही ज़र्रे कभी सूरज बनेंगे रायगाँ[4] हो कर।
वो मेराजे-तरक्क़ी[5] क्या जो रफ़अत[6] से मयस्सर हो,
उभरना तो उसी का है जो उभरे-बेनिशाँ हो कर।
बसेरे के लिए क्या नखले-तूबा[7] मिल नहीं सकता,
नज़र क्यों रह गई महदूदे-शाखें-आशियाँ[8] होकर।
ज़माने में रहे कुछ यादगारए फितरते-फ़ानी,[9]
अगर मिटना मुक़द्दर[10] है तो मिट जा आस्माँ हो कर।
मेरी मिट्टी में कुद्दूसी शराफ़त है मगर 'साग़र',
लड़ूँ क्यों आस्माँ से ख़ाना-ज़ादे-आस्माँ[11] हो कर।

[६]

कहाँ जाते हैं अय 'साग़र' वो अब दिल से जुदा होकर,
मिरे हैरत–कदे[12] में रह गये हैं आईना होकर।
लबों पर मुस्कुराहट अँखड़ियों में शौक़ की मस्ती,
जवानी और मोहब्बत का मुजस्सम मयकदा होकर।
निगाहों से हवैदा[13] नौ-गिरफ़्तारी[14] की कुछ शानें,
मोहब्बत के मसायब[15] में यकायक मुब्तिला होकर।

---

१. आत्मा की रगों में घुलमिल कर २. बिखरे हुये इंतज़ाम ३. नई इमारत ४. मिटाना ५. तरक्क़ी की ऊँचाई ६. खँचाई ७. स्वर्ग में एक पेड़ ८. घोसले की टहनी की हदों में रह कर ९. मिटने वाली नेचर १०. क़िस्मत ११. ख़ानाज़ाद आस्मान के घर का पैदा १२. हैरान होने की जगह १३. ज़ाहिर १४. नया नया क़ैद होना १५. बिपतायें।

नज़र से मुझ पै मिट जाने की लाखों हसरतें पदा,
सरापा-आरज़ू[1] बनकर मुजस्सम इल्तिजा होकर।

जबीं पर सुर्ख़ टीका, दोष[2] पर बिखरे हुए गेसू,
'शरत' का चाँद बनकर और सावन की घटा होकर।
कहाँ है इश्क़, ज़ालिम इश्क़, कमसिन इश्क़ बेपरवाह,[3]
ये ज़ुल्मे-नारवा[4] और हुस्न पर इक देवता होकर।

छुपेंगे वो कहाँ तक मुझसे महजूबे-हया[5] होकर,
किसी दिन सामने आ जाऊँगा मैं आईना होकर।
मिलाये उनके जलवों पर फ़िदा होकर, फ़ना होकर,
नज़र में बिजलियों का सा तमाशा रह गया होकर।

खुद अपना रहनुमा होकर खुद अपना नाख़ुदा होकर,
मैं जा पहुँचा सरे-मंज़िल[6] गुबारे ज़ेरे-पा[7] होकर।
मेरी पाबन्दिये-उल्फ़त[8] पै यूं ताने न दे मुझको,
तमाम आज़ादियाँ हासिल हुई हैं मुब्तिला[9] होकर।

फ़िराक़[10] इक नाम है उल्फ़त की ताबीरे-ख़याली[11] का,
वो जाते हैं मगर दिल से नहीं जाते जुदा होकर।
निगाहें तो उठाओ कब तक आख़िर ये हया-कोशी,[12]
मुझे बिल्कुल ही खो दोगे पशेमाने-ज़फ़ा होकर[13]।

---

१. सर से पांव तक आशा बन कर २. कांधा ३. लापरवाह प्रेम का देवता ४. बेजा ज़ुल्म ५. लजा कर पर्दा करनेवाला ६. मंज़िल के किनारे पर ७. पांव के नीचे की धूल ८. प्रेम का बन्धन ९. क़ैदी १०. बिरह ११. ख़याली ताबीर ताबीर-मतलब बताना १२. लज्जा करना १३. ज़ुल्म से शरमा कर।

अदम[1] के गोशये-महफ़ूज़[2] से भी रे खींच लाऊँगा,
कहाँ जाकर छुपोगे मेरी दुनिया से जुदा होकर।
कफ़स[3] ही में उठा लाओ गुलिस्ताँ और नशेमन[4]को,
यहीं आखिर हमे इक दिन फिर आना है रिहा होकर।

मेरी मौजें, मेरी कश्ती, मेरा दरिया मेरा तूफ़ां,
पहुँच जाऊँगा साहिल तक खुद अपना नाखुदा होकर।
ख़ुदा हाफ़िज़ है अब मौजों का दरिया का, तलातुम का
कि मैं दाख़िल हूँ कश्ती में मिजाज़े-नाखुदा[5] होकर।

हमारा नग़मये-जाने-हज़ीं[6] कुछ भी न था 'साग़र',
मगर गूँजा यही इक उम्र तक बांगे दिरा होकर।

[७]

लूट कर नींद ले गया मेरी, नर्गिसे-नीम-ख्वाब का आलम[7]।
खिले फूलों में सुबह का मंजर, बन्द कलियों पै ख्वाब का आलम।
वो तबस्सुम की चाँदीनी साग़र', वो शबे-माहताब[8] का आलम।

[८]

नग़मे हवा ने छेड़े फ़ितरत की बाँसुरी में,
पैदा हुई जुबाने जंगल की खामोशी में।
उस वक़्त की उदासी है देखने के क़ाबिल,
जब कोई रो रहा हो अफ़सुर्दा[9] चाँदनी में।

---

१. शून्य २. कुंज ३. पिंजरा ४. घोंसला ५. माझी की तबियत ६. दुखिया जान का गीत ७. प्रेमिका की अधसोई हुई आंख ८. चांदनी रात ९. उदास।

कुछ तो लतीफ होतीं घड़ियाँ मुसीबतों की,
तुम एक दिन तो मिलते दो दिन की जिन्दगी में।
हंगामये-तबस्सुम[१] है मेरी हर खमोशी,
तुम मुस्करा रहे हो दिलकी शगुफ़्तगी[२] में।
ख़ाली पड़े हुए हैं फूलों के सब सहीफ़े[३],
राज़े-चमन[४] निहाँ है कलियों की ख़ामुशी में।

[९]

ख़याल में मुस्करा रहे हैं, दिमाग़ में जगमगा रहे हैं,
मैं उनको दिल से भुला रहा हूँ वो और भी याद आ रहे हैं।
मैं ख़ुद को भी भूलने की धुन में अमल[५] की दुनिया बना हुआ हूँ,
वो हैं कि सारी लताफ़तों[६] से दिमाग़ पर छाये जा रहे हैं।
सहर है पुरनूर[७] रात रोशन, हयात[८] रोशन, मुमात[९] रोशन,
असर से है कायनात[१०] रोशन वो इस तरह मुस्करा रहे हैं।

[१०]

वो तसुव्वुर में गाये जाते हैं, नग़मये-ग़म[११] सुनाये जाते हैं।
मुस्तक़िल मुस्कराये जाते हैं, रूह को जगमगाये जाते हैं।
रूह वो-दिल[१२] में समाये जाते हैं, वो तो हस्ती[१३] पै छाये जाते हैं।
मुझ से दामन छुड़ाये जाते हैं, शौक़ को आज़माये जाते हैं।

---

१. मुस्कराहट का शोर २. खिलना ३. फूलों से इलहामी किताब की उपमा है ४. बाग का भेद ५. काम ६. कोमलता ७. ज्योति से भरा हुआ ८. जिन्दगी ९. मौत १०. दुनिया १. दुःख का गीत २. आत्मा और हृदय ३. जीवन ।

रुख़सत अय कारवाने-होश[1] कि वो, मुझ से नज़रें मिलाये जाते हैं।
जानो-दिल ख़ाक हो चुके कबके, और वो मुस्कराये जाते हैं।
मेरी सुनते नहीं कोई देखे, मुझको अपनी सुनाये जाते हैं।
होशियार अय फ़रेबे-गुमशुदगी[2], आज वो मुझको पाये जाते हैं।
पैकरे-कुफ़्र[3] बन के वो 'साग़र,' दीनो-दुनिया पै छाये जाते हैं।

[११]

दिल से दिल को मिलाये जाते हैं, हम उन्हें आज़माये जाते हैं।
होश रुख़सत हुए कभी के मगर, आँख से ही पिलाये जाते हैं।
ये जमाले-जबीं[4] ये क़श्क़ये-सुर्ख़,[5] रूहो-दिल[6] थरथराये जाते हैं।
इश्क़ महदूद का हुस्न ला महदूद[7], हम से आगे वो पाये जाते हैं।
शक न कर मेरी ख़ुश्क आँखों पर यूँ भी आँसू बहाये जाते हैं।
परद-ये-शेर[8] में उन्हें 'साग़र',
दिल के क़िस्से सुनाये जाते हैं।

[१२]

वो सितारों में जगमगाते हैं, चाँद में रोज़ आते जाते हैं।
ख़ुद भी सोते नहीं घड़ी भर को, रात भर मुझ को भी जगाते हैं।
दिल का अफ़साना भूल जाता हूँ, अपनी बातें वो जब सुनाते हैं।
यह फ़रामोश-कारियाँ[9] तोबा, मुझे रह रह के भूले जाते हैं।
रूहो दिल हों कि चश्मो-गोशे ख़याल,[10] हर मकाँ में वो पाये जाते हैं।
वो भी होती है इक घड़ी 'साग़र', हम ख़ुद अपने को भूल जाते हैं।

---

१. होश का क़ाफ़ला २. खोजाने का धोका ३. कुफ़्र का शरीर ४. माथे की सुन्दरता ५. लाल बिन्दी ६. मन और आत्मा ७. इश्क़···ला महदूद, प्रेम की थाह है और हुस्न अथाह है ८. कविता के परदे में ९. भूलने की आदतें १०. ख़याल के आँख और कान।

[१३]

नज़र में, रूह मे दिल में समाये जाते हैं,
हर एक आलमे-इमकां[१] पै छाये जाते हैं।
हर इक क़दम को वो मंज़िल बनाये जाते हैं,
ताअ़युनात[२] की वसअत[३] बढ़ाये जाते हैं।

निगाह मस्त है और मुस्कराये जाते हैं,
दो-आतश:[४] मुझे भर कर पिलाये जाते हैं।
निशाने-बुतकदये-दिल[५] मिटाये जाते हैं,
वो अपने काबये-दैरी[६] को ढाये जाते हैं।

जो उठ सके थे न ख़ुद हुस्न के उठाय से,
वो परदा-हाय-दुई[७] अब हाय उठाये जाते हैं।
जो गिर सके थे न ख़ुद इश्क के गिराये से,
वो सब हिजाबे-मोहब्बत[८] गिराये जाते हैं।

छुपा-छुपा के जिन्हें मसलहत[९] में रक्खा था,
वो जलवे अब सरे-महफ़िल दिखाये जाते हैं।
सम्भलकर अय निगहे-शौक़[१०],बज्मे-दोस्त[११] है यह
यहाँ ख़राबे-नज़र[१२] आज़माये जाते हैं,

---

१. इमकां की दुनिया २. जीवन और अस्तित्व से मुराद है ३. लम्बाई चौड़ाई ४. दो बार खिची हुई शराब ५. मन मन्दिर का निशान ६. पुराना काबा ७. ग़ैरियत का पर्दा ८. प्रेम के पर्दे ९. बेहतरी १०. शौक़ की नज़र ११. प्रेमिका की सभा १२. नज़र के मारे हुए।

न पूछ कारगहे-इश्क[१] का तिलिस्म,[२] न पूछ,
क़दम-क़दम पै तमाशे दिखाये जाते हैं।
पता नहीं कहीं उनका और उनके दीवाने,
तसव्वुरात[३] की महफ़िल सजाये जाते हैं।

कहाँ की लग़ज़िशे-पा[४] अब ये हाल है साक़ी,
कि सरसे ताबा-क़दम[५] डगमगाये जाते हैं।
ये मयकदा है, तेरा मदरसा नहीं वाइज़,[६]
यहाँ शराब से इंसाँ बनाये जाते हैं।

उठा रहा हूँ मैं गर्मिये-शौक[७] बन के नक़ाब[८],
वो अपने सर को मुसलसल[९] झुकाये जाते हैं।
जिगर भी शक़[१०] है यहाँ शिद्दते-तजल्ली[११] से,
वो देखते हैं मगर मुस्कराये जाते हैं।

यह क़सरे-हुस्न[१२] है आतिश-कदा[१३] मोहब्बत का,
बजाये-शमा[१४] यहाँ दिल जलाये जाते हैं।
तमाम आलमे-महसूस[१५] काँप उठता है,
जब आँख से कहीं आँसू बहाये जाते हैं।

---

१. प्रेम के काम करने की जगह; प्रेम की दुनिया २. जादू ३. सोची हुई बातें ४. पाँव का डगमगाना ५. सर से लेकर पाँव तक ६. उपदेश देनेवाला ७. शौक़ की गर्मी ८. पर्दा ९. लगातार १०. फटा हुआ ११. ज्योति की ज्यादती १२. सुंदरता का रंग महल १३ आग की जगह १४. दीपक के बजाय १५. वह दुनिया जिसकी हर बात महसूस की जा सकती है।

हमारा हाल तो देखा हमारा ज़र्फ़[१] भी देख,
निगाह उठती नहीं ग़म उठाये जाते हैं।
तलाश लाज़म-ये आशिक़ी[२] नहीं 'सागर',
न ढूंढ़नें पै भी वो हममें पाये जाते हैं।

[१४]

सुना है यह जब से कि वह आ रहे है, दिलो-जाँ दिवाने हुए जा रहे हैं।
मुअत्तर[३] मुअत्तर, ख़रामा[४] ख़रामा, नसीम[५] आ रही है कि वो आ रहे हैं।
निगाहें गुलाबी, अदायें शराबी, हर इक गाम पर लग्ज़िशें[६] खा रहे हैं।
फ़लक बन गया मेरा दोशे-तख़ैय्युल,[७] सहारा लिये वो चले आ रहे हैं।
नज़र उनके जल्वों के तूफ़ाँ में गुम[८] है, हुजूमे–नज़र[९] से वो घबरा रहे हैं।
उन्हें बढ़ के क्या नज़र[१०] दें हम इलाही, मताए–दिलो–जाँ[११] पै शरमा रहे हैं।
अभी बिजलियाँ थीं अभी लालओ-गुल,[१२] अभी हँस रहे थे, अभी गा रहे है।
करम की यह मजबूरियाँ अल्ला अल्ला, नज़र से दिलासे दिये जा रहे हैं।
मेरी रूह में छुप के हर वक़्त 'साग़र', वो इक नग्मये–जाविदा[१३] गा रहे हैं।

[१५]

यह ज़ालिम हवायें, यह काफ़िर घटायें, चली आईं तनहा[१४] उन्हें भी तो लायें।
ज़रूर उनसे मस[१५] हो गया कोई झोंका, महकती हुई आ रही हैं हवायें।
नहीं कोई बाबे-क़ुबूल[१६] आस्माँ पर, भटक कर किधर जा रही हैं दुवाएं।

---

१. हौसला २. प्रेम के लिये जरूरी सामान ३. महका हुआ ४. इठला कर चलना ५. सुबह सवेरे चलनें वाली हवा ६. डगमगाना गिरना ७. खयाल का कांधा ८. खोई हुई ९. निगाहों की भीड़ १०. भेंट ११. मन और आत्मा की पूंजी १२. गुलाब का फूल १३. हमेशा रहने वाला गीत १४. अकेली १५. छू जाना ३. दुआ माँगने की जगह।

हमारी इबादत[१] तो है याद उनकी, वह मअबूद[२] हो कर हमें भूल जायें।
इसी आरज़ू में बसर हो रही है, फिर इक बार तुमको कहीं देख पायें।
चलो उनके दर पर फिर इक रोज़ 'साग़र' मुक़द्दर[३] को इक बार फिर आजमायें।

[१६]

बरबते-अश्क[४] पर उन्हें, नग्मये-ग़म[५] सुना दिया,
जो न ज़बाँ से गा सके, उसको नज़र से गा दिया।
फिर तो कहो कि क्या तुझे, हमने यह कम सिला[६] दिया,
पैकरे-कैफ़[७] कर दिया, साहिबे-ग़म[८] बना दिया।
उसने जो ज़अ़मे-हुस्न[९] में रुख़ से नक़ाब उठा दिया,
हमने भी शौक़े-दीद[१०] में दिल को नज़र बना दिया।
फूल ने सुबह्-दम[११] बोहत, दर से-ग़मे-फ़ना[१२] दिया,
कैफ़े-शगुफ्त[१३] ने मगर कलियों को गुदगुदा दिया।
संग[१४] को बुत की शक्ल दी, सनअ़ते-बुत-तराश[१५] ने,
मैंने मगर तराश कर, बुत को ख़ुदा बना दिया।
यादे-ग़रीब[१६] जुर्म[१७] थी, कुफ्र थी दीने-हुस्न[१८] में,
अब हैं यह क्यों सफाइयाँ, ख़ूब किया भुला दिया।

---

१. प्रार्थना २. जिसकी पूजा की जाय ३. भाग्य ४. आँसु का सितार ५. दुःख का गीत ६. बदला ७. रस का शरीर ८. दुःख वाला बिपता का मालिक ९. सुन्दरता का घमण्ड १०. देखने का शौक़ ११. सुबह के वक़्त १२. दरससबक़, ग़मे-फ़ना—मौत का दुःख १३. चटखने का रस १४. पत्थर १५. मूर्ति बनाने की कला १५. अ. तराश—छीलना, इस शब्द में यहां पर बडे मतलब हैं यानी मैंने मूर्ति पर विश्वास किया, पूजा की, सजाया कवि कहता है कि मूर्ति बनानेवाले का यह कोई कमाल नहीं था कि उसने मूर्ति बनाई मूर्ति को मूर्ति तो उसने किया जिसने अपने विश्वास से उसमें आत्मा पैदा की। १६. मुसाफ़िर की याद, ग़रीब मुसाफ़िर १७. ख़ता १८. कुफ़्र······में—सुन्दरता के धर्म में कुफ़्र थी।

ख़ालिक़े–कारसाज़[1] था, जज़्बो–जनूने–बन्दगी[2],
जिस पै निगाह डाल दी, उसको ख़ुदा बना दिया।
साग़रे-मस्ते हुस्न को बज़्म में फ़िक्रे शेर क्या,
क़िस्सये–दर्दे–आशिक़ी[3] नज़्म किया सुना दिया।

[१७]

दिल हुस्न के हाथों से दामन को छुड़ाये हूं,
लेकिन कोई दामन को खींचे लिये जाये है।
क्या शय[4] है मोहब्बत भी कोहसार[5] को ढायें हैं,
तिरतों को डुबोये है, डूबों को तेराये है।
जब प्रेम की नद्दी में, तूफ़ान सा आये है,
नैया ही नही नद्दी, हिचकोले से खाये है।
उम्मीद किनारे पर बिजली सी लगाये है,
डूबी हुई किश्ती भी साहिल ही को जाये है।
मुतरिब,[6] अरे ओ मुतरिब, क्यों झूम कर गाये है,
तू आग बुझाये है, या आग लगाये है।
यह तेरा तसव्वुर है, या मेरी तमन्नायें,
दिल में कोई रह रह कर, दीपक से जलाये है।
जिस रुख़ में दुनिया है, दुनिया है न उक़बा[7] है,
उस रुख़ को मेरी क़िस्मत खींचे लिये जाये है।

---

१. ख़ालिक़—पैदा करने वाला, कारसाज़—काम बनाने वाला २. बन्दगी के पागलपन का भाव ३. प्रेम के दर्द की कहानी ४. चीज़ ५. पहाड़ ६. गाने वाला ७. परलोक।

मज़हब जो बड़ी शय है, उल्फ़त भी बड़ी शय है,
अय वायज़े नादाँ तू, यह किसको सुनाय है।

आलम तो कोई देखे, हम बिरह के मारों का,
मैं दिल को उठाये हूँ, दिल मुझको उठाये है।
मयख़ाने की दूरी तो है एक नफ़स[१] 'साग़र'
साक़ी मेरा कोसों से, सौ जाम पिलाये है।

: १८ :

तू नहीं बहार का राज़दाँ[२], तुझे कब वक़ूफ़े-बहार[३] है,
जिसे कह रहा है शमीम[४] तू, यह चमन का गर्दो-ग़ुबार[५] है।
यह बजा कि दौरे-बहार[६] है, यह बजा[७] कि फ़स्ले-बहार है,
जो बिखर के दोश[८] पै आ पड़े, तो यह अब्र गेसुये-यार[९] है।

वो चमन में आये हैं झूमते, इसे तोड़ते, उसे चूमते,
जिसे फूल कहते हैं फ़स्ले-गुल,[१०] इसी कारवाँ का ग़ुबार है।
यह ख़िराम उनका चमन-चमन, यह तबस्सुम उनका समन-समन,
यह सुकूत[११] उनका रविश-रविश[१२], कि बहार-महवे-बहार[१३] है।

वो सबाहतें,[१४] वो मलाहतें[१५] वो नज़ाकतें,[१६] वो लताफ़तें[१७],
वो नज़र में जबसे समाये है, मुझे आँख उठाना भी बार है।

---

१. साँस २. भेदी ३. बसन्त ऋतु का ज्ञान ४. फूलों में रहने वाली खुशबू ५. धूल-मिट्टी ६. दौर-जमाना, बसन्त का ज़माना ७. ठीक ८. कान्धा ९. प्रेमिका के लटों की घटा १०. फूलों का मौसम ११. खामोशी १२. पटरी १३. बसन्त बसन्त ऋतु में खोई हुई १४. सबाहत-गोरापन १५. नमकीनपन १६. कोमलता १७. पवित्रता

मुझे याद हैं वो ख़राबियाँ, वो नज़र-नज़र में गुलाबियाँ[१],
वो किसी की ज़मज़मा-ख़्वाबियाँ,[२], मुझे इस घड़ी भी ख़ुमार[३] है।

यह बलंद-कामते-फ़ितनागर,[४] यह लटें जबीं[५] पै इधर-उधर,
कि हसीन सर्व की ओट से, यह तुलूवे—माहे—बहार[६] है।
वे जहां झिझक के ठहर गये, हैं फ़ज़ायें ग़र्क़े-बहार[७] हैं,
वो जिधर मचल के गुज़र गये हैं, वहीं हुजूमे-बहार[८] है।

यह फ़लक पै बर्क़े-शरर-फ़िशा[९], सरे-अर्ज़[१०] उसकी यह शोखियाँ,
कभी अस्ले—कामते—यार[११] है कभी अक्से—कामते—यार[१२] हैं।
मेरी बेक़रारिये-इश्क़[१३] ही को शकेब[१४] कहते हैं दीदवर,[१५]
मेरी बेसकूनिये—शौक़[१६] ही, लतीफ़[१७] नाम क़रार[१८] है।

मेरी ज़िन्दगी मेरी शायरी,
मेरी शायरी मेरी ज़िन्दगी,
दिलो जा तो क्या तेरे लुत्फ़ पर
मेरी शायरी भी निसार[१९] है।

[१९]

मैं नग़मों[२०] के दरिया बहाता रहूँगा, तरन्नुम[२१] के तूफ़ाँ उठाता रहूँगा।
बहुत दूर से याद आता रहूँगा, मैं सावन में उनको रुलाता रहूँगा।

---

१. शराब की छोटी बोतलें २. मधुर संगीत के साथ सोना ३. नशे का उतार ४. फ़ितना पैदा करने वाला ऊंचा क़द ५. माथा ६. बसन्त ऋतु के चाँद का निकलना ७. बहार में डूबी हुई ८. बहार की भीड़ ९. चिनगारियां बरसाने वालीबिजली १०. ज़मीन पर ११. प्रेमिका के क़द की असल १२. प्रेमिका के क़द का साया १३. प्रेम की बेचैनी १४. धीरज १५. ज्ञानी १६. प्रेम की शान्ति १७. कोमल १८. सब्र १९. कुर्बान, भेंट २०. गीतों २१. सौंगीत।

रहा गर तेरे नुत्क़[1] का फ़ैज़[2] जारी, तो मुलहिम[3] को हैराँ बनाता रहूँगा।
मोहब्बत की मायूसियों[4] की क़सम है, अबद[5] तक उन्हें आज़माता रहूँगा।
वह महफ़िल में मेरी ज़बाँ बन्द करदें, नज़र से कहानी सुनाता रहूँगा।
उजड़ती रहेगी मेरे मन की बस्ती, नई दिल की बस्ती बसाता रहूँगा।
बहारे-मोहब्बत[6] का पाला हुआ हूँ, ख़िज़ाँ[7] में भी मैं लहलहाता रहूँगा।
वह आँचल को अपने झटकती रहेंगी, जो मैं ख़ाक[8] हूँ उड़के छाता रहूँगा।
हमेशा मुझे वह भुलाती रहेंगी, सदा उनको मैं याद आता रहूँगा।
जुनूने-वफ़ा[9] जब तलक है सलामत, मोहब्बत को वहशी[10] बनाता रहूँगा।
जहे फ़ैज़े-साक़ी[11] ज़हे कैफ़े-बाकी[12], मैं 'साग़र' हूँ पीता पिलाता रहूँगा।

[२०]

सरे शौक़ पैहम[13] झुकाता रहूँगा, ब-हर-गाम[14] काबा[15] बनाता रहूँगा।
अज़ल[16] में मोहब्बत से वादा था मेरा, कि मैं अपनी जवानी लुटाता रहूँगा।
है बादे-मुख़ालिफ़[5] से यह शर्त मेरी, चिराग़ अपने ख़ुद ही बुझाता रहूँगा।
है बर्क़ों-शरर[17] से मेरा अहद नामा[18], कि ख़ुद अपने ख़िरमन[19] बताता रहूँगा।
शबे-तार[20] से मैंने वादा किया है, अँधेरे को मिशअ़ल दिखाता रहूँगा।
ज़बाँ दी है सर-मस्त[21] मौजों को मैंने, कि तूफ़ाँ में भी मुस्कराता रहूँगा।
गुज़रता रहेगा मेरे सर से तूफ़ाँ, मैं मौजों का बरबत[22] बजाता रहूँगा।

---

१. बोलना २. महरबानी ३. इल्हाम देनेवाला (फरिश्ता), इल्हाम—आकाशवाणी ४. निराशायें ५. दुनिया का आखिरी दिन ६. प्रेम का वसन्त ७. पतझड़ ८. मिट्टी ९. निबाह का पागलपन १०. पागल. ११. साक़ी की महरबानी १२. बचाखुचा रस १३. लगातार १४. हर क़दम पर १५. पूज्य स्थान १६. दुनिया बनने का पहला दिन ५. उल्टी हवा १७. बिजली और चिनगारी १८. प्रतिज्ञा १९. खलियान २०. अंधेरी रात २१. नशे में चूर २२. बाजा।

किया है तबाही से यह अह्द[१] मैंने, कि तामीरे हस्ती[२] को ढाता रहूँगा।
यह साज़े-मशीयत[३] से पैमाँ[४] है मेरा, मुसीबत में भी गुनगुनाता रहूँगा।
है तकदीर दामन की सद-चाक[५] होना, मैं दामन को कब तक बचाता रहूँगा।
हक़ीक़त के रुख से हक़ीक़त के रुख पर, हिजाबे-तवह्हुम[६] गिराता रहूँगा।
तग़य्युर[७] का झंडा न लहराये जबतक, बगावत के परचम उड़ाता रहूँगा।
हैं जुम्बिश[८] में आवेज़ये-ताक[९] जबतक, मैं पीता रहूँगा पिलाता रहूँगा।
मेरे दम में दम है तो 'साग़र' अबद तक, पिलाता, लुँढाता, बहाता रहूँगा।

[२१]

पियें साक़िया क्या जवानी में पानी, मये—अग़वानी,[१०] मये—अग़वानी,
ज़हे—फ़ैज़े—कैफ़े—नसीमे—जवानी,[११] यह रातें गुलाबी यह सुबहें सुहानी।
मोहब्बत हक़ीकत,[१२] न नफ़रत हक़ीक़त, न यह जाविदानी[१३] न वो जाविदानी।
न रहबर,[१४] न मिशअल[१५] न जादा[१६] न मंज़िल[१७] चली जा रही है जवानी दिवानी।
बुढ़ापा जवानी का मुँह तक रहा है, उड़ी जा रही है फ़लक पर जवानी।
जवानी से बैअ़त[१८] करें अह्ले-पीरी,[१९] जवानी ज़माना, ज़माना जवानी।
तड़प जाय पीरी,[२०] मचल जाय मीरी[२१] जो मैं छेड़ दूँ उठ के साज़े जवानी[२२]
बग़ावत जवानों का मज़हब[२३] है 'साग़र' गुलामी है पीरी, बग़ावत जवानी।

---

१. प्रतिज्ञा २. जीवन का बनाव ३. ख़ुदा की मर्ज़ी का बाजा ४. प्रतिज्ञा ५. सौ टुकड़े ६. वहम का पर्दा ७. तब्दीली, इन्क़लाब ८. हरकत ९. अंगूर के गुच्छे का बुन्दा १०. लाल मदिरा ११. ज़हे—तारीफ़ का शब्द, क्या कहने हैं, फ़ैज़—देन, कैफ़—रस, नसीम—सुबह चलने वाली हवा १२. सत्य १३. अमर १४. रास्ता बताने वाला १५. मशाल १६. रास्ता १७. ठहरने की जगह १८. मुरीद होना १९. बूढ़े २०. बुढ़ापा २१. सरदारी २२. जवानी का बाजा २३. धर्म।

[२२]

ज़हे फ़ैज़े—कैफ़े—तमामे—मोहब्बत, अदावत है मुझको पयामे-मोहब्बत,[१]
यह दुनिया ज़मानों की क़ैदी नहीं है, न सुबहे मोहब्बत[२] न शामे-मोहब्बत[३]।
निगाहें पयामी,[४] अदायें हैं क़ासिद[५], दिये जा रहे हैं पयामे मोहब्बत।
यह किसकी निगाहों से जन्नत[६] सी बरसी महक दे रहा है मशामे[७] मोहब्बत।
कलीमे-मोहब्बत[८] हैं नमनाक[९] आँखें, हैं नाज़ुक[१०] से आँसू कलाम-मोहब्बत[११]।
मेरी आरज़ूयें[१२] वफ़ा की शिकारी, परस्तारियाँ[१३] मेरी दामे-मोहब्बत[१४]।
मोहब्बत हमेशा मोहब्बत रहेगी, न बदला, न बदले निज़ामे-मोहब्बत[१५]।
ख़ुदा के लिये आओ, घुलमिल भी जाओ, अदावत नहीं इन्तक़ामे-मोहब्बत[१६]।
वो लग्ज़ीदा[१७] लग्ज़ीदा आना किसी का, बहकता हुआ सा खिरामे-मोहब्बत[१८]।
कनखियों से तजदीदे-पैमाने-उल्फ़त[१९], वो नीची नज़र से सलामे मोहब्बत।
शराबी-तबस्सुम[२०] छलकती सी आँखें, मुजस्सम[२१] हैं 'सागर' वो जामे मोहब्बत।

[२३]

जो ये हो तो शमा[२२] के सोज़[२३] में, अजब एक हसीन-गुदाज़[२४] हो,
मेरा शेरे-ग़म[२५] हो सरोद[२६] में, तेरे दस्ते-नाज़[२७] में साज़ हो,
न ज़बाने-शिकवा[२८] खुले कभी न सदाये-नाला[२९] दराज़ हो,
ये हैं एहतियात की कोशिशें, कि वफ़ा बसीग़ये-राज़[३०] हो।

---

१. प्रेम का सन्देशा २. प्रेम की सुबह ३. प्रेम की शाम ४. सन्देशा ले जानेवाली ५. सन्देसा ले जाने वाला ६. स्वर्ग ७. मशाम—सूंघने की शक्ति की जगह, दिमाग़ ८. प्रेम की बातें करने वाला ९. भीगी हुई १०. कोमल ११. प्रेम की बातें १२. आशायें १३. पूजायें १४. प्रेम का जाल १५. प्रेम का तरीक़ा १६. प्रेम का बदला १७. लड़खड़ाते हुए १८. प्रेम का इठलाकर चलना १९. प्रेम-प्रतिज्ञा का नया होना २०. नशीली मुस्कान २१. पूरा सर से पाँवतक २२. दीपक, मोमबत्ती २३. जलन २४. सुन्दर घुलाव २५. दुख की कविता २६. बाजा २७. नख़रे का हाथ २८. शिकायत की ज़बान २९. आह की आवाज़, दराज-बुलन्द होना ३०. राज़ में

तेरी एक बन्दिशें-ज़ुल्फ़[१] में, हैं हज़ार उक़दये-पुर-शिकन,[२]
ये घटा जो खुल के बरस पड़े, तो जहाँ पै बारिशे-राज़ हो,
हो तुम्हीं लताफ़ते-गुलकदा,[३] न करे तवाफ[४]-नसीम क्यों,
तुम्हें फूल सजदा न क्यों करें कि बहारे-खिलवते-नाज़[५] हो।

जो तू हम-सफ़र[६] हो मेरा तो मैं, सहरे-बहिश्त[७] भी देख लूँ,
किसी सब्ज़ा ज़ार[८] की रात में तेरा हुस्न सुबह्-तराज़[९] हो,
तू फ़रोग़े-हुस्न[१०] में भर के आ, शबे-तारे-हिज्र[११] में फैल जा,
तेरे बाल और हसीन हों, तेरी ज़ुल्फ़ और दराज़ हो।

मुझे शरअ्[१२] से कोई ज़िद नहीं, फिर इस इत्तिफ़ाक़ को क्या करूँ,
कि जो वक़्त बादा-कशी[१३] का हो, वही ऐन वक़्ते-नमाज़ हो,
मेरे हाथ में हो अगर जहाँ, तो ये हालतें हों जहान की,
कहीं रंग हो कहीं चंग[१४] हो, कहीं नग़मा हो कहीं साज़ हो।

जो सहे वफ़ा की सऊबतें[१५] वो करे दिलों पर हुकूमतें,
यह तिलिस्मे-रब्त[१६] न हो तो क्यों, दिले-ग़ज़नवी[१७] में अयाज़[१८] हो
इस अदा से 'साग़रे' बादाकश मैं तवाफ़े-सुबह् हरम करूँ,
मेरे साथ महवे-खरामे-शब[१९] कोई मस्ते-अर्ज़े-हिजाज़[२०] हो।

---

१. ज़ुल्फ़ का बन्धन २. शिकन पडी हुई गांठें ३. बाग की पवित्रता ४. चक्कर ५. नाज की खिलवत की बहार ६. साथ सफ़र करने वाला ७. स्वर्ग की सुबह ८. हराभरा मैदान ९. सुबह करने वाला १०. सुन्दरता का फैलाव ११. बिरह की काली रात १२. क़ानून, खासकर इस्लाम धर्म का क़ानून १३. शराब पीना १४. एक बाजा १५. तकलीफ़ें,दुःख १६. लगाव का जादू १७. ग़जनवी बादशाह का दिल १८. ग़जनवी बादशाह का ग़ुलाम १९. रात को इठलाकर चलना २०. हिजाज देश की प्रेमिका।

[२४]

किसी पै खुल जाये राज़े-दिल[१] क्यों कोई तबीयत-शनास[२] क्यों हो,
असर से भीगा हुआ पसीना, किसी की पलकों के पास क्यों हो।
ख़मोशियों में हिरास क्यों हो, चिराग़ तस्वीरे-यास[३] क्यों हो,
जो हो मुझे एतबारे-वादा[४], तो शाम इतनी उदास क्यों हो।

मैं गुल की हर पंखड़ी में छुप कर, ख़िज़ाने-अंजाम[५] देखता हूँ,
ख़राबे रंगीनिये-दोरोज़ा,[६] निगाहे-फ़ितरत शनास[७] क्यों हो।
बशारतें[८] कौन मौत की दे, मुझे तुलू-ये-सहर[९] से पहले,
कि जो मिरा राज़दारे-शब[१०] हो, वही सितारा शनास[११] क्यों हो।

ज़ुबाने खामोशी[१२] चश्मे-हैरां[१३], तलब[१४] के हैं दो यही तरीक़े,
जिसे यक़ीं[१५] हो तजल्लियों[१६] का, वो ख़स्तये-इल्तमास[१७] क्यों हो।
हसीन चेहरा, सुता हुआ है, खुले हुए बाल हैं परेशाँ,
शगुफ़्तगी[१८] इस अदा पै सदक़े,[१९] इधर तो आओ उदास क्यों हो।

लताफ़तें मेरी दास्ताँ की अगर न हों नुज़हते-सहाफ़त[२०],
तो मेरे जज़्बाते-दिल का 'साग़र' जगह जगह इक़्तिबास[२१] क्यों हो।

---

१. मन का भेद २. तबियत का पहचाननेवाला ३. निराशा की तस्वीर ४. वादे का विश्वास ५. ख़त्म होने का पतझड़ ६. दो दिन की बहार ७. कुदरत को पहचानने वाली नज़र ८. अच्छी ख़बरें ९. सुबह होना १०. रात का भेद जानने वाला ११. सितारे को पहचानने वाला १२. चुप ज़बान १३. भौचक्की आंखें १४. मांगना १५. विश्वास १६. तजल्ली-ज्योति १७. अर्ज़ करने की कमज़ोरी १८. खिलना १९. निछावर २०. साहित्य की बहार २१. ज़िक्र।

[२५]

दिल की आँखें खुलती हैं, चश्मे-ज़ाहिर[१] सोती है,
बेहोशी के पर्दे में सैरे-आलम[२] होती है।
काफ़िर[३] गेसू वालों की रात बसर यूँ होती है,
हुस्न हिफ़ाज़त करता है और जवानी सोती है।

मुझ में तुझ में फ़र्क़ नहीं, मुझ में तुझ में फ़र्क़ है यह,
तू दुनिया पर हँसता है, दुनिया मुझ पर रोती है।
इस मामूर[४] ख़ज़ाने से ज़ब्त ज़रा होशियार रहे।
दिल की हर गहराई में एक अछूता मोती है।

सब्रो-सुकूँ[५] दो दरिया हैं, भरते-भरते भरते हैं,
तस्कीं[६] दिल की बरखा है, होते-होते होती है।
जीने में क्या राहत[७] थी, मरने में तकलीफ़ है क्या ?
जब दुनिया क्यों हँसती थी ? अब दुनिया क्यों रोती है ?

दिल की तो तशख़ीस[८] हुई, चारागरों[९] से पूछूँगा,
दिल जब धक-धक करता है, वो हालत क्या होती है ?
सावन आये फूल खिले, एक अफ़सुर्दा[१०] बोल उठा,
जिसमें दिल खिल जाते हैं वो बरखा कब होती है ?

ज़र्रे और तारे मिल कर जादू रोज़ जगाते हैं,
फ़ितरत[११] की बेदारी[१२] में सारी दुनिया सोती है।

---

१. ज़ाहिरी आँखें २. संसार की सैर ३. सुन्दर ४. भरपूर ५. धीरज और शान्ति ६. ढाढ़स ७. आराम ८. पहचान ९. इलाज करने वाले १०. दुखियारा ११. प्रकृति १२. जागना।

रात के आँसू अय 'साग़र' फूलों म भर जाते हैं,
सुबहे-चमन[१] इस पानी से कलियों का मुँह धोती है।

[२६]

आँख तुम्हारी मस्त भी है मस्ती, का पैमाना भी,
एक छलकते साग़र[२] में मय भी है मयख़ाना भी।
बेख़ुदी-ये-दिल[३] क्या कहना, सब कुछ है और कुछ भी नहीं,
हस्ती[४] से मानूस[५] भी हूँ, हस्ती से बेगाना भी।
आज मोहब्बत रुसवा[६] है हाथों से होशियारों के,
इश्क़ की पहली दुनिया में था कोई दीवाना भी।
दिल की दुनिया हिलती है रोको अपनी नज़रों को,
काफ़िर लूटे लेती हैं, आज तजल्लीख़ाना[७] भी।
गर्दिश[८] मस्त निगाहों की आख़िर वज्द-अंगेज़[९] हुई,
चक्कर में 'साग़र' भी है दौर में है पैमाना भी।

[२७]

रातों को तसव्वुर है उनका और चुपके चुपके रोना है,
अय सुबह के तारे तू ही बता, अंजाम मेरा क्या होना है ?
इन नौरस आँखों वालों का क्या हँसना है क्या रोना है,
बरसे हुए सच्चे मोती हैं बहता हुआ खालिस सोना है।
दिल को खोया ख़ुद भी खोये, दुनिया खोई दीं भी खोया,
यह गुमशुदगी[१०] है तो इक दिन, अय दोस्त तुझे भी खोना है।

---

१. बाग़ की सुबह २. सुरा नापने का बर्तन ३. मन की मस्ती ४. जीवन ५. लगाव रखना ६. बदनाम ७.रोशनी की जगह ८. चक्कर ९. झुमा देनें वाली १०. खोना।

तमीज़े-कमालो-नक़्स[१] उठा यह तो रोशन[२] है दुनिया पर,
में चन्दन हूँ, तू कुन्दन है, में मिट्टी हूँ, तू सोना है।
हर आँसू बहरे-गौहर[३] है, हर मौजे-तबस्सुम[४] इक आँसू,
रोना भी तुम्हारा हँसना है, हँसना भी हमारा रोना है।
तू यह न समझ लिल्लाह[५] कि है तस्कीन तेरे दीवानों को,
वहशत[६] में हमारा हँस पड़ना, दरअस्ल[७] हमारा रोना है।
मातम है मेरी आवाज़ शकस्ते–साज़े दिले–सदपारा[८] का,
'सागर' मेरा नग़्मा गोया, दीपक के सुरों में रोना है।

[२८]

सावन की ऋतु आ पहुँची, काले बादल छायेंगे,
कलियाँ रँग में भीगेंगी, फूलों में रस आयेंगे।
सामने उनके आते ही, सब शिकवे[९] मिट जायेंगे,
कुछ में भी शरमाऊँगा, कुछ वो भी शरमायेंगे।
हाँ वो मिलने आयेंगे, रहम भी कुछ फ़रमायेंगे,
हुस्न मगर चुटकी लेगा, फिर क़ातिल बन जायेंगे।
सर्द हवायें आती हैं, तेरी याद दिलाती हैं,
जिस दिन तू खुद आयेगा, वो सावन कब आयेंगे।
शामे–ख़िज़ाँ[१०] है फूलों को, देख के नाले[११] क्या खींचूं,
मेरे लब से निकलेंगे, अब्रे–चमन[१२] बन जायेंगे।

---

१. अच्छे और बुरेपन की पहचान २. ज़ाहिर ३. मोतियों का समुन्दर ४. मुस्कान की लहर ५. खुदा के लिये ६. पागलपन ७. असल में ८. मातम का—दिल के बाजे के सौ टुकड़ों का मातम मेरी आवाज़ में है ९. शिकायतें १०. पतझड़ की शाम ११. आहें १२. बाग़ की घटा।

नाले खोये धुँधलके में, शाम हुई रात आ पहुँची,
प्रेम के सूने मन्दिर में, आख़िर वो कब आयेंगे ?
हस्ती की बदमस्ती क्या, हस्ती ख़ुद इक मस्ती है,
मौत उसी दिन आयेगी, होश में जिस दिन आयेंगे।
मेरी आँखें कुछ भी नहीं, तेरे जलवे जलवे हैं,
तू जब सामने आयेगा, परदे से पड़ जायेंगे।
तारे कितने ही छिटकें, जुगनू कितने ही चमकें,
शमा की ज़र्दी[1] कहती है, रात गये वो आयेंगे।
तुम अपने दरवाज़े से, क्यों ललकारे देते हो,
ऐसी भी क्या जल्दी है, जाते जाते जायेंगे।
हुस्न की मौजें अय 'सागर' उट्ठीं जोशे-तसव्वुर[2] से,
आग़ोशे-नज़्ज़ारा[3] में, फिर कौसर[4] लहरायेंगे।

[२६]

ये वफ़ा का सिला[5] दिया तुमने, दिल से बिल्कुल भुला दिया तुमने।
जो तसव्वुर ने कुछ उठाया था, वो भी पर्दा गिरा दिया तुमने।
मुस्करा कर मेरे ख़यालों में, और दिल को जला दिया तुमने।
छेड़ कर साजे-रूहे-ग़मगीं[6] को, बैठे बैठे रुला दिया तुमने।
गुनगुनाये न साज़ को छेड़ा, और नग्मा सुना दिया तुमने।
दिल में रहने की आरज़ू थी हमें, आँख से क्यों गिरा दिया तुमनें।

---

१. पीलापन २. सोचने का जोश ३. देखने की गोद ४. स्वर्ग की नहर ५. बदला ६. दुःखी आत्मा का बाजा।

क्यों है अब मेरे हाल पर हैरत, आईना क्यों बना दिया तुमने।
ख़्वाब में भी तो अब नहीं आते, मुझे इतना भुला दिया तुमने।
इश्क़ जिसको छिपाये फिरता था, राज़ वो भी बता दिया तुमने।
सोचता हूँ समझ नहीं सकता, कि मुझे क्या बना दिया तुमने।
अपनी महफ़िल से अपने "साग़र" को,
क्या समझ कर उठा दिया तुमने।

महात्मा गान्धी

दुनिया थी गो उसकी बैरी दुश्मन था जग सारा,
आख़िर में जब देखा साधु वह जीता जग हारा।
कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी कैसा सन्त हमारा।

गौतम है या नये जन्म में बंसी का मतवारा।।
मोहन नाम सही पर 'साग़र' रूप वही है सारा।
कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी कैसा सन्त हमारा।

भारत के आकाश पै वह है एक चमकता तारा,
सचमुच ज्ञानी, सचमुच मोहन, सचमुच प्यारा-प्यारा।
कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी कसा सन्त हमारा।

सच्चाई के नूर से उसके दिल में है उजियारा,
बातिन[1] में शक्ति ही शक्ति ज़ाहिर में बेचारा।।
कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा, गान्धी कैसा सन्त हमारा।।

---

१. अन्तर।